92

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डॉ० पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क - १७५

बेराश्री संग्रह के दस्तावेज़ों की सूची

सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

1992

.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १७५

डेराश्री संग्रह के दस्तावेज़ों की सूची

सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur

1992

प्रथमावृत्ति - 280

मूल्य रु. 86.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान-सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क १७५

वेराश्री संग्रह के दस्तावेज़ों की सूची

सम्पादक

डा. पद्मधर पाठक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute Jodhpur

1992

प्रथमावृत्ति - 280 मूल्य रु. 86.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थान देशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी-राजस्थानी आदि भाषा-निबद्ध
विविध वाङ्मय-प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान-सम्पादक

डॉ. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क-१७५

डेराश्री संग्रह के दस्तावेज़ों की सूची

प्रकाशक

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

मुद्रक

पंकज प्रिन्टर्स, जोधपुर

ई. सन् १९९२

प्रधान सम्पादकीय

स्व. पं० रविशङ्कर देराश्री के निजी ग्रन्थ संग्रह के जो बहुमूल्य ग्रन्थ प्रतिष्ठान को भेंट में मिले थे उनके सूचीपत्र के क्रम में यह तीसरा खण्ड अधिकांशतः 'ऐतिहासिक दस्तावेज़ों पर' केन्द्रित है। इसी खण्ड के साथ उनकी संक्षिप्त जीवनी का समावेश कर हम उनका ऋण तो शायद नहीं चुका सके हैं पर इतना अवश्य है कि प्रतिष्ठान को यह गौरवपूर्ण अवसर मिला जिसके लिए उनके सुपुत्र श्री अक्षयजी का सहयोग सराहनीय है। हमारे अनुरोध पर उन्होंने स्वयम् जो लिखा है वह प्रदत्त ग्रन्थों की महत्ता पर भी अच्छा प्रकाश डालता है।

दस्तावेज़ों के चयन में प्रतिष्ठान के उपनिदेशक श्री ओंकारलाल मेनारिया, वरिष्ठ शोध सहायक डॉ. डी. वी. क्षीरसागर ने जो हाथ बटाया है उसके उल्लेख के साथ सहयोग हेतु मैं श्री ओमप्रकाश शर्मा वरिष्ठ शोध सहायक के प्रति भी आभार प्रदर्शित करना चाहूंगा।

जोधपुर
१० जून १९९२

पद्मधर पाठक
निदेशक

अनुक्रम

देराश्री संग्रह के दस्तावेज़ों

की

सूची

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
1	6954	महाराणा कर्णसिंह, उदयपुर	शाह प्रयाग पंचोली	1682	ग्राम आकोला (कपासन) में 200 बीघा भूमि प्रदान की गई।
2	6955	महाराणा राजसिंह, उदयपुर	शाह हरराम	1715	प्रतिदिन पेटिये में दी जाने वाली खाद्य-सामग्री का विवरण।
3	6956	,, ,,	सीकदार, पटेल, पटवारी तथा सेहणा, ग्राम आकोला	1719	भट्ट हरिराम को महाराणा कर्णसिंह द्वारा प्रदत्त ४ हल धरती बाबत आदेश।
4	6957	,, ,,	पटेल, आकोला	1731	भट्ट हरराम की भूमि से सम्बद्ध विवाद के सम्बन्ध में।
5	6958	राजा भीमसिंह, मऊ	पुरोहित जयदेव, कुकड़ेश्वर	1738	रानी परमार के पंचमासे के खर्चे के सम्बन्ध में।
6	6959	राजा भीमसिंह, नोलाई	पुरोहित जयदेव, अमरगढ़	1738	उपस्थित होने का आदेश।
7	6960	महाराणा जयसिंह, उदयपुर	पटेल, ग्राम आकोला	1741	ग्राम आकोला में प्रदत्त भूमि बाबत आदेश।
8	6961	महाराजा भीमसिंह	जयसिंह, शाहदेला, मऊ	1741	पुरोहित जयदेव के पट्टे के गाँवों के सम्बन्ध में।

क्र सं	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
9	6962	महाराजा भीमसिंह	पुरोहित जयदेव	1742	ग्राम कुंवार को रेख 1600 रुपये तथा आय 800 सहित स्वीकृति।
10	6963	"	धायभाई पूरण पंचोली	1745	पुरोहित जयदेव के ग्राम कुंवार की लागत-विलागत की माफी के सम्बन्ध में।
11	6964	महाराजा भीमसिंह, बनेड़ा	बाबा मोखमसिंह, धायभाई पूरण पंचोली, भागचन्द, मांडलगढ़	1747	व्यास आनन्द को कथा पाठ की सेवा के उपलक्ष्य में परगना बनेड़ा तथा गांवों में प्राप्त सदाबंद की स्वीकृति।
12	6965	दीवान रामचन्द्र	कोठारी रामसिंह, शाह चन्द्रभान, मानपुरा	1750	मौजा मानपुरा, परगना मांडलगढ़ में धरती माफ कर देने बाबत।
13	6966	महाराजा फतेहसिंह, मांडलगढ़	कामदार, मांडलगढ़	1750	पुरोहित जयदेव को 2 बीघा जमीन माफ कर देने बाबत।
14	6967	महाराजा सूरजमल	पुरोहित दीपचंद	1751	ग्राम सीवाणा परगना मांडलगढ़ में 100 बीघा भूमि की स्वीकृति।
15	6968	"	जोशी रामकिशन	1751	कस्बा बनेड़ा में 100 बीघा भूमि की स्वीकृति।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहाक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
16	6969	महाराजा सूरजमल	बाबा प्रेमसिंह, दीवान रामचन्द्र, बनेड़ा	1751	पुरोहित जयदेव को बाग-निर्माण हेतु धरती की स्वीकृति।
17	6970	महाराणा जयसिंह, उदयपुर	व्यास भाऊ, मना, समस्त बोहरा, ग्राम राहोली	1754	ग्राम राहोली की गलत हांस, (आधे गांव की) बाबत निर्देश।
18	6971	महाराजा सूरजमल	धऊवा पृथ्वीराज, शाह रुघनाथ, बनेड़ा	1755	पुरोहित जयदेव को ग्राम ऊधावास, परगना बनेड़ा पुण्यार्थ स्वीकृत।
19	6972	" "	पुरोहित जयदेव, दीपचंद, बनेड़ा	1755	राज सेवा में उपस्थित होने तथा ग्राम ऊधावास को आबाद करने बाबत।
20	6973	" "	पुरोहित जयदेव	1755	ग्राम ऊधावास, परगना बनेड़ा जो बनारस काशी में संकल्प के साथ पुण्यार्थ दिया, उसकी स्वीकृति।
21	6974	महाराणा का आदेश	"	1755	काशी बनारस में पुण्यार्थ दिये गये ग्राम ऊधावास के सम्बन्ध में।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहाक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि सं./सन्	संक्षिप्त-विवरण
22	6975	महाराजा सूरजमल	धायभाई रूपसिह, चतुर्भुज पंचोली सांवलदास बनेड़ा	1756	तिवारी मना को कस्बा बनेड़ा में 25 बोघा भूमि पुण्यार्थ स्वीकृत ।
23	6976	महाराजा सुरतानसिंह	पुरोहित जयदेव	1759	ग्राम कुंवार, परगना बनेड़ा पुण्यार्थ (संकल्प के. फल-स्वरूप) स्वीकृति ।
24	6977	” ”	”	1759	ग्राम कुंवार, परगना बनेड़ा की सियालु साख बाबत ग्रादेश ।
25	6978	” ”	”	1760	ग्राम कुंवार के डंड, वराड़, लागत तथा विलगत की माफी का ग्रादेश ।
26	6979	महाराणा ग्रमरसिंह	सिसोदिया सांवलदास	1764	ग्राम मुखा, परगना बनेड़ा की स्वीकृति ।
27	6980	महाराजा सुरतानसिंह	समस्त गाँवों के पटेल	1770	ग्राम कुंवार तथा बीबराणा, परगना बनेड़ा के सीमा-विवाद के सम्बन्ध में । बड़ा महुग्रा, कस्बा बनेड़ा, ग्रांबली, रीछड़ा, कुकोला, लीहसाड़ा }के पटेलों को ।

क्र सं.	पाजका संग्रहाक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि सं	संक्षिप्त-विवरण
28	6981	मोहब्बतसिंह शक्तावत	मेहता मालदास	1782	301 रुपये - उधरत का ईकरार नामा ।
29	6982	महाराणा संग्रामसिंह	भट्ट जयदेव, उदयराम	1782	ग्राम श्राकोला में 4 बीघा भूमि पुण्यार्थ स्वीकृत ।
30	6983	दीवान, बनेड़ा	पुरोहित उदयराम	1794	कस्बा बनेड़ा में पुरोहित उदय राम को विक्रय किये गये भूखण्ड का परवाना ।
31	6984	राजा श्री नाहरसिंह	जालमसिह	1805	बाबत मुकाता, ग्राम उगरपुरा ।
32	6985	दीवान	हवलदार, कामदार, पटेल व पटवारी ग्राम मघरावास	1806	पुरोहित उदयराम को 51 बीघा भूमि माफ कर देने के सम्बन्ध में ।
33	6986	महाराजा सरदारसिंह	पुरोहित उदयराम	1812	कस्बा बनेड़ा में 5 बीघा भूमि पुण्यार्थ स्वीकृत ।
34	6987	महाराजा रायसिंह	सूरतसिह, पुरोहित उदय राम, शाह नंदराम	1815	15000 रुपये उधरत का रुक्का (ईकरारनामा) ।
35	6988	,, ,,	सूरतसिह, पुरोहित उदय राम	1815	2501 रुपये उधरत का रुक्का ।

क्र.सं.	पंजिक संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
36	6989	महाराजा रायसिंह	जोशी फतेहराम, नंदराम	1816	ग्राम हाथीपुर, परगना बनेड़ा में 41 बीघा भूमि पुण्यार्थ स्वीकृत।
37	6990	शाह मोतीराम	भट्ट उदयराम	1822	ग्राम आकोला की वसूली के सम्बन्ध में।
38	6991	महाराजा रायसिंह	कुंवर हम्मीरसिंह	1825	गुड़ली के डेरे से फौज-सम्बन्धी सूचना।
39	6992	महाराज विजयसिंह, कुंवर जालमसिंह	किशोरसिंह, रायसिंह राणावत	1845	परगना रामसर के तीन ग्राम अहेड़ा, बहेड़ा तथा देवलिया का पट्टा।
40	6993	महाराजा अजीतसिंह, गुना	कप्तान बरटिण्डन	1851 ई.	आसामियों की पहचान बाबत।
41	6994	” ” ”	”	1851 ई.	बाबत फरद फेहिरिस्त, गांव जागीर।
42	6995	जन्म-पत्रिका		1855	जन्म-पत्रिका, पुत्र, कुंवर भीमसिंह।
43	6996	राजा हम्मीरसिंह	सेवाराम, जयपुर	1856	जयपुर-यात्रा के सम्बन्ध में।

क्र.सं.	पांजका संग्रहाक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त विवरण
44	6997	उदयचंद		1864	गांव पनवाड़ी की ऊनालु साख की रेख 118 रुपये । रसीद
45	6998	मूलचंद		1866	गांव पनवाड़ी की रेख रुपये 91 बाबत रसीद ।
46	6999	शाह सेरकरण		1867	गांव लीचाणा बाबत रुपये 460 की रसीद ।
47	7000	उदयचंद		1866	गांव पनवाड़ी के मापे के सम्बन्ध में ।
48	7001	मूलचंद		1868	गांव पनवाड़ी बाबत 175 रु. की रसीद ।
49	7002	,,		1868	गाँव लीचाणा, बाबत 340 रु. की रसीद ।
50	7003	शुभकरण	कामदार पटेल, गांव पनवाड़ी	1868	गांव पनवाड़ी की रेख, बराड़ के सम्बन्ध में ।
51	7004	शाह सेरकरण		1868	गांव पनवाड़ी के मापे के सम्बन्ध में ।

क्र सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
52	7005	दीवान		1869	गांव पनवाड़ी के हांसिल के सम्बन्ध में ।
53	7006	शाह सेरकरण		1872	गांव पनवाड़ी की रेख के सम्बन्ध में ।
54	7007	फतेहराज सिंघवी, जोधपुर	कल्याणमल कोठारी, मारोठ	1873	गांव लुंणवारी तथा आभावास के पट्टे बाबत ।
55	7008	मेहता लक्ष्मीचंद, जोधपुर	मूलचंद, नावां	1875	सदामंद के अनुसार कौड़ी देने बाबत ।
56	7009	इकरार नामा (नकल)		1875	नकल, फरद ईकरारनामा दौलत राव सिंधिया, कप्तान फीलडंग बाबत बन्दोबस्त, राजा अजीत-सिह, राघोगढ़ ।
57	7010	रसीद		1878	फारकती नामा, वि.सं 1878, बाबत गाँवों की फसल की कमी-बेशी की भरपाई का ।
58	7011	याददास्ती		1848	याददास्त, परगने वार आँकड़े ।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
59	7012	महाराजकुमार बुदसिंह, राजपुरा	पुरोहित सूरतराम	1879	राजधानी में पुन: लौट आने के सम्बन्ध में आदेश ।
60	7013	इश्तिहार की नकल		1882	नकल, इस्तिहार व्यापारी मेवाड़ । (उर्दू ,हिन्दी-राजस्थानी)
61	7014	रास साहब बहादुर	महाराज अजीतसिंह	1884	ग्राम आकोदिया की पटेली की फरियाद बाबत ।
62	7015	मेजर फिल्डिग साहब	,,	1884	नकल पत्र, ग्राम आकोदिया की पटेली के सम्बन्ध में ।
63	7016	सिंघवी इंदरमल, जोधपुर	पूनमचंद, नावां	1884	शिवनाथसिंह, कुचामण के संबंध में आदेश ।
64	7017	,, ,,	जुहारमल, मारोठ	1884	कुचामन के व्यापारियों बाबत आदेश ।
65	7018	दीवान, जोधपुर	रणजीतसिंह	1886	कुचामन में नमक निकालने के सम्बन्ध में आदेश ।
66	7019	,,	सबीरचंद, नावां	1886	कुचामन के व्यापारियों द्वारा नमक निकालने के सम्बन्ध में आदेश ।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
67	7020	रास साहब, बहादुर	राजा अजीतसिंह	1887	क्षेत्राधीन परगनों के मुकदमों की सुनवाई बाबत ।
68	7021	,, ,,	,,	1887	राह-रस्म के सम्बन्ध में ।
69	7022	रणछोड़दास, जोधपुर	सवीरचन्द नावां	1887	कुचामन के नमक-व्यापारियों के सम्बन्ध में आदेश ।
70	7023	कप्तान ईस्टाप	राजा अजीतसिंह	1888	बाबत राह-रस्म ।
71	7024	रास साहब बहादुर	,,	1888	बल्देवसिंह बुंदेला के प्रकरण में ।
72	7025	रणछोड़दास, जोधपुर	ठाकुर रणजीतसिंह	1888	कुचामन में नमक निकालने बाबत ।
73	7026	महाराज उदयसिंह	पुरोहित सूरतराम	1889	वैवाहिक-प्रकरण के सम्बन्ध में पत्र ।
74	7027	खर्चे का विवरण		1889	शाह भगवानदास बोल्था तलवार टीका लेकर बनेड़ा आये, उसका खर्चा ।

क्र.सं	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
75	7028	कप्तान मारीसेन	रणजीतसिंह	1895	कुचामण भोम की कौड़ियों बाबत ।
76	7029	सिंघवी इंदरमल, जोधपुर	हरिराम, मारोठ	1897	गांव ऊगरपुरा की रेख बाबत ।
77	7030	रणजीतसिंह	स्वामी रामदास	1900	गांव पनवाड़ी की 101 बीघा भूमि स्वामी रामदास को मंदिर के भोग हेतु प्रदत्त ।
78	7031	जशोदा बेटी जो	उदयराम	1900	सामान की पहुंच बाबत पत्र-व्यवहार ।
79	7032	रामगोपाल देवपुरा, उदयपुर	जुहारमल देवपुरा, राजपुरा	1900	दरबार के जन्मोत्सव का हाल ।
80	7033	पटेल, पटवारी व समस्त रैयत, मौ. राहोरी	भट्ट लालुराम जी	1902	रुपये 326 ॥=॥ चुकाने का रुक्का ।
81	7034	महता लक्ष्मीचन्द, जोधपुर	फौजमल, नावां	1904	कुचामन में नमक निकालने के सम्बन्ध में ।
82	7035	कप्तान बर्लटंन	महाराज अजीतसिंह	1906	रायगुरंदा के कत्ल के सम्बन्ध में ।

क्र.सं.	पजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि सं.	संक्षिप्त विवरण
83	7036	बक्षोराम	भंवर शेरसिह	1909	जयपुर महाराज को यात्रा का हाल ।
84	7037	मुंहता मुकनचंद, जोधपुर	कचहरी के मुत्सद्दी	1910	रणजीतसिंह को नमक की बिक्री पर प्राप्त कौड़ी के सम्बन्ध में ।
85	7038	शांह किशनलाल - राधाकिशन, राजपुरा	शाह चतरमल, शाह जुहारमल	1911	महाराजा के स्वागत-शिष्टाचार की औपचारिकता बाबत ।
86	7039	रामाकिशन, छावनी	शाह राधाकिशन, राजपुरा	1913	महाराजा को यात्रा का हाल ।
87	7040	ईश्वरसिंह, रायला	शाह जुहारमल देवपुरा, बनेड़ा	1913	दोनों ठिकानों के मध्य सम्बन्ध की परम्परा ।
88	7041	महाराज गुमानसिंह, राजपुरा	शाह जुहारमल देवपुरा, उदयपुर	1914	नीमच की छावनी कारीगर भेजने बाबत ।
89	7042	सरदारमल, राजपुरा	" "	1914	रुक्के में लिखे अनुसार कार्य कर आने हेतु पत्र ।
90	7043	सिंघवी गंभीरमल, पुर	जुहारमल देवपुरा उदयपुर	1914	पूर्व में लिखे पत्र का ब्यौरेवार उत्तर भिजवाने बाबत ।

क्र.सं	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
91	7044	रामप्रताप देवपुरा, उदयपुर	जुहारमल देवपुरा, राजपुर	1915	मुहूर्त्त की शिकार आदि का विवरण ।
92	7045	पुरोहित, सुन्दरनाथ, बागौर	जुहारमल देवपुरा, बनैड़ा	1915	गुजरात की फौज सलूम्बर में आने का प्रकरण ।
93	7046	मुकन्दचन्द मुंहता, जोधपुर	मोरचन्द, नावां	1917	नमक की कौड़ी केसरसिंह को दिये जाने का आदेश ।
94	7047	रामकिशन राठी, नीमच	जुहारमल देवपुरा, राजपुर	1917	ठिकाने के बारे में पडित रामनाथ के माध्यम से साहब को निवेदन व कार्यवाही का ब्यौरा ।
95	7048	रामप्रताप, उदयपुर	" "	1918	रुपये भिजवाने तथा सती प्रकरण के सम्बन्ध में ।
96	7049	केसरीसिंह, असनेरा	जय-जयराम मिश्र, कुचामन	1921	हाथीदान का संकल्प व हाथी भिजवाने बाबत ।
97	7050	केसरीसिंह	" "	1921	जन्मपत्री व वर्षफल बाबत ।
98	7051	केसरीसिंह, जयपुर	" "	1921	वर्षफल बाबत ।

क्र.सं	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि सं.	संक्षिप्त-विवरण
99	7052	बद्रीनारायण, जोधपुर	जय-जयराम मिश्र,कुचामन	1922	अन्नकूट की प्रसादी व मंत्र स्मरण बाबत ।
100	7053	महेकमा दिवानी	ग्रामील, परगना-लोवाली	1922	तहसील में कम आने के सम्बन्ध में ।
101	7054	नवाब मोहम्मद अब्दुल्ला खां, जोधपुर	पठान नजीब खां	1924	कुचामण के हाकिमों द्वारा की गई बेवाजिब तलबों के सम्बन्ध में ।
102	7055	केसरीसिंह, जोधपुर	जय-जयराम मिश्र, कुंचामण	1928	आटे में राम-नाम की परचियाँ मिलाकर, गोलियाँ मछलियों को खिलाने के सम्बन्ध में ।
103	7056	,,	,,	1928	मंत्रजाप, हवन, तरपण व पूजन के सम्बन्ध में ।
104	7057	,,	,,	1928	मिश्र रामनाथ के सम्बन्ध में ।
105	7058	,,	,,	1928	आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को खिलाने के कार्य हेतु ब्राह्मण की नियुक्ति ।

क्र स.	संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि सं.	संक्षिप्त-विवरण
106	7059	केसरीसिंह, जोधपुर	जय-जयराम मिश्र, कुचामण	1929	पत्र का उत्तर भिजवाने बाबत ।
107	7060	गोस्वामी गिरंधर	ठाकुर केसरीसिंह(परिवार)	1930	प्रसाद स्वीकार करने तथा सेवा-सम्बन्धि कार्य सम्पन्न कराने बाबत ।
108	7061	केसरीसिंह, जोधपुर	जय-जयराम मिश्र, कुचामण	1930	वर्षफल बाबत एवं कार्य पर नियुक्त ब्राह्मणों पर नियंत्रण रखने के सम्बन्ध में ।
109	7062	मेहता विजयमल, जोधपुर	ठाकुर केसरीसिंह	1931	कुचामण में माल आने व जाने पर लगने वाली लागत व दाण सम्बन्धि नियम बाबत ।
110	7063	मेहता हरजीवनदास, जोधपुर	,,	1932	सायर सम्बन्धी नये कानून के सम्बन्ध में ।
111	7064	मेहता विजयमल, जोधपुर	सायर के मुत्सद्दी, मारोठ	1948	कुचामण के वंशवान तथा व्यापारियों को माफ किये दाण के सम्बन्ध मे आदेश ।
112	7065	सनद		1876	204 गांवो की जो मरहठों द्वारा महाराज अजीतसिंह को दी गई ।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
113	7066	जन्म कुण्डली		18वीं सदी	रघुवंशी महाराज रामचन्द्र की जन्म कुण्डलो
114	7067	याददास्त		19वीं सदी	महाराणा राजसिंह, महाराजा भीमसिंह तथा सूरजमल की रानियों का विवरण ।
115	7068	जन्म कुण्डलियाँ		18वीं सदी	सर्वश्री महाराजा दुर्जनसाल (कोटा), उम्मेदसिंह (बूंदी), ईश्वरसिंह (जयपुर), जालिमसिंह (शाहपुरा) व्यक्तियों आदि को जन्म-कुण्डलयाँ ।
116	7069	विगत		1821	गांवों की जमा. आय, छूट तथा बाकी की विगत ।
117	7070	सनद की नकल		19वीं सदी	नकल. सनद. 204 गांवों की जो मरहठों द्वारा महाराजा अजीत सिंह को दी गई ।
118	7071	पत्रों का सार (नकल)		19वीं सदी	धोकलसिंह एवं महाराज दौलत-राव से सम्बद्ध पत्र-2 (पत्र की दो समान प्रतियाँ) ।

क्र सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
119	7072	रेजिडेन्ट ग्वालियर	राजा बहादुरसिंह, राघोगढ़	1-6-07	ढाडोनियां (Dhadonia) गांव के सीमान्त विवाद के संबंध में पत्र (विवाद के अंग्रेजी भाषा में निर्णय की प्रति भी है)।
120	7073	महाराज गुमानसिंह, राजपुर	शाह जुहारमल देवपुरा, उदयपुर	19वीं सदी	राजपुर ठिकाने की सामान्य गतिविधि, कार्य आदि के समाचार।
121	7074	इडरेची जी, बनेड़ा	राजा सरदारसिंह, लस्कर	18वीं सदी	राजमाता ईडरेची द्वारा अपने पुत्र राजा सरदारसिंह को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने, बनेड़ा में रतन जी की उपस्थिति की सूचना तथा कुशल समाचार शीघ्र भिजवाने हेतु पत्र।
122	7075	महाराजा भीमसिंह महाराजा सुरताणसिंह	पुरोहित जयदेव "		नकल-रुक्के, बाबत पुण्यार्थ भूमि, महाराजा भीमसिंह, सुरताण सिंह, सरदार सिंह द्वारा पुरोहित जयदेव गोपीनाथा को।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
123	7076	मोड़ीराम खमेसरा, जयपुर	बाप जी बाग जी, राजपुर	1851	कृपा-दृष्टि रखने व समाचार भिजवाने बाबत पत्र ।
124	7077	रामप्रताप, उदयपुर	जुहारमल, राधाकिशन देवपुरा राजपुर	19वीं सदी	पंच सरदार तथा पत्र-लेखन-मर्यादा के सम्बन्ध में ।
125	7078	याददास्त		18वीं सदी	राजा भीमसिंह के परिवार की याद ।
126	7079	केसरीसिंह, रीड़ का डेरा	जय-जयराम मिश्र, कुचामण	19वीं सदी	जन्म पत्रिका की पहुंच की सूचना, औषधि तैयार कर भिजवाने तथा गणपति के जाप हेतु ब्राह्मण नियुक्त करने बाबत पत्र ।
127	7080	विगत		19वीं सदी	कसबा बनेड़ा सहित, ग्रामवार आँकड़ों का विवरण ।
128	7081	बाई सुन्दर कुंवर	महाराज गोविन्ददेव, स्योपुर	19वीं सदी	जयरामदास का सलेमाबाद प्रस्थान तथा महाराज गोविन्द-देव को यहाँ पधारने के निमंत्रण बाबत पत्र ।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहाक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि सं.	संक्षिप्त-विवरण
129	7082	फौजदार, कामदार; राजपुरा	जुहारमल देवपुरा, उदयपुर	19वीं सदी	परगना (बनेड़ा) में हुई चोरियों के सम्बन्ध में पत्र ।
130	7083	याददास्त		19वीं सदी	जोधपुर बनेड़ा राजपरिवार के मध्य वैवाहिक - सम्बन्ध का विवरण ।
131	7084	"		18वीं सदी	श्री दरबार (मेवाड़) की बैठक का नामा ।
132	7085	विगत		19वीं सदी	महाराज सुरतान सिंह, सरदार सिंह, रायसिह, हमेरसिह को रानियों का विवरण ।
133	7086	सेवाराम, कुचामण	हरिनारायण, जोधपुर	1902	जय जयराम के स्वास्थ्य में सुधार के समाचार ।
134	7087	चेनसुख पोतदार; परगना, जयपुर	जालिमपुरी गुंसाई	1897	बाबत खालसा की जमीन के ईजारे के ।
135	7088	श्रीजी के हुक्म से	मेहता माणकचन्द, केसरीचंद	1894	नरसिह द्वारा लिये गये उधार रुपये 2311) की ब्याज सहित श्रदायगी करने का रुक्का ।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
136	7089	केसरीसिंह, जोधपुर	जय-जयराम मिश्र, कुचामण	1924	रामनारायण के हस्ते सुखवास भिजवाने बाबत।
137	7090	कुंवर शेरसिंह का आदेश		1921	ब्राह्मणों के लड़कों को मिश्र जी के आदेश के अनुसार माला जपने का हुक्म।
138	7091	गोस्वामिनी लक्ष्मी बहुजी	दरोगा श्रीमालीराम जी, सवाई जयपुर	1891	अन्नकूट का प्रसाद व वस्त्र भिजवाने की सूचना तथा भेंट स्वरूप गांवों का उलझा हुआ प्रकरण सुलझाने बाबत पत्र।
139	7092	,, ,,	बडारण केसर	1892	अन्नकूट का प्रसाद व वस्त्र भिजवाने की सूचना तथा भेंट-स्वरूप प्रदत्त गांवों के प्रकरण को सुलझाने बाबत पत्र।
140	7093	बाईजी राज	भट्ट जयदेव उदयराम, आकोला	1762	आशीर्वचन प्राप्त हुए तथा पावड़ी (खड़ाऊ) जोड़ी 1 प्राप्ति की सूचना।

क्र.सं.	पंजिका संग्रहांक	प्रेषक	प्रापक	लिपिकाल वि.सं.	संक्षिप्त-विवरण
141	7094	गावों की विगत		19वीं सदी	ग्रामवार फहरिस्त, परगना लीवाली ।
142	7095	महाराजा बिसनसिंह	देवदत्त, भोपति, मदन, महेश तथा नारायण	19वीं सदी	मौ. भ्राकाहेड़ा, परगना भ्रांवेर में 797 बीघा भूमि की स्वीकृति ।

देराश्री संग्रह के दस्तावेज़ों की सूची (उर्दू-फारसी)

क्र.सं.	संग्रहाङ्क	विवरण
1.	7126(1)	कप्तान एन्टली और राजा राघोगढ़ खत-कितावत; 30.5 × 20.5 से. ई. 1850
2.	7126(2)	नकल फरमान बादस्या का वास्ते राजा भीमसिंह; 41 × 37.5 से.
3.	7126(3)	देखें—संलग्न फरमान का चित्र मय शाही मोहर व अंग्रेजी अनुवाद; 53 × 36.5 से.
4.	7126 4)	परवाना रेजीडेन्ट शेक्सपीयर बहादुर का वास्ते मुन्शी जमीयत राय —जीर्ण, मुद्रांकित; 39.5 × 21 5 से.
5.	7126(5)	हुकम नामा कप्तान मार्टिन साहब का; 35 × 23.5 से,
6.	7126(6)	ख़त कप्तान वाल्डेन साहव बहादुर, बावत मुलाकात; 33 × 20 से.
7.	7126(7)	ख़त मेजर फील्डिंग साहव बहादुर का, बाबत मुलाकात; 28 × 20.5 से.
8.	7126(8)	परवाना रोबर्टसन साहब गुना बाबत हासिल वारिस राजा साहब को खुशीपर; 27.5 × 20 से : ई. 1893
9.	7126(9)	ख़त ब्रैडफोर्ड साहब वास्ते हिन्दूपत जयसिंह; 34 × 21 से : ई. 1868

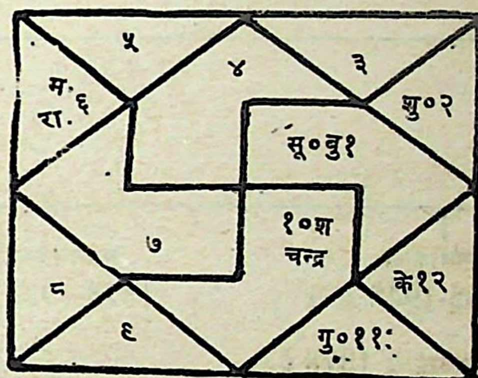
क.स.	संग्रहाङ्क	विवरण
10	7126(10)	ख़त कप्तान वाल्डेन साहब बहादुर का बाबत इलाके का बंदोबस्त; 32 × 22 से. : ई. 1858
11.	7126(11)	ख़त डंकन मैलकम साहब बहादुर का बाबत मुलाकात रसूम महाराज ग्वालियर; 34 × 20.5 से.
12.	7126(12)	करेकटिंग मराठा सनद; 25.5 × 16.5 से.
13.	7126(13)	रसीद पहुँचने सनद महकमा पोलिटिकल असिस्टेंटी गुना; 31.5 × 23.5 से. : 1885 ई.
14.	7126(14)	ख़त रेजोडेन्ट स्टूअर्ट साहब बहादुर का; 33 × 22
15.	7126(15)	परवाना कप्तान मास्टर साहब बहादुर पोलिटिकल एजेन्ट गुना का बाबत रस्मुल मुलाकात; 27.5 × 19 : 1884 ई.
16.	7126(16)	लेडली साहब बहादुर व वाल्डीन साहब मुतअल्लिक; 26 5 × 18 से. ई. 1887
17.	7126(17)	नक़ल रुक्का बाबत वसूली; 18.5 × 9.5 से.
18.	7126(!8)	हुकम कप्तान वीरासेपाड साहब बाबत रियासत राघोगढ़; 37.5 × 24 से. : ई. 1869

क्र.सं.	संग्रहाङ्क	विवरण
19.	7126(19)	ख़त कप्तान रौबर्टसन पोलिटिकल एजेन्ट गुना बाबत राजा जयसिंहजी वली रियासत राघोगढ़; 26.5 × 20.5 से.
20.	7126(20)	राघोगढ़ बाबत हुकम नामा; 26.5 × 20.5 से.
21.	7126(21)	पोलिटिकल एजेन्ट गुना का ख़त; 35 × 22 से. 1889 ई. अति जीर्ण
22.	7126(22)	रुक्का पोलिटिकल एजेन्ट सी.आई. 1; 28.5 × 17.5 से.
23.	7126(23)	राजा भीमसिंह मुतअल्लिक पत्र; 33 × 21 से.
24.	7126(24)	अस्पष्ट
25,	7126(25)	ख़त मेजर फीलडिंग साहब बहादुर बाबत ठा. थोकलसिंह; 33 × 21 से.
26.	7126(26)	ख़त मेजर फीलडिंग साहब बहादुर का बाबत ठा. थोकलसिंह घोड़ी-बन्दूक; 31 × 22 से,
27.	7126(27)	ख़त रेसीडेन्ट साहब बहादुर का दसख़त शेक्सपीयर साहब की; 34 × 22 से.
28.	7126(28)	ख़त रेसीडेन्ट शेक्सपीयर साहब बहादुर बाबत मुलाकात के; 32 × 21 से.

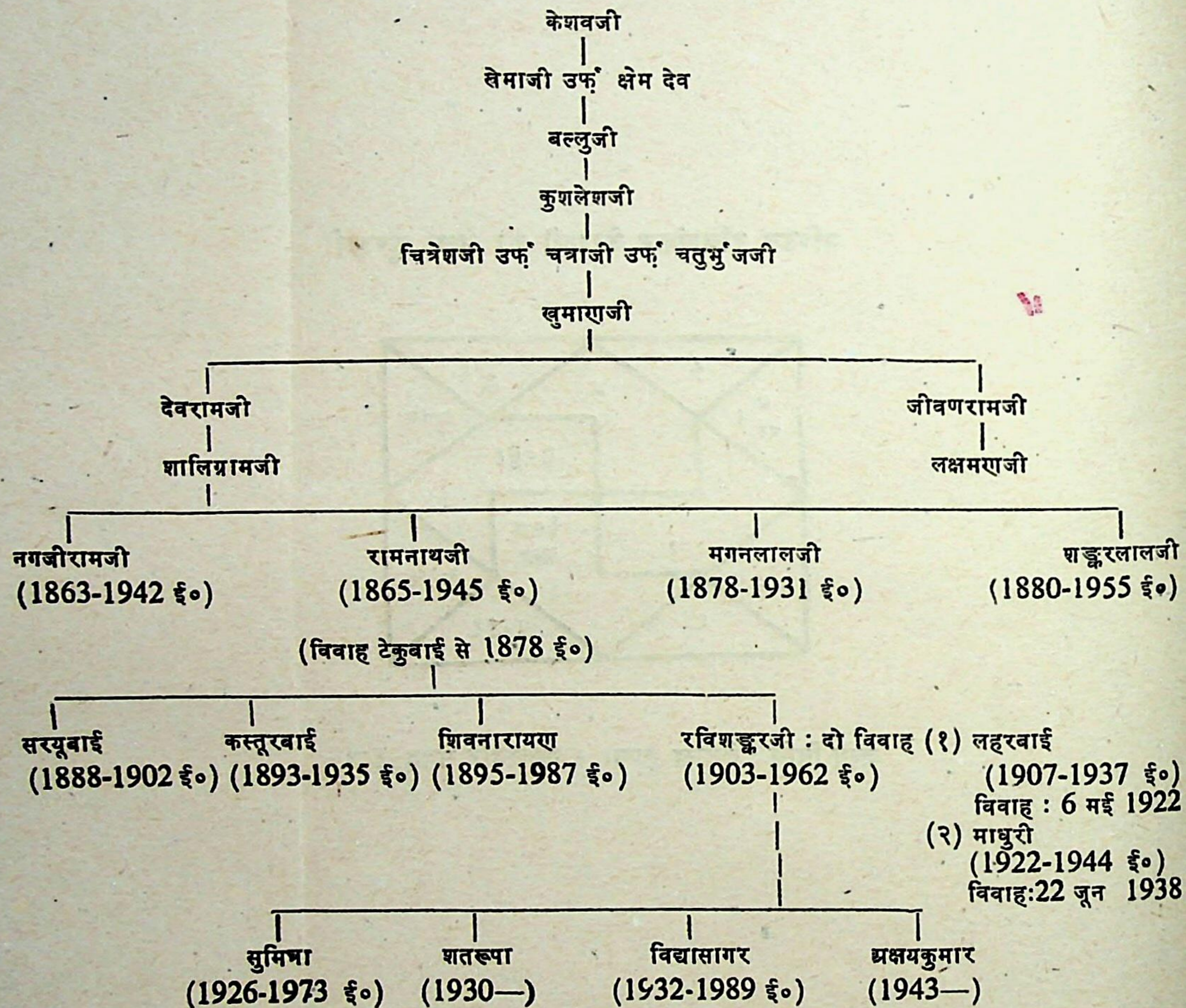
क्र.सं.	संग्रहाङ्क	विवरण
29.	7126(29)	ख़त कप्तान डीवर साहब बहादुर गुना का बाबत दरबार राहो-रस्म के; 29 × 22 से.
30.	7126(30)	स्पीयर'S साहब रेसीडेन्ट का ख़त–बार्डर में लिखा ग्वालियर के खिलाफ; 31 × 16 से.
31.	7126(31)	बाबत ग्राबादी परगना; 27 × 16 से.
32.	7126(32)	नक़ल फरमान; 33 × 17 से.
33.	7126(33)	ख़त मेजर फीलडिंग साहब बहादुर बाबत सवार ग्रौर खजाना; 29 × 23 से.
34.	7126(34)	ख़त शेक्सपियर बाबत फौज मुकाम ग्वालियर; 35 × 16 से.
35.	7126(35)	ख़त रेजीडेन्ट शेक्सपियर साहब बहादुर का मुकदमे, मुलाकात वगैरा बाबत; 37 × 27 से.
36.	7126(36)	ख़त रेजीडेन्ट शेक्सपियर साहब; 49 × 23 से. : 1859 ई.
37.	7126(37)	ख़त फीलडिंग साहब; 23 × 17 से.

क्र.सं.	संग्रहाङ्क	विवरण
38.	7126(38)	नक़ल कैफियत दोनों दीवानों की तरफ से पंच सरदारों के नाम 1848 आदि; 33 × 23 से.
39.	7126(39)	परवाना पोलिटीकल एजेन्ट गुना मनी साहब बाबत लावारिस ऊँट; 30 × 24 से.
40.	7126(40)	ख़त बाबत राघोगढ़; 81 × 16 से.
41.	7126(41)	ख़त मेजर फीलडिंग साहब बाबत मोतबिर को भेजने के; 36 × 20 से.
42.	7126(42)	ख़त वाल्डेन साहब बहादुर को बाबत पटेली खेड़ी; 32 × 23 से.
43.	7126(43)	ख़त छावनी ग्वालियर से रेजीडेन्ट शेक्सपीयर साहब बहादुर का बाबत वज़ावाई रसत रसूम के; 63 × 24 से.
44.	7126(44)	कागजात तहसीलदार खण्डार; 32 × 26 : संवत् 1948
45.	7126(45)	ख़लीता शेक्सपीयर साहब बहादुर का बाबत मुलाकात; 31 × 23 से

पण्डित रविशंकर देराश्री की जन्म कुण्डली



जन्म तिथि : वैशाख कृष्णा ९ मंगलवार संवत् १९६०


देराश्री परिवार : वंश वृक्ष
केशवजी
खेमाजी उर्फ़ क्षेम देव
बल्लुजी
कुशलेशजी
चित्रेशजी उर्फ़ चत्राजी उर्फ़ चतुर्भुजजी
खुमाणजी
देवरामजी
जीवणरामजी
शालिग्रामजी
लक्षमणजी
नगजीरामजी (1863-1942 ई०)
रामनाथजी (1865-1945 ई०)
मगनलालजी (1878-1931 ई०)
शङ्करलालजी (1880-1955 ई०)
(विवाह टेकुबाई से 1878 ई०)
सरयूबाई (1888-1902 ई०)
कस्तूरबाई (1893-1935 ई०)
शिवनारायण (1895-1987 ई०)
रविशङ्करजी : दो विवाह (1903-1962 ई०)
(१) लहरबाई (1907-1937 ई०) विवाह : 6 मई 1922
(२) माधुरी (1922-1944 ई०) विवाह:22 जून 1938
सुमित्रा (1926-1973 ई०)
शतरूपा (1930—)
विद्यासागर (1932-1989 ई०)
अक्षयकुमार (1943—)

पण्डित रविशंकर देराश्री

डा. पद्मधर पाठक

[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

पण्डित रविशंकरजी का जन्म 21-4-1903 (वैशाख कृष्णा नवमी मंगलवार वि.सं. 1960) को विद्वान, सच्चरित्र, अनुशासनप्रिय व स्वाभिमानी सिखवाल ब्राह्मण रामनाथजी व सुशील, सरल चित्त तथा मधुर स्वभाव की श्रीमती टेकु बाई के यहां हुआ था।

पण्डित रामनाथजी का जन्म पण्डित शालिगरामजी के यहां 9 नवम्बर, 1865 ई. (मृगशीर्ष कृष्णा सप्तमी गुरुवार वि.सं. 1922) को हुआ था। पण्डित रामनाथजी ने अपने अग्रज पण्डित नगजीरामजी के साथ बनेड़ा व काशी में विद्याध्ययन किया। विद्याध्ययन के दौरान आपने ज्योतिष में असाधारण ज्ञान प्राप्त किया परन्तु विद्याध्ययन के तुरन्त बाद किसी राजा की कुण्डली बनाते समय उनसे विवाद हो जाने से, अपने स्वाभिमानी स्वभाव के कारण जीवनभर उन्होंने अपने परिवार के सदस्यों को छोड़कर और किसी व्यक्ति की कुण्डली का विवेचन नहीं किया। आपके अग्रज बनेड़ा के राजगुरु थे तथा आपके परिवार का तथा मेवाड़ के राजपरिवार से शताब्दियों से घनिष्ठ सम्बन्ध था, परन्तु आपने स्वाभिमानवश किसी का आश्रित होना स्वीकार नहीं किया तथा अपना स्वतन्त्र व्यवसाय किया जिसमें इतना धन अर्जित किया कि अपने दोनों पुत्रों को उस समय उच्च शिक्षा (विश्वविद्यालय स्तर की) राजपूताना से बाहर दिलवाई। पण्डित रामनाथजी कर्मकाण्ड में अधिक विश्वास नहीं रखते थे। वे तीर्थयात्रा के प्रति भी अधिक उत्साही नहीं थे। जैसाकि आपके पुत्र रविशंकरजी ने आपके देहान्त के समय अपनी डायरी में लिखा है कि आप एक कर्मयोगी थे। आयुर्वेद का भी आपको अच्छा ज्ञान था। आपने मंजन का एक ऐसा नुस्खा बना रखा था जिससे आपके दांत 80 वर्ष की आयु तक पूर्ण सुरक्षित रहे। आप प्रदोष का व्रत, 'कल्याण' तथा वेदों का नियमित रूप से अध्ययन करते थे। बनारस तथा इलाहाबाद से समाचार-पत्र मंगवाकर नियमित रूप से पढ़ते थे। नर्मदा तट के स्वामी गिरिजानन्दजी से आपका विशेष स्नेह था। पण्डित रामनाथजी का देहान्त 26-1-1945 (माघ

शुक्ला 13 शुक्रवार वि.सं. 2009) को हुआ। पण्डित रामनाथजी अति गौर वर्ण, हृष्ट-पुष्ट तथा सामान्य से जरा कम कद के थे। वे अधिकतर लाल मेवाड़ी पगड़ी बांधते थे। रविशंकरजी की माता टेकुबाई बहुत ही सरल व मधुर स्वभाव की थीं। टेकुबाई का देहान्त 30 जनवरी, 1949 (माघ शुक्ला 3 गुरुवार, 1997) को दिन के 11.45 बजे हुआ। श्रीमती टेकुबाई लम्बी, सुन्दर, दीर्घ नेत्रों वाली तथा हल्के श्याम वर्ण की थीं। पण्डित रामनाथजी के चार संतानें थीं। पुत्रियाँ सरयूजी व कस्तूरजी तथा पुत्र शिवनारायणजी व रविशंकरजी थे।

रविशंकरजी के जीवन के बारे में विस्तार से लिखने से पहले सिखवालों के इतिहास 'शिक्षावल जाति प्रबोध', 'बनेड़ा के इतिहास', 'वीरवंश-वर्णनम्' तथा भाटों की पोथियों के आधार पर रविशंकरजी के परिवार की उत्पत्ति व वंशजों का इतिहास देना प्रासंगिक ही होगा।

जैसा उल्लेख किया जा चुका है रविशंकरजी सिखवाल ब्राह्मण थे। सिखवाल राजस्थान के छन्याती ब्राह्मणों में हैं। सिखवालों की उत्पत्ति ब्रह्मा के पुत्र मरीचि के वंशज ऋष्य शृंग से मानी जाती है। ऋष्य शृंग महर्षि विभाण्डक के पुत्र थे। ऋष्य शृंग को राजा रोमपाद अपने यहां वर्षा कराने के लिए अपने राज्य में ले गये। तत्पश्चात् अपनी दत्तक कन्या शान्ता (जो वास्तव में राजा दशरथ की कन्या थी) से ऋष्य शृंग का विवाह कर दिया। कालान्तर में ऋष्य शृंग के वंश में मीमांसा-दर्शन के प्रवक्ता जैमिनी का जन्म हुआ। जैमिनी के पौत्र कौण्डिन्य (अंगिरा) के पुत्र वसुदेव से रविशंकरजी अपने वंश की उत्पत्ति मानते हैं। इसी वंश में कालान्तर में कई विद्वान व वीर उत्पन्न हुये। रविशंकर जी के पूर्वज महाराणा कुम्भा (1433-1468 ई.) से लेकर महाराणा राजसिंह प्रथम (1652-1680 ई.) तक मेवाड़ के राजपरिवार से जुड़े रहे तथा उनके श्रद्धाभाजन रहे।

महाराणा राजसिंह प्रथम के ज्येष्ठ पुत्र भीमसिंह के द्वारा मेवाड़ का सिंहासन छोड़ने पर रविशंकरजी के पूर्वज केशवजी अपने पुत्र खेमाजी, पौत्र बलुजी व प्रपौत्र कुशलेशजी के साथ मेवाड़ राज्य की प्रतिष्ठा छोड़कर बनेड़ा आए तथा भीम के साथ एक अनिश्चित भविष्य को अंगीकार किया। संभवतया इसी कारण 'राजगुरु', 'देवर्षि' 'पण्डित' की पदवियों से विभूषित हुये तथा उन्हें बहुत सी भूमि (मुआफी या जागीर) भेंट की गई। कुशलेशजी ने राजा भीम के पुत्र सूर्यमल के साथ औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् हिंदुस्तान के सिंहासन के उत्तराधिकार के लिए हुए युद्ध में बहादुरशाह की ओर से कामबक्ष के विरुद्ध भाग लिया। इस निर्णायक युद्ध में कामबक्ष भीषण रूप से घायल होकर मृत्यु

को प्राप्त हुआ । 1769 ई. में मेवाड़ के महाराणा अरिसिंह तृतीय तथा प्रतापी मराठा सरदार महादजी सिंधिया के मध्य उज्जैन के पास क्षिप्रा नदी के किनारे हुये भीषण युद्ध में रविशंकरजी के यशस्वी पूर्वज चित्रेशजी उपनाम चत्राजी व चतुर्भुज तथा उनके भाई नानजी ने सलूम्बर, शाहपुरा व बनेड़ा के राजा रामसिंह के साथ भाग लिया तथा रणक्षेत्र से राजा रामसिंह बनेड़ा के शव को डेरे तक लाए । इसके लिए देराश्री की उपाधि दी गई तथा भूमि (मुआफी या जागीर) भेंट की गई । इसके पहले रविशंकरजी का अवटंक निम्बार्च जोशी था । रविशंकरजी का गोत्र कौण्डिन्य, प्रवर शमीक, शृंगी, शाङ्गर्य, शाखा माध्यन्दिनी, वेद-शुक्लयजुर्वेद, सूत्र-त्रिसूत्र तथा कुलाम्बा संचायी है । क्षिप्रा के युद्ध के बाद रविशंकरजी का परिवार देराश्री के नाम से ही जाना जाता है । रविशंकरजी के परिवार के इष्टदेव सिद्धेश्वर महादेव हैं ।

चित्रेशजी के खुमाणजी, खुमाणजी के देवरामजी, देवरामजी के शालिगरामजी. शालिगरामजी के रामनाथजी व रामनाथजी के रविशंकरजी पैदा हुए ।

पं. रविशंकरजी के ज्येष्ठ पिता (ताऊ) पं. नगजीरामजी (शास्त्री) अपने समय के संस्कृत तथा इतिहास के प्रकाण्ड विद्वान थे । उन्होंने निम्नलिखित पुस्तकों की रचना की : 'वीरवंश वर्णनम्', 'अक्षय नीति सुधाकर', 'शिक्षावल जाति प्रबोध', 'भूप भूषण', भूभ्रान्ति निवारण', 'रत्न प्रकाश', 'तोल बोधिनी' आदि । 'वीरवंश वर्णनम्' बनेड़ा का इतिहास है । इसमें राजाओं के राज्य-काल के अलावा बनेड़ा का भौगोलिक परिचय, इतिहास लिखने का प्रयोजन, राजा और प्रजा को उपदेश, ग्रन्थकार का परिचय आदि भी उपलब्ध है । बनेड़ा नगर में निर्मित भवन, मन्दिर व बावड़ियों के निर्माण आदि का भी वर्णन है । 'भूप भूषण' उन राजकुमारों पर व्यंग्य रचना है जो पश्चिम की संस्कृति का अंधानुकरण कर रहे थे । 'रत्न प्रकाश' रत्नों पर एक सटीक पुस्तक है जिसकी लम्बी व विद्वतापूर्ण भूमिका प्रसिद्ध विद्वान व ज्योतिषी पद्मभूषण पं. सूर्यनारायण व्यास ने लिखी थी ।

स्वामी दयानन्द सरस्वती की बनेड़ा यात्रा के दौरान पण्डित नगजीरामजी को स्वामीजी के निरन्तर सान्निध्य में रहने का अवसर मिला तथा स्वामीजी के कृपापात्र बन गये । स्वामीजी के बनेड़ा प्रवास का नगजीरामजी ने एक बहुत ही रोचक संस्मरण 'महर्षि का बनेड़ाप्रवास' लिखा जो कि दुबारा आर्यसमाज की पत्रिका 'परोपकारी' में मई 1986 में प्रकाशित हुआ है । नगजीरामजी नियमित रूप से डायरी लिखते थे । डायरी के पृष्ठ बनेड़ा के

इतिहास के बीसवीं शताब्दी के प्रथम चार दशकों पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं। डायरियों में पण्डितजी की बम्बई यात्रा का रोचक वर्णन है जिससे उस समय की बम्बई नगरी से परिचय होता है, ट्रेन यात्रा का भी रोचक वर्णन है। डायरियों से पता चलता है कि पंडितजी का स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, मदन मोहन मालवीय व पण्डित जवाहरलाल नेहरू से पत्र व्यवहार था, तथा उन्हें अपनी पुस्तकें उपहार में भेजी थीं। जब 'अक्षय नीति सुधाकर' को प्रकाशित करके नगजीरामजी बम्बई से लौटे तो तत्कालीन बनेड़ा के युवराज अक्षयसिंहजी व राजकुमार रामसिंहजी उनको हाथी पर बिठाकर, छत्र, चंवर, मोरछल, सूरजमुखी, किरानिया आदि राजचिह्नों से सुसज्जित कर एक शोभायात्रा में स्वयं उनके आगे अश्वारूढ होकर उनको मकान से दुर्ग तक ले गये। नगजीरामजी भी बहुत स्वाभिमानी थे तथा राजाओं को झिड़कने से नहीं चूकते थे। उनका बनेड़ा, मेजा, शाहपुरा, देवगढ़, करौली, रतलाम, उणियारा व राघोगढ़ के राजाओं से अच्छा सम्पर्क था।

पण्डित रविशंकरजी की शिक्षा अजमेर, आगरा, इलाहाबाद व इंग्लैण्ड में हुई थी। प्रारम्भ से ही वे बड़े मेधावी थे। हाकी व फुटबाल के तो वे श्रेष्ठ खिलाड़ी थे। ऊँची व लम्बी कूद में भी उन्होंने अपनी प्रतिभा दिखाई थी। वक्ता के रूप में उन्होंने कई प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। विज्ञान में स्नातक की उपाधि उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की थी तथा एल. एल. बी. आगरा से किया। विद्यार्थी काल से ही वह राजपरिवार के गुरु बन गये तथा बनेड़ा राज की उत्तरप्रदेश में स्थित अछनेरा आदि जमींदारों के गांवों का प्रशासन संभालने में राजाधिराज अमरसिंहजी की सहायता करने लगे। विद्यार्थी जीवन से ही उन्होंने लोगों की सहायता व सेवा करना शुरू कर दिया। राजकीय महाविद्यालय, अजमेर के प्राध्यापकों से उनके अत्यन्त प्रगाढ़ सम्बन्ध थे। प्रो. लालजी श्रीवास्तव के वे परम प्रिय छात्र थे। प्रो. लालजी की पत्नी को उन्होंने बनेड़ा की राजकुमारियों का अध्यापक बनवा दिया था। प्रो. लालजी की पत्नी एक आदर्श महिला थीं। राजकुमारियों की शिक्षा का भार उन्होंने इसलिए लिया ताकि वे एक आदर्श स्कूल की स्थापना कर सकें। यही स्कूल बाद में सावित्री कालेज, अजमेर बना।

पण्डितजी के दो विवाह हुए थे। प्रथम विवाह भीलवाड़ा के श्री रामलालजी पाण्ड्या की सुपुत्री अ. सौ. लहरबाई से 7 मई 1922 को सम्पन्न हुआ था। श्रीमती लहरबाई बहुत मिलनसार थीं तथा बनेड़ा की महिलाओं में बहुत लोकप्रिय थीं। श्रीमती लहरबाई से पण्डितजी के दो पुत्रियां श्रीमती सुमित्रा देवी व श्रीमती शतरूपा देवी तथा एक पुत्र श्री विद्यासागर का जन्म

हुआ । दुर्भाग्यवश श्रीमती लहरबाई का देहान्त 24 मार्च 1937 ई. को हो गया । श्रीमती लहरबाई की स्मृति में पंडितजी ने बनेड़ा में एक श्मशान-शाला बनवाई जहां वर्षा ऋतु में एक ढके हुए भवन में दाह क्रिया सम्पन्न करने की सुविधा रहने लगी । जनसाधारण के उपयोग के लिए बनाई गई इस शाला के बाहर एक शिलालेख भी अंकित है ।

पंडितजी केवल 34 वर्ष की आयु में ही विधुर हो गए थे किन्तु दूसरे विवाह के इच्छुक नहीं थे । अन्त में स्वजनों के आग्रह को स्वीकार कर उन्होंने दूसरा विवाह जावद, जिला मंदसौर (मध्य प्रदेश) के पंडित मोतीलालजी ओझा की सुपुत्री अ. सौ. माधुरी कुमारी के साथ 22 जून 1938 को किया । पंडितजी के इस विवाह में बनेड़ा राज्य के नगाड़ा, छत्र, चंवर, मोरछल, सूरजमुखी आदि बरात में सम्मिलित किए गए थे । पंडितजी के अश्वारूढ़ होने पर राज्य का छत्र ताना गया जिसके दोनों तरफ राज्य का बेनर था । विवाह का रोचक वर्णन बम्बई से प्रकाशित पत्र 'श्री वेङ्कटेश्वर समाचार (8 जुलाई 1938) में इस प्रकार छपा था :—

"इस शादी में श्रीमान् राजकुमार मानसिंह (बनेड़ा) वर्तमान सेशन-जज उदयपुर, कुंवर साहब भठाना, दरभंगा राज्य के एक नामाङ्कित ज्योतिषीजी, दो चार कवि एवं कई विद्वान सम्मिलित हुए थे । विवाह का जुलूस बड़ा ही शानदार रहा । विवाह ता. 22-6-38 को गोरज मुहूर्त पर हुआ । इस समय अचानक वर्षा प्रारम्भ हुई । इधर दूल्हे ने विवाह मण्डप में प्रवेश किया कि उधर इन्द्रदेव भी शङ्करजी के स्वागतार्थ आ पहुंचे किन्तु दूल्हेजी भी सत्याग्रही की भांति खुले मैदान में वेदी के निकट जुटे रहे । ....यह दृश्य देखने योग्य था कि जो दूल्हे एक दिन विलायत की सड़कों पर वायु सेवन करते थे वे ही जावद की एक गली में कीचड़ के दलदल में लथ-पथ हो रहे थे । इसमें 'हास्यरस विशारद' पं. दामोदर लालजी वकील मनासा की हास्य-रस-मय मीठी-मीठी चुटकियें रविजी को मुग्ध किए देती थी ।........ इस विवाह में गुरु भक्ति का दृश्य दर्शनीय था । श्रीमान् राजकुमार मानसिंह जी की शिक्षा श्रीमान् पं. रविशंकरजी देराश्री के नेतृत्व में हुई ।"

श्रीमती माधुरी कुमारी से पंडितजी के केवल एक पुत्र अक्षयकुमार देराश्री का जन्म 7 मई 1943 को हुआ था । नियति ने एक बार फिर पंडितजी के जीवन साथी को छीन लिया । श्रीमती माधुरी कुमारी का देहान्त 3 अक्टूबर 1944 की दोपहर 3 बजे हो गया । पंडितजी की डायरी में इसका मार्मिक वर्णन इस प्रकार मिलता है:—

3 अक्टूबर 1944 (दिल्ली) : आज अर्द्धाङ्गिनी जी का देहान्त 3 बजे हो गया।

6 अक्टूबर : अत्यन्त ही दुःख हुआ। यह तीसरी मौत थी जब जीवन में अश्रुधारा बही।

7 अक्टूबर 1944 (बनेड़ा) : बनेड़े पहुंचते ही फिर अश्रुधारा शुरू हो गई।

बैठने वाले आए थे..........भृगुसंहिता में मेरी 40 से 45 की आयु में अर्द्धाङ्गिनी जी के लिए घोर कष्ट लिखा और काल दान का प्रायश्चित। एकदम बीमार होने से कुछ नहीं हो सका। डाक्टरों की मूर्खता से ठीक चिकित्सा व निदान नहीं हुआ..........ता. 23-24 से मेरे महल में बिल्ली इधर-उधर दौड़ती थी और जाजम वगैरा बैठकर चाटती थी जो पहिले कभी नहीं होता था। दिल्ली में भी सोमवार की रात्रि को कुत्ता हड्डी कड़-कड़ कर रहा था। नींद भी नहीं आई-यह अपशकुन इसी घटना के द्योतक थे। पहिली अर्द्धाङ्गिनी जी की मृत्यु के समय बिल्ली बार-बार कमरे में आती थी।

श्रीमती माधुरी देराश्री गौर वर्ण की सुन्दर महिला थीं। उनका स्वभाव बड़ा मधुर था। वे हर काम बड़ी सुघड़ता से करती थीं। धार्मिक भी बहुत थीं। व्रत उपवास नियम से करती थीं। कसीदा काढ़ने में निपुण थीं। लखनऊ से प्रकाशित हिन्दी की लोकप्रिय पत्रिका 'माधुरी' की नियमित पाठिका थीं।

पंडित जी की दूसरी धर्मपत्नी के देहान्त के समय वे मात्र 41 वर्ष के थे। पूर्ण स्वस्थ थे किन्तु मित्रों के आग्रह के बावजूद वे तीसरा विवाह करने को राजी नहीं हुए, यद्यपि उस समय उनके पुत्र अक्षय कुमार की आयु केवल डेढ़ वर्ष की थी।

इलाहाबाद में रहते हुए उनका सम्पर्क कई राष्ट्रीय नेताओं तथा साहित्यकारों से हुआ तथा उन्होंने खादी पहनना शुरू कर दिया।

बी.एस.सी. करने के बाद उन्होंने थोड़े दिन गवर्नमेन्ट कालेज अजमेर के विज्ञान विभाग में अध्यापन का भी काम किया। 1925 में उन्होंने शार्टहैंड का भी कोर्स किया। विद्यार्थी जीवन में बनेड़ा के राजकुमारों के संरक्षक भी बन गये। 1925 से ही वे पढ़ने के साथ-साथ राजाओं के यहां महत्वपूर्ण व जिम्मेदारी के पद संभालने लगे थे।

बरमिंघम विश्वविद्यालय में उन्होंने एल.एल.एम. का अध्ययन प्रारम्भ किया था जिसे नेत्र कष्ट के कारण वे पूरा न कर सके। लिंकन न्याय संस्थान

की ओर से कानून की उच्चतम उपाधि बार एट-ला के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया था जो बैरिस्टरों का विश्व-विख्यात न्याय संस्थान था। यहां स्व. श्री वी.के. कृष्णमेनन उनके समकालीनों में थे। इंग्लैण्ड के प्रतिष्ठित वर्ग के सम्पर्क में आने का उन्हें अवसर मिला था। 'हाउस ऑफ कामन्स' के कितने ही सदस्यों से उनकी व्यक्तिगत मैत्री थी। सर लिन्डन मैक्सी एवं डा. कोलम्बस जो मलिका की सलाहकार परिषद के सदस्य बन गये थे, पंडितजी के निकटस्थ मित्र थे। इसी प्रकार इंग्लैण्ड के नामी कानूनविदों में जे.पी. ऐडी, वैलनटाइन होग्स आदि के चेम्बर में उनका प्रवेश था। उनके भारतीय मित्रों में स्व. महाराजा नगेन्द्रसिंह आई.सी.एस. भूतपूर्व अध्यक्ष, अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय, हेग; कुँवर नरेन्द्रसिंह महीदा भूतपूर्व रक्षा मंत्री भारत-सरकार, भूतपूर्व सांसद श्री हिम्मतसिंह मनासा, श्री आर.एस. रन्धावा आई.सी.एस.; बस्तर के कानूनी सलाहकार श्री अर्जुनसिंह आदि गणनीय हैं।

इंग्लैण्ड में प्रवास के समय वहां से लौटने पर इन्डिया ऐक्ट 1935 के अनुसार देसी रियासतों के इन्डियन यूनियन में विलय की जो ज्वलंत समस्या खड़ी हुई थी उसमें विलीनीकरण का मसविदा तैयार करने के लिए अनेक ठिकानों ने पंडितजी का आश्रय लिया था। इनमें डूंगरपुर और सरगुजा के लिए उन्होंने Instrument of Accession तैयार किया था। न्यायविद डॉ. कोलम्बस ने अपने प्रशंसा-पत्र दिनांक 15 मई 1936 में पण्डित रविशंकरजी के लिए लिखा था।

"I have known Mr. R. S. Derashri, LL.B., Barrister-at-Law, for the last two years, and have been very much impressed with his high character and brilliant scholarship. He is an acknowledged authority on Hindu Law and the Constitutional Law and History of the Indian States—"

[मिस्टर रविशंकर देराश्री बार एट-ला को गत दो वर्षों से मैं जानता हूं। उनके उच्च चरित्र एवं पांडित्य ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। हिन्दू-ला संवैधानिक कानून एवं भारतीय रियासतों के इतिहास के वे अधिकारी विशेषज्ञ है :] लगभग इन्हीं शब्दों में उनकी प्रशंसा करते हुए सर लिन्डन मैक्सी (जो उस समय ब्रिटिश पार्लियामेंट बार के अध्यक्ष थे) लिखते हैं :—

"I have had, for some time past, Mr. R. S. Derashri, LL B; who is a member of Lincoln's Inn, and has been called to the Bar, associated with me In connection with certain important legal works which involved an exact and extensive knowledge of Hindu Law; and

the constitutional Law of India and the customs and usages of Indian States. This has given me an exceptional opportunity of forming a considered opinion of his personal and intellectual qualities, He possesses to a high degree, the type and quality of mind required for legal research and investigation into and application of legal principles. He is without any question, a man capable of achieving distinction either in the active practice of the profession of law, or on the academic side, in teaching Law--"

(लंदन 27 मई, 1936)

(मिस्टर आर. एस. देराश्री एल-एल.बी. जो 'लिन्कन इन' के सदस्य हैं एवं 'बार' में प्रविष्ट हो चुके हैं, पिछले कुछ समय से मेरे संसर्ग में हैं। इनसे मेरा वास्ता उन महत्त्वपूर्ण कानून सम्बन्धी मुद्दों के प्रसंग में पड़ा था जहां न केवल 'हिन्दू-लॉ' की यथार्थ एवं गहन जानकारी आवश्यक थी बल्कि भारत के संवैधानिक न्याय एवं वहां की रियासतों के रीति-रिवाज एवं अन्य प्रचलित प्रथाओं की जानकारी भी आवश्यक थी।

इस प्रसंग में मुझे उनके व्यक्तिगत एवं बौद्धिक गुणों से परिचित होने का विशिष्ट अवसर मिला। न्यायिक सिद्धान्तों के विनियोग के लिए जैसी तैयारी चाहिए वह प्रचुर मात्रा में उन्हें प्राप्त थी। पेशेवर वकालत हो अथवा कानून संबंधी शैक्षणिक कार्य हो दोनों ही क्षेत्र में उनकी नामवरी सुनिश्चित है।

डूंगरपुर रियासत के विलय का दस्तावेज तैयार करने के लिए देराश्री व डॉ. सी. जे. कोलम्बस लंदन से भारत आए थे। वापस भारत आकर वे कुशलगढ़ के राजा के सलाहकार भी नियुक्त हुए। बाँसवाड़ा, ब्रिटिश-सरकार और कुशलगढ़ के मध्य समस्याओं का सम्मानजनक समाधान ढूंढ़ने का श्रेय पंडितजी को मिला था। बस्तर नरेश प्रफुल्लचन्द भजदेव के भी वे सलाहकार बने। परोक्ष-अपरोक्ष रूप से अनेक छोटी रियासतें उनके अनुभव एवं सत्परामर्श से लाभान्वित हुईं इनमें बड़ी सादड़ी का नाम उल्लेखनीय है।

प्रशासनिक सुधार की दृष्टि से उदयपुर के महाराणा भूपालसिंह के राज्य काल में उमरावों एवं अन्य सामन्तों को प्रदत्त शक्तियों पर पुनर्विचार करने के लिए अनेक समितियां बनाई गई थीं। इनमें बनेड़ा के राजाधिराज अमरसिंह एक सदस्य एवं अध्यक्ष दोनों ही रूप से संबद्ध थे। महाराणा के सम्मुख रखे जाने वाले मसविदे की तैयारी में पंडितजी ने बनेड़ा नरेश की

सहायता की थी जिसका आभार मानते हुए उन्होंने पंडितजी को अपने पत्र दि. 12-11-1942 में जो लिखा था उसका कुछ अनूदित अंश इस प्रकार है :—

(उमरावों के न्यायिक अधिकारों के व्यवस्थापन में आप से प्राप्त परामर्श के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं। पग-पग पर आने वाली संवैधानिक एवं कानूनी अड़चनों का हल आपने ही ढूंढ निकाला है। इस दुष्कर कार्य में आपका सहयोग बड़ा कारगर रहा है)

उत्तर-प्रदेश के कुछ गाँव बनेड़ा की जागीर में सम्मिलित थे जिनकी देख-रेख आगरा जिले के अछनेरा गांव से की जाती थी। रानी हीरादेवी को लेकर इन गांवों के सम्बन्ध में विवाद खड़ा हो गया था। पं. रविशंकरजी ने इस विवाद का ऐसा न्यायोचित हल निकाला कि इलाहाबाद हाई कोर्ट के विख्यात वकील डॉ. सेन, मिस्टर प्यारेलाल बनर्जी, सर तेज बहादुर सप्रू एवं तत्कालीन महाधिवक्ता डॉ. नारायण प्रसाद अस्थाना व फेडरल कोर्ट ऑफ इन्डिया से मशविरा कर बनेड़ा नरेश ने उसे बेखटके स्वीकार कर लिया। तात्पर्य यह कि एक प्रतिभावान बार-एट-लॉ की हैसियत से देराश्री की धाक जम चुकी थी।

पं. रविशंकरजी बड़े स्वाभिमानी व्यक्ति थे। अपने इंग्लैण्ड प्रवास की एक घटना को वे बहुधा सुनाया करते थे। हुआ यह कि एक अंग्रेज कर्नल ने भारत के विषय में कुछ घटिया किस्म की बातें उनके सम्मुख कह दी थी। वे सहन न कर सके और उन्होंने उस कर्नल को ज़ोर आजमाईश के लिए आमंत्रित किया। मुकाबला हुआ और कर्नल महोदय परास्त हुए एवं ईमानदारी से उन्होंने यह स्वीकार कर लिया कि सचमुच भारतवर्ष 'होमरूल' की पात्रता रखता है।

अपने अध्ययन काल में ही रविशंकरजी को बनेड़ा राजघराने के राजकुमार एवं राजकुमारियों का संरक्षक बना दिया गया था। सन् 1923 में पंडितजी ने राजकुमार मानसिंह बनेड़ा को शिक्षित कर बैरिस्टरी पास करने के लिए उन्हें इंग्लैंड भिजवाया था। बनेड़ा के राजाधिराज ने उन्हें 'राज-गुरु' उपाधि से सम्मानित किया था एवं बनेड़ा की रानी चन्द्रकांताजी ने उन्हें अपना धर्मपुत्र बना रखा था। आम जनता भी उन्हें 'गुरुजी' नाम से ही सम्बोधित कर उनके प्रति अपना सम्मान प्रदर्शित करती थी।

एक रूढ़िगत परिवार में जन्मे एवं सामन्ती व्यवस्था की धूप-छांह से जुड़े होने पर भी रविशंकरजी को जनता-जनार्दन का बड़ा ख्याल रहता था।

समाज के प्रत्येक वर्ग के लिए उनका दरवाजा खुला रहता था। उनकी प्रबल कामना थी कि बनेड़ा नरेश अपने राज्य में लोकप्रिय शासन की स्थापना करें। स्थानीय शासन-व्यवस्था लागू करने के लिए उन्होंने राजाधिराज अमरसिंह को प्रेरित किया और शीघ्र ही बनेड़ा में नगरपालिका की स्थापना हो गई। पंडितजी उसके अध्यक्ष नियुक्त हुए। सन् 1929 में उन्होंने बनेड़ा में बिजली की व्यवस्था की। अपनी 'चेयरमेनशिप' के साथ वे राजाधिराज के सचिव एवं शिक्षा और स्वास्थ्य विभागों की भी अध्यक्षता करते रहे। बनेड़ा की सेवा-संघ नामक संस्था के वे ही जनक थे। राजनीतिक चेतना को सहारा देने में इस संस्था ने उल्लेखनीय योगदान किया था। सेवा-संघ के अधिवेशनों में गोकुललाल असावा, हरिभाऊ उपाध्याय, माणिक्यलाल वर्मा, मोहनलाल सुखाड़िया आदि नियमित रूप से सम्मिलित होकर देराश्रीजी का आतिथ्य स्वीकार करते थे। रजवाड़ों में लोकप्रिय शासन लागू करने के सम्बन्ध में देराश्रीजी के जो विचार थे उन्हें 'देशी-रियासतें आगे बढ़ें' नाम से लेखों की एक शृंखला में उन्होंने बांधा था। उदयपुर के साप्ताहिक 'जनजीवन' (1941-42) में इनका मुद्रण हुआ था।

1936 ई. के आसपास राजाधिराज बनेड़ा ने रविशंकरजी के सम्मुख मालवा स्थित राघोगढ़ रियासत का प्रशासन संभालने की पेशकश की थी। खीची चौहानों का राघोगढ़ एक समय बड़ी सम्पन्न रियासत थी जिनकी निकासी गांगरोन से हुई थी। मराठों के मालवा प्रवेश से राघोगढ़ की भौगोलिक सीमाएं संकुचित होकर रह गई थीं। यों वहां के राजा 'हिन्दूपत' कहलाते थे। किन्तु ग्वालियर ने उन्हें दरकिनार कर रखा था। सन् 1936 से 1962 तक पंडितजी ने राघोगढ़ का प्रशासन संभाला था। वस्तुतः राघोगढ़ की बागडोर उन्हीं के हाथों में थी। राघोगढ़ नरेश उन्हें पिता-तुल्य सम्मान देते थे एवं प्रजा की भलाई के लिए उठाए जाने वाले हर कदम के लिए पंडितजी उन्मुक्त थे। राघोगढ़ के अनेक निर्धन छात्रों की सहायता कर उन्हें आगे आने के लिए पंडितजी ने प्रेरित किया था। राघोगढ़ की जनता की भलाई में उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर रखा था। दरबार के कानूनी मसलों के प्रसंग में प्रसिद्ध नेता डॉ. भीमराव अम्बेडकर से उनकी घनिष्ठ मैत्री हो गई थी। बिना किसी जातीय भेद-भाव के उन्होंने छात्रवृत्तियां एवं नियुक्तियां दी थीं। उनमें साम्प्रदायिक संकीर्णता एवं अन्ध-विश्वास कदापि नहीं था। स्वभाव में मिलन-सारी और व्यवहार में शिष्टाचार था। सरलता थी। सादगी के प्रेमी थे। विनम्र और सहृदय थे। कृत्रिमता से घृणा थी।

पं. रविशंकरजी का इतिहास-प्रेम पृथक् से चर्चा के योग्य है। निज के

व्यय से उन्होंने ढेरों हस्तलिखित गन्थ एवं चित्रों का दुर्लभ संग्रह किया था। 'रॉयल ऐसियाटिक सोसायटी' की सदस्यता से उन्हें सम्मानित किया गया था। 'भारतीय विद्वत् परिषद्' की सदस्यता एवं 'विद्याभूषण' की उपाधि भी उन्हें प्रदान की गई थी। एक शोधार्थी जैसी लगन के साथ उन्होंने बनेड़ा एवं राघोगढ़ के इतिहास संबंधी बिखरी सामग्री को एकत्र किया था। जब वे इंग्लैंड में थे तब 'इम्पीरियल लाइब्रेरी' में घंटों बैठकर बनेड़ा के अखबारात और राघोगढ़ के इतिहास पर टिप्पणी लिखते रहते थे। भारत लौटने पर भी उनका यह क्रम चलता रहा। इसी प्रसंग में देराश्रीजी ने 15-16 जुलाई 1944 को कलकत्ता जाकर सर यदुनाथ सरकार के 'लेक-टेरस' निवास स्थान में इन अखबारातों को उनके साथ बैठकर पढ़ा था। होनी की बात है कि पंडितजी द्वारा परिश्रम से जुटाई गई सामग्री का वे स्वयं उपयोग न कर सके। उनके स्वर्गवास के दो वर्ष बाद श्री नारायण श्यामराव चिताम्बरे ने बनेड़ा का इतिहास प्रकाशित करवाया। पुस्तक की भूमिका में चिताम्बरेजी ने पंडितजी का स्मरण करते हुए स्वीकारा है; "मुझे दुःख है कि जिस पुण्यात्मा (श्रद्धेय रविशंकरजी) ने चालीस वर्ष तक जो परिश्रम किया था, उसका मूर्तरूप देखने वह आज इस संसार में नहीं हैं।"

राजाधिराज बनेड़ा कर्नल अमरसिंह ने भी इस पुस्तक के प्रारम्भ में देराश्रीजी के सम्बन्ध में लिखा है कि "पं. रविशंकर ने भारत के समस्त तीर्थों के पण्डों की प्राचीन पोथियां देखकर उससे इतिहास संग्रह किया। मैंने दक्षिण में दो विद्यार्थियों को भेजा और वहां से ऐतिहासिक तथ्य मंगवाये। पं. रविशंकरजी अधिकतया राघोगढ़ मध्यप्रदेश में रहते थे। अतएव वहां इतिहास लेखन कार्य अक्टूबर सन् 1961 में प्रारम्भ किया गया किन्तु दो मास ही कार्य हो पाया था कि दुर्भाग्यवश पं. रविशंकरजी अस्वस्थ हो गये और लेखन कार्य बन्द हो गया। विशेष दुर्भाग्य की बात यह है कि पं. रविशंकरजी का देहान्त मार्च सन् 1962 में हो गया।"

देराश्रीजी ने 'शेर-प्रकाश' एवं 'जयसिंह विरुदावली' नामक दो ऐतिहासिक काव्यों का सम्पादन किया था जो युग प्रकाशन, लश्कर एवं हिन्दुपत प्रेस, राघोगढ़ से मुद्रित हुये थे। ये ग्रन्थ राघोगढ़ के खीची चौहानों के पराक्रम से संबंधित हैं। 'आदर्श त्यागमूर्ति राजा भीमसिंह' शीर्षक से पंडितजी ने 'महारथी' पत्रिका में एक शोधपूर्ण लेख प्रकाशित किया था। बनेड़ा के संस्थापक राजा भीम मेवाड़ के महाराणा राजसिंह के प्रथम पुत्र थे और अपने पिता के जीवनकाल में ही उन्होंने औरंगज़ेब के विरुद्ध लम्बे युद्ध की बागडोर संभाल रखी थी। भीम के पराक्रम से प्रभावित होकर प्रोफेसर फ्रैन्क सैल ने "Bhim-

Singh ; A Romance of the Mughal Times" (Macmillan & Co. Ltd. London, 1926) नाम से एक स्वतंत्र पुस्तक लिखकर उनका इतिहास में मूल्यांकन किया है।

इतिहास के अलावा साहित्य, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद तथा विभिन्न धर्मों के तुलनात्मक अध्ययन के प्रति भी पंडितजी पर्याप्त रुचि रखते थे। 'गोरा बादल चौपई' का सम्पादन वे अधूरा छोड़ गए हैं। हिन्दी-साहित्य और गणित पर उनका लेख प्रयाग से प्रकाशित 'विद्यार्थी' पत्रिका में छपा था।

पं. रविशंकरजी सनातन धर्मावलंबी थे। उनका जीवन बड़ा नियमित रहा। एक नैष्ठिक हिन्दू के कर्तव्यानुसार सन्ध्या, पूजन, श्राद्ध-व्रतादि के प्रति वे सजग रहते थे। रामचरित-मानस के सुन्दर-काण्ड का पाठ उनकी दिनचर्या का भाग था। मंगल के व्रत का भी उल्लेख मिलता है। हिन्दी में डायरी लिखने का उन्हें शौक था। उनकी डायरी से कुछ अंश आगे उद्धृत किए गए हैं। उनका जीवन-क्रम सादा, बड़ा नियमित और बाहर-भीतर एक समान था। विदेशों में भी उनका वही नियम—प्रातःकाल व्यायाम, क्षौरकर्म, स्नान एवं संध्या। बाद में पूरे दिन वे काम में जुटे रहते थे। समय की बर्बादी उन्हें कचोटती थी। सोने से पूर्व वे अपनी डायरी लिखते थे।

सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर की रक्षा के प्रति पंडितजी बड़े सचेत रहते थे। उनका उद्देश्य संगृहीत सामग्री से पैसा कमाना नहीं था। संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी एवं भारत कला भवन (काशी हिन्दू विश्वविद्यालय) को उन्होंने चित्रों का अमूल्य संग्रह भेंट कर दिया था। इसी प्रकार अनेक शोध-संस्थानों को उन्होंने हस्तलिखित ग्रन्थ निःशुल्क सौंप दिए थे। उनके देहावसान के बाद अवशिष्ट चित्रों एवं हस्तलिखित ग्रंथों को उनके सुपुत्र श्री अक्षयकुमार देराश्री ने राजस्थान-सरकार को भेंट कर दिये थे। एतदर्थ हम उनके आभारी हैं। हस्तलिखित ग्रन्थ एवं दुर्लभ ऐतिहासिक दस्तावेज़ों की यह सामग्री प्रतिष्ठान की उदयपुर शाखा में सुरक्षित है। इस सामग्री के संस्कृत-प्राकृत ग्रन्थों का सम्पूर्ण सूचीपत्र सन् 1984 में प्रकाशित हो चुका है। यद्यपि इस खण्ड में पंडितजी की जीवनी पर प्रकाश अवश्य डाला गया है किन्तु उनकी एक सचित्र जीवनी हिन्दी-राजस्थानी ग्रन्थों के सूचीपत्र में संलग्न करने का हमारा यह संकल्प पूरा होने पर मुझे आत्म-संतोष मिला है। श्री अक्षयकुमारजी ने पंडितजी के जीवन सम्बन्धी सामग्री एवं दुर्लभ चित्रों को उपलब्ध कराकर उनकी स्मृति में यह श्रद्धाञ्जलि अर्पित करने का अवसर दिया है। पंडितजी के नाम कुछ पत्र पंडितजी के द्वारा लिखे गये दो-एक पत्र, उनके निकटस्थों के संस्मरण आदि परिशिष्ट में संकलित हैं।

पंडितजी के सुयोग्य पुत्र श्री अक्षयकुमार देराश्री आई.आर.एस. इन दिनों राष्ट्रीय कस्टम, एक्साइज़ व नारकोटिक्स अकादमी, नई दिल्ली में उप-निदेशक के पद पर हैं। उनकी विनम्रता एवं सहिष्णुता अपने पूर्वजों की परम्परा को स्थिर रखे है। अक्षयजी बड़े सीधे स्वभाव के हैं। मित्रों से बहुत प्रेम से मिलते हैं। पूजा-पाठ एवं एकाकी जीवन के मार्ग से वैयक्तिक अनुभूतियों द्वारा जीवन के शाश्वत मूल्यों का उनका परीक्षण देखते ही बनता है।

हमारे निवेदन पर उन्होंने पं. रविशंकर देराश्री की स्मृति में जो संस्मरण लिखे हैं उन्हें यहां प्रकाशित करने का भी सुयोग हमें मिला है। आभारी हैं।

—0—

डायरी के पृष्ठों से

1926

1 अगस्त, इलाहाबाद

सायंकाल को मेश्रो हाल में गया। बड़े श्रोजस्वी व्याख्यान हुए। व्याख्यानदाता राजा सर रामपालसिंह व मदनमोहन मालवीय थे--सभापति चिन्तामणि थे........

11 सितम्बर, इलाहाबाद

कन्हैया बिल्डिंग में Friends union संस्था स्थापित हुई और मैं सभापति चुना गया। पहली debate "Modern Education is useful for the welfare of the country" पर थी।

12 सितम्बर, इलाहाबाद

दस वजे debate का विषय था "In the opinion of the House village reconstruction and mass education are only means for Swaraj."

23 सितम्बर, इलाहाबाद

श्राज मालवीयजी श्राये थे। छह वजे नागरी प्रचारिणी सभा में........

1933

13 फरवरी, बनेड़ा

मानसिंह झाला तथा लूनावाड़ा महाराज के लिए मसविदे तैयार किये। शाम को 7.32 पर भाया (ज्ञान) का जन्म हुश्रा।

2 मार्च, बनेड़ा

स्कूल के लिए तीन श्रार्डर निकाले।

1. मास्टर ज्वाला प्रसादजी ने लड़कों को पीटा जिस पर 1 रु. जुर्माना।
2. हेड मास्टर के साथ ख़राब व्यवहार जिसके लिए चेतावनी।
3. 75 प्र.श. लड़कों की हाजरी रहना ज़रूरी।

18 मई, बनेड़ा

बड़े बाग तक सैर को गया। लौटते वक्त नाले के पास श्रपने को कांग्रेसी बताते

हुए दो आदमियों से भेंट हुई। एक ने अपना नाम राजाराव बताते हुए कहा कि वे आल इन्डिया कांग्रेस के जनरल सेक्टरी थे। जब मैंने 5 वर्ष के जनरल सेक्टरियों के नाम सुनाने शुरू किये तो वे झेंप गये। चन्दा लेने आये थे।

28 जून, बनेड़ा

ओझाजी रामचन्द्र का विजवा से पत्र आया कि यदि मैं इंग्लैंड जाना चाहूं तो महा. सरदारसिंहजी शाहपुरा अपने राजकुमार पराक्रमसिंह के Tutorship और Guardianship के 10 पौंड मासिक (140 रुपये) देने को तैयार हैं।

21 जुलाई, बनेड़ा

लंदन से दरबार का तार मिला कि मुझे राजकुमार मानसिंहजी की सहायता करनी है सो तारीख़ 7 अगस्त को जहाज़ से रवाना हो जाऊं।

2 अगस्त, बनेड़ा

जनता स्कूल तथा छात्र वर्ग की ओर से अभिनन्दन पत्र दिया गया।

3 अगस्त, बनेड़ा

आज सिपाही के साथ पासपोर्ट आ गया। मोटर से मांडल के लिए रवाना हुए व विदा के समय दादा भाई के अश्रुधारा बही और बहुत दुःख हुआ। सत्य भी खूब रोया और काका साहब शङ्करलालजी भी। बनेड़ा माता भी खूब रोई तथा पिताजी को भी बहुत रोना आया। पत्नी दुःख में थी। मानजी का कार्य ज़रूरी न होता तो सम्भव है नहीं जाता।

8 अगस्त, अरब सागर

समुद्र बहुत भारी तूफ़ान पर था......जहाज़ में दिल्ली के मिस्टर रहीम, कच्छ के कन्हैयालाल ढोलकिया, नरेन्द्रनगर टेहरी गढ़वाल के स्वामी ज्ञानानन्द, अजमेर के राय बहादुर भगवानसिंहजी, कलकत्ता गवर्नमेंट मेडिकल कालेज के प्रो. सिन्हा तथा उदयपुर के नन्दलालजी भंडारी के लड़के से परिचय।

13 अगस्त, लालसागर

....आज रविवार तथा जन्माष्टमी का व्रत किया। आज से हर दिन रविवार का व्रत रखना निश्चित किया।

17 अगस्त, नेपल्स (इटली)

....सरदार बहादुर भगवानसिंहजी, भंडारी रामनारायणजी, स्वामी ज्ञानानन्दजी तथा मैं और श्री भंवर सा. पाम्पे नगर के खण्डर देखने के लिए पौने आठ रवाना हुए। पौने बारह बजे लौटे। नगर प्राचीन कला का अपूर्व नमूना था। स्थान-स्थान पर काम सम्बन्धी चित्र थे जिससे भोग विलास लिप्तता की विशेषता मालूम हुई। जहाज़ पर लंच ले ढाई बजे की गाड़ी से रोम के लिए रवाना हुए साढे सात बजे पहुँचे।

20 अगस्त, पेरिस

दं बजे की गाड़ी से पैरिस पहुंचा। उतर कर होटल बरगंडी पहुंचे। पांच बजे बाग में गए........ईफल स्तम्भ को देखा। पेरिस की जितनी बुराई भारत में है वह देखने में नहीं आई। ....पेरिस बहुत ही सुन्दर नगर है और स्थान-स्थान पर जनसाधारण के सुभीते के लिऐ वाटिकाएं हैं।

11 सितम्बर, लन्दन

पराक्रम देवजी को साफ़ कह दिया कि इतनी शर्तों पर पढ़ाऊंगा—
(1) सिगरेट चार से अधिक नहीं (2) रोज़ दस घण्टे काम (3) सप्ताह में एक छुट्टी (4) विद्यार्थी जीवन रखोगे।

13 सितम्बर, लन्दन

....आज मिस्टर रहमान को भारतीय शिक्षा पद्धति में देशी भाषा की आवश्यकता पर कहा तो नाराज़ होकर चला गया।

21 सितम्बर, लन्दन

....9 की गाड़ी से आक्सफोर्ड को गया। 11.8 पर पहुंचा। **M. N, Tod** साहिब स्टेशन पर लेने को तैयार थे एक बजे तक घूमकर सब कालेज वगैरा दिखाए फिर अपने बंगले ले जाकर लंच दिया। स्त्री-पुरुष बहुत ही सज्जन हैं। यह फ्रेंक सैल का मित्र है।

23 सितम्बर, लन्दन

....छह बजे स्वर्गीय ब्रैडला की शताब्दी पर बर्नर्डशा, लार्ड स्नेल प्रोफेसर लास्की आदि के व्याख्यान थे, सुनने गया। दस बजे लौटा।

3 अक्टूबर, लन्दन

सवा पांच हाथ मुंह धो छह बजे एलबर्ट हाल में प्रोफेसर आईनस्टीन की वक्तृता सुनने गया। 8 गि. का टिकिट था। 10 हज़ार मनुष्य हाल में खचाखच भरे थे....

18 अक्टूबर, लन्दन

....12 से 3 छुट्टी में ब्रिटिश म्यूजियम Dr. Barnett से मिलने गया । बहुत बातें हुई । B.Sc. होने से भर्ती होने में बहुत असुविधा होना प्रकट किया....

1934

1 जनवरी, लन्दन

···· साढ़े तीन बजे समरजय को Voltaire की तसवीर दिखाने गया ।

2 जनवरी, लन्दन

मैं इन्हीं के लिए Prof. Fitzgerald से मिलने जा रहा था····इनमें उचित अनुचित का विचार ही नहीं है ।

3 जनवरी, लन्दन

Hare court Temple गया जहां Barrister Graham Dixon से राघोगढ़ के बारे में बात करनी थी । उनसे बात करके Carlton में I am no angel देखने गया ।

4 जनवरी, लन्दन

Miss Mustard सावित्री पाठशाला में नौकरी के लिए पूछने आई ।

5 जनवरी, लन्दन

मानजी आए और उनके साथ Albert Victorian Museum देखने गया ।

22 जनवरी, लन्दन

....11 बजे Lincoln's Inn भरती हुआ....171 f. 15 s. जमा कराये, वापस लौट Mr. Graham Dixon से मिला । Langdon से जो बातें हुई सब समझाई····एक भूत-भविष्य देखने वाली स्त्री आई ।

25 जनवरी, लन्दन

....शाकाहारी को फलों के अलावा कुछ नहीं मिलता है....12 बजे मानजी से बात कर सोया । इनकी सिफारिश Sir R,G. Glancey ने Mr, Langdon को की है ।

27 जनवरी, लन्दन

····12 बजे Mill Hill रवाना हुआ, 4 बजे वापस लौटा, सरदार राजेन्द्रसिंहजी तथा मोहिन्दरसिंह रंधावा आए · · · उनको चाय पिलाई । एक भाई I.C.S. में, दूसरा बैरिस्टरी कर रहा है ।

28 जनवरी, लन्दन

....Mr. N.M Patel आया ।

31 जनवरी, लन्दन

....10 से 11 तक Contract Law पढ़कर India Office गया । Malcolm का मालवे का इतिहास देखा और राघोगढ़ सम्बन्धी इतिहास टाइप करने को कहा ।

3 फरवरी, लन्दन

....British Museum के सामने वाले पुस्तकालय में गया । वहां पर Coins of Rajpootana व Sir Malcolm की "Political History of India" किताबें ख़रीदीं ।

3 मार्च, लन्दन

....कलेवा कर भंडारी से मिलने Kings College गया वहां से पार्चे के कोट तथा साफ़े लाया । वनेड़े के पुराने फोटो उतारने को दिए ।

13 मार्च, लन्दन

....आज इनको (कु.मानसिह) King की लैवी में जाना था । Daimbler car मंगाई....फोटो भी अख़बार में निकला ।

1935

3 जनवरी, लन्दन

इन्डिया आफिस राघवगढ़ के काम के लिए गया । वहां से साढ़े तीन बजे लौटा....राघोगढ़ के कागज़ात के सम्वन्ध में पी.एन. जोशी को बुलाया, उनसे वातचीत की । आठ बजे उसे विदा किया । साढ़े वारह बजे तक राघोगढ़ के कागज़ देखता रहा । आजकल वास्तविक पढ़ाई नहीं हो पा रही है ।

4 जनवरी, लन्दन

साढ़े बारह बजे Mr. Manley के यहां गया, वहां से राघोगढ़ के कार्य के लिए Mr. R. A. Wilson के यहां गया, वहां से फिर Mr. Manley के यहां गया । दस बजे Major Attlee की भारतवर्ष पर वक्तृता सुनी ।

10 जनवरी, लन्दन

Herald में Crossword Solution भेजा....साढ़े ग्यारह बजे राघोगढ़ केस के कागज़ात देखने इन्डिया आफिस गया ।

11 जनवरी, लन्दन

....छह वजे डीनर के लिए Lincoln's Inn पहुँचा। सात से आठ डीनर ले सिख गुरुद्वारे गया।

15 जनवरी, लन्दन

....साढ़े नौ वजे रवाना हो Mr. Valentine Holmes के यहां गया, वहां से R. F. Levy के यहां........देशपांडे के होता हुआ United India Restaurant में Lunch के लिए गया। धोलकिया के साथ सायं तस्वीर देखने ले गया।

16 जनवरी, लन्दन

मैंने आज टी पार्टी दी थी वीस सज्जन थे। रावलजी सामोद प्रो. Fitzgerald, डा. कटियाल, तलवार वगैरा।

17 जनवरी, लन्दन

· · · कलेवा कर Mr. Eddy के पास गया। वहां से Valentine Holmes के यहां साढ़े ग्यारह से ढ़ाई वजे तक India Office राघोगढ़ का काम किया। तीन वजे फिर Mr. Eddy से मिला और उसके यहां पढ़ना तय किया। वहां से फिर Mr. Holmes के पास आया। ....9 वजे Mr. Sundaram सुपुत्र Sir C. P. Ramaswamy आए, उनसे मिला। पौने ग्यारह वजे वे गये।

21 जनवरी, लन्दन

· · · Sir C.P. Ramaswamy के सुपुत्र Mr. C. R. Sundaram भोजन के लिए आए थे।

22 जनवरी, लन्दन

· · · साढ़े नौ से साढ़े दस वजे तक Rev. C. F. Andrews की भारतवर्ष पर वक्तृता सुनी।

29 जनवरी, लन्दन

...साढे नौ से ग्यारह वजे तक रेडियो सुना.... Mr. Churchill की भारत पर वक्तृता थी।

5 फरवरी, लन्दन

नौ से साढ़े नौ वजे Mr. Baldwin की भारत पर वक्तृता सुनी।

7 फरवरी, लन्दन

भोजन कर Parliament में भारत बिल पर debate सुनने गया।

9 फरवरी, लन्दन

....कुछ व्यायाम कर स्नान कर सन्ध्या की। अब कल से नियम पूर्वक व्यायाम करना शुरू करूंगा। मनुष्य विचारता है पर सब कुछ भगवान के अधीन

है। आशा है भगवान रक्षा करेगा। कभी झूठ बात निकल जाती है पर आत्मा को पश्चाताप होता है।

14 फरवरी, लन्दन

सवा चार बजे (दोपहर) को Dramatic College स्वर शुद्धि के लिए गया। सवा पांच पर Mr. Manley का निमंत्रण था सो Royal Empire Society गया....उनकी स्त्री से मिला फिर वे लोग मुझे Bengal Lancers दिखाने ले गए।

20 मार्च, लन्दन

....10 बजे राघोगढ़ के मुकदमें के बारे में मिस्टर विल्सन से 19 कैन्वर्थ स्ट्रीट ई.सी. 2 मिलने गया। साढ़े ग्यारह बजे चेम्बर पहुँचा। Mr. Maurice Lush बैरिस्टर के साथ लंच लेने गया। ....आजकल काम शिथिल है।

21 मार्च, लन्दन

....कलेवा कर Chamber गया। वहाँ से रवाना होकर प्रीवी काउन्सिल जुडिशियल कमेटी गया। डेढ़ बजे लौटा। पौने तीन बजे तक मिस्टर एडी के पास था। फिर तीन से चार बजे तक मिस्टर हारवैट सेक्रेट्री लीगल काउन्सिल के पास गया।....साढ़े चार से पांच बजे तक वाणी शुद्ध करने के कालेज गया। आठ बजे भोजन कर एलबर्ट हाल में चर्चिल वगैरा के व्याख्यान सुनने गया। साढ़े दस बजे लौटा।

28 मार्च, लन्दन

India Office गया। भाग्यवश राघोगढ़ सम्बन्धी पूरी फाइल मिल गई। लगभग उसमें 500 पत्र होंगे। फाइल का नम्बर 43 है। ....सवा तीन बजे Lincoln's Library गया। राजकुमार सीतामऊ से मिला, चाय पी। आठ बजे Holmes के चेम्बर में गया।

30 मार्च, लन्दन

....डेढ बजे ब्रिटिश म्यूजियम पहुँचा, कुछ कागजात राघोगढ़ में भूल गया था। डेढ़ बजे वापिस आया। ढाई बजे वापिस गया।

1 अप्रेल, लन्दन

Sir Gilbert Walker, F. R. S., Sir Henry Sharp, Prof. Brunt चाय के लिए आए। सात बजे बैरिस्टर मैनेल और उनकी पत्नी भोजन के लिए आये नौ बजे गये।

3 अप्रेल

साढ़े सात वजे King Henry IV नामक थेटर देखने गया। N.M.Campwala वम्वई वाले ने जवरदस्ती निमंत्रण कर बुलाया इस कारण गया।

6 अप्रेल, लन्दन

मैं 'महावीर तथा चंद्रात्रेय Oxford, Cambridge की नाव-दौड़ देखने गये।

13 अप्रेल, लन्दन

....ब्रिटिश म्यूजियम होकर सवा चार वजे घर आया। डूंगरपुर महाराज नागेन्द्रसिंहजी, पोकरन कँवर भवानीसिंहजी, कुचामन ठाकुर सा. के छोटे भाई प्रतापसिंहजी, छोटे उदयपुर के पराक्रमसिंह तथा पुष्पसिंहजी के साथ भोजन किया। ग्यारह वजे सोया।

19 अप्रेल, लन्दन

....रणजीतसिंह वीकानेर के वड़े जागीरदार थे उनको महाराजा ने 1922 में देश निकाला दे दिया ....उनके लड़के भागीरथसिंहजी मिलने आये Archibishop of Cantbury का सवा सात वजे गुड फ्राइडे का Address सुना।

20 अप्रेल, लन्दन

....Tunbridge Wells महाराज सरदारसिंहजी से मिलने गया। उन्होंने उनके लड़कों की शिक्षा के लिए सम्मति देने को वुलाया था। उन्होंने लंच मेरे लिए वनाया....

26 अप्रेल, लन्दन

....आज H. M. C. Harris भोजन करने आया....High School Ajmer में 1913 से 1932 तक हैड मास्टर था।

12 जून, लन्दन

...9.40 की गाड़ी से Oxford Sir W.Holdsworth से मिलने गया। Holdsworth वहां नहीं थे इस कारण इधर-उधर Oxford देखा। 4-5 वजे तक Mr. Tod, Oriel College के Senior Tutor से मिला। उसने चाय वगैरा का प्रवन्ध किया। 7.45 वजे Sir Holdsworth से मिला, उसने सहायता करने का पूर्ण विश्वास दिलाया....

13 जून, लदन

....चेम्वर गया दिन भर काम ही करता रहा। चार से पौने सात तक डाक्टर कटियाल ने नैपाली मिनिस्टर तथा सर तेज वहादुर सप्रू को पार्टी दी उसमें सम्मिलित हुआ।

18 जून, लन्दन

Terms माफ़ करने की अर्जी पेश की....Holdsworth ने सहायता देने का वचन दिया। Mr Fitzgerald ने भी Mr. Tophin को लिखा तथा Benchers को भी....फिर House of Lords गया....दस साढ़े दस बजे Mr. Bernard Shaw का लेक्चर सुना।

8 जुलाई, लन्दन

....आज बनेड़े से मानजी की "लन्दन में भारत के विद्यार्थी" और उपाध्याय की "प्रण-पालन" पुस्तकें आईं....कस्तूर बाई के देहान्त के समाचार आये।

29 जुलाई, लन्दन

....स्नान कर तैयार हो...प्रो. मदन गोपाल को श्रीवास्तव का सूट तथा पुस्तक जाकर दी....सवा ग्यारह बजे जस्टिस पुलन से मिला, उन्होंने चीफ जस्टिस सर सुलेमान के नाम मेरे लिए बहुत बढ़िया पत्र लिखा।

11 अगस्त, लन्दन

....एक घण्टा लैटिन तथा इटालियन भाषा पढ़ी....साढ़े छह बजे बाग़ में घूम प्रिंसिपल गोखले से मिलने गया।

22 अगस्त, लन्दन

....ब्रिटिश म्यूजियम के लिए रवाना हुआ। W.Spencer,New Oxford Street के यहां हस्तलिखित पुस्तकों तथा चित्रों का संग्रह देखने गया।

5 सितम्बर, लन्दन

ज्योतिलाल महरोत्रा जो झांसी का था वह आया अपने विवाह वगैरा की सारी व्यवस्था सुनाई कि किस तरह राजकुमारी कांकेर से हरिद्वार में प्रेम हो विवाह हो गया।

7 सितम्बर, लन्दन

....कांकेर की राजकुमारी का विवाह झांसी के महरोत्रा ज्योतिलाल से हुआ। यह विचित्र विवाह हुआ जहाँ राजपूत तथा खत्री जाति का संयोग हुआ। कांकेर की रानी विधवा है वह तथा उनकी लड़की और ज्योतीलाल लंदन में रहते हैं। उन्होंने मुझे ता. 10 को अपने साथ ठहरने का निमंत्रण दिया।

3 अक्टूबर लन्दन

11.10 पर बरमिनघम पहुँचा....प्रो. एस. बेकर से मिला। बहुत ही भलमनसाहत से पेश आए।

8 अक्टूबर, लन्दन ।

····इलाहाबाद हाईकोर्ट जज पुलन चाय पर आए....उसके बाद सवा छह बजे डा. C J. Coloumbus जो रियासतों के Instrument of Accession तैयार कर रहे हैं आए ।

10 अक्टूबर, लन्दन

....रायल ऐशियाटिक सोसायटी में गया वहां 'राज-रत्नाकर' तथा 'जयदेव विलास' ग्रन्थ देखे । भीमसिंहजी का जन्म वि.सं. 1711 का ही है ।

20 अक्टोबर, लन्दन

····National Catholic चर्च में पूजा देखने गया । वहां से मि. वेवलमिटन की मोटर में उनके घर गया....जहां से कविवर शेक्सपीयर का जन्म स्थान देखने गया । साढ़े सात बजे थियोसोफिकल सोसायटी में वक्तृता सुन 9 बजे घर आया....दिन भर उपवास था ।

14 नवम्बर, लन्दन

महा. नागेन्द्रसिंहजी का पत्र आया कि डूंगरपुर का Instrument of Accession मेरी सलाह से बनाना चाहते हैं ।

28 दिसम्बर

बादाम के बिस्कुट बनाए तथा अखरोट-चिलगोजा पाक....सवा दो बजे Rev. Old का निमंत्रण था । दस बजे रात को लौटा ।

31 दिसम्बर

महाराज नागेन्द्रसिंहजी वस्तर की महारानी तथा उनके पति प्रफुल्लकुमार भंजदेव के साथ केंसिन्गटन पैलेस मैनशन में ठहरे थे....मिलने गया, वहीं फलों का लंच किया ।

1936

13 मार्च, लन्दन

....भोजन मेरे लिए तथा सर्जन पारधी के लिए बनाया । सर्जन पारधी महाराष्ट्रियन ब्राह्मण हैं । इन्होंने 37 वर्ष पहले यहाँ एक यूरोपियन महिला से विवाह कर लिया और फिर भारत नहीं लौटे····भारतीय विद्यार्थियों की बड़ी सहायता करते हैं तथा इनकी स्त्री भी भली है ।

25 मार्च, लन्दन

मिस्टर विलसन के पास महारानी कांकेर के मुकदमें के बारे में गया....फिर नागेन्द्रसिंहजी से मिला....साढ़े सात बजे हम दोनों वाइसराय के विदा भोज में गए....400 मनुष्य थे ।

27 मार्च, लन्दन

....'बाथ' में Romans के स्नानागार बड़े सुन्दर और रमणीय हैं....उस समय के शीशे के नल वग़ैरा विद्यमान हैं। 'वेल्स' का गिरजाघर 13वीं शताब्दी में बना था।

28 मार्च, लन्दन

....लंच के लिए Sir Philip Dowson M.P. को बुलाया। लंच लेकर Sir Philip घर आए और सवा तीन तक मेरे यहां बैठे रहे।

2 मई, लन्दन

....डा. कोलम्बस तथा उनकी भतीजी चाय पर आए।

6 मई, लन्दन

....साढे छह बजे Lincoln's Inn पहुँचा जहां मेरा Call था आज मुझे बैरिस्टर बनाया फिर लार्ड रसल ने वक्तृता की।

6 मई, लन्दन

....स्नान भजन कर बादशाह की रजत जयंती का जुलूस देखने गया....बहुत ही ठाट से निकला....भारत के राजाओं में बीकानेर, कश्मीर तथा पटियाला के थे। नवाब उमर हयात खां और Sir Joseph More तथा उनकी धर्मपत्नी थी। सवा तीन बजे युवराज-युवरानी धर्मपुर आये।

20 मई, लन्दन

....सात बजे भारतीय पोशाक पहनकर ट्रिन्टी कालेज डबलिन के डिनर में Mayfair होटल गया वहां कई भारतीय अफ़सरों से मिला।

21 मई, लन्दन

....माजी साहिब नरसिंहगढ़ से मिलने गया।

22 मई, लन्दन

....मानसा राव सज्जनसिंह के भाई यशवन्तजी तथा हिम्मतसिंहजी का निमंत्रण था ख़ूब ख़ातिर की और मुझे मिलाने के लिए औंध के कुमार, डॉ. घोष, मिस्टर जयकर के पुत्र तथा उसकी अंग्रेज़ पत्नी, मि. बनर्जी आदि को निमन्त्रण दिया।

20 जून, कोलोन

....2.57 की गाड़ी से बर्लिन के लिए रवाना हो गया। Cologne साफ़ सुथरा शहर है। गिरजाघर बहुत अच्छा है। 10.34 स्टेशन पहुँचा मिस्टर ड्रेहैम स्टेशन पर मिले ... 7 मार्क में होटल में कमरा लिया।

21 जून

'पोस्टडम' के प्राचीन राजभवन और नगर देखने 10.30 बजे रवाना हुआ.... राजभवन झील के उस पार Frederic the Great ने बनाए थे....एक प्राचीन भवन है तथा दूसरा नवीन....दोनों ही अद्वितीय हैं। Frederic कुत्तों को चाहने वाला था....अपने ग्यारह कुत्तों तथा घोड़ों की स्मृति बनवाई।

27 जून, वियना

....यहां के राजभवन बड़े सुन्दर हैं....अकबर और जहांगीर के समय का चित्र संग्रह देखा, बड़ा सुन्दर है।

28 जून, बुडापेस्ट

....दस से एक तक नगर, राजभवन आदि देखने गया....यहां के राजमहल भी बहुत सुन्दर हैं और कई अंशों में वियना से भी बढ़कर है....

1937

26 जनवरी, कुचामण

....जोधपुर के राजवैद्य पं. मदनलालजी शास्त्री से भेंट हुई....अनुभवी वैद्य हैं.... रहने वाले देसूरी के हैं और इनके पिता पं. परमानन्दजी प्रसिद्ध वैद्य थे।

31 जनवरी, आगरा

....शाम को 6 बजे कोटला गए, फ़िरोज़ाबाद तक अच्छी सड़क है....आगे 9 मील कच्चा रास्ता है। कोटला छोटा सा एक हज़ार मनुष्यों का नगर है।

8 फरवरी, जयपुर

....सामोद रावलजी से मिलने गया जिन्होंने बड़ा ही प्रेम दिखाया।

14 फरवरी

....श्रीमान् युवराज साहब ने अपने मुंह से 500 रु. माहवार तनख़ा के लिए फ़रमाया और मैंने मंजूर किया।

1939

11 जनवरी, जोधपुर

Saw Col. Field at 10.30 with Thakur Saheb. Saw the Judicial Minister Kr. Harnath Singh.

17 फरवरी, दिल्ली

Met. Raja Bahadur Kushal Pal Singhji and Sir Abdul-Halim Ghaznavi.

26 फरवरी, ग्वालियर

Went to Morar to see Lt. Col. Jadava who intrcduced me to Capt. B T. Samant and Maj. Shitole.

28 फरवरी, ग्वालियर

....Went to Residency. Saw Resident and had interesting talk with him. He gave valuable piece of advice regarding the drafting of memorial.

13 मई, पूना

Went to Alienation office and studied the Residency Records.

14 मई, पूना

Went to Bharat-Itihas-Samshodak-Mandal; Saw old paintings of Raṇa Amar Singh I of Udaipur, Gajsingh of Jodhpur and Raja Umed Singh of Shahpura.

29 मई, पूना

At 7-30 went to Itihas-Samshodak-Mandal to read a paper on Shivaji's relation with Rana Rajsingh.

1 जून, पूना

Got up early morning and went to Alandi to have darshan of Gyaneshwar Maharaj Samadhi..................went to see the Yuvraj of Dharampur.

2 जून, नासिक

Reached Nasik and from there proceeded to Trimbakeshwar.

4 जून, बम्बई

Went to attend the lecture of Babu Rajendra Prasad, the President of the Congress.

8 जून, बम्बई

Went to see Elephanta caves.

9 जून बम्बई

Went to see Yogi Bhagwandas ji who was to enter an airtight grave for 9 hours. In the evening, again went at 6 when he was to be taken out.

12 जून

Reached Chota Udaipur at 12 ... Kumar Parakrama Singh came to receive me at the station.

25 जून, इन्दौर

Left for Onkareshwar and reached there at 6.20. After bath in the Narmada and darshan of Onkareshwar took meals at 10.30.

2 अक्टूबर, जयपुर

....रावलजी दलेलसिंह आदि से फोन पर बात की....प्रि. कन्हैयालालजी माथुर से मिल डिग्गी के राव संग्रामसिंह से मिल, होम डिपार्टमेंट गया। कुँवर दलेलसिंह ने ऐतिहासिक गवेषणा विभाग के सुपरिन्टेंडेंट मिस्टर बृजनारायण अग्रवाल से मिलाया जिन्होंने सारा विभाग दिखाया।

7 अक्टूबर, सौरभजी (सोरों)

साढे तीन से साढ़े चार बजे तक कुलगुरु के पास अपना वंश वृक्ष तैयार किया। राजगुरु दुर्गादत्त के घर आया....दो बजे तक काम किया।

1 दिसम्बर, बनेड़ा

An aeroplane of Rajputana Flying Club, Ajmer landed here but I was working at the Fort, therefore did not go to see it. I sent mother, wife and children to see it.

1940

1 जनवरी, रतलाम

साढ़े आठ बजे रतलाम पहुँचा....रास्ते में डूंगरपुर दरबार के छोटे भाई नागेन्द्रसिंहजी मिले....उन्होंने खूब फल खिलाए।

25 जुलाई, नई दिल्ली

साढ़े सात बजे डा. अन्सारी के भाई नाबीना हकीमजी के पास रा.कु. बलभद्रजी राघोगढ़ को ले गया फिर डी. किलबर्न I. P. जो यहां पुलिस के सीनियर सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं, के यहां चाय के लिए गया।

26 जुलाई, मथुरा

वैद्य हरिदासजी से रा.कु. राघोगढ़ व रा.कु. प्रतापसिंहजी की जांच कराई।

3 अगस्त, दौलताबाद (आगरा)

....यहां पर शिशोदिया राजपूत और चमार ज्यादा हैं। राजपूतों की दो पार्टियां हैं। एक का मुखिया दुर्गाप्रसाद, एक का मुन्शीसिंह।

22 सितम्बर, मथुरा

...तांगे में गोवर्धन होता हुआ यतिपुरा पहुँचा फिर गोवर्धन गया....मानसी गंगा में स्नान कर शास्त्रीजी के भाई गोवर्धनकृष्ण कुटी में रहते हैं, मिलने गया।

16 अक्टूबर, राघोगढ़

....वालामेट गया वहां पर एकनाथ की समाधि पर वि.स. 1732 ज्ये. शुक्ला 10 का शिलालेख देखा जिसमें खीची राजा गरीबदास का नाम था। वहां से दावदपुर ठाकुर जगन्नाथसिंहजी से मिलने गया जिनके पास 5-7 हस्त-लिखित ग्रन्थे, उनमें राघोगढ़ के राजा धीरजसिंह वि.सं. 1745-83 के समय का लिखा 'पृथ्वीराज रासो' था····डोंगर के मन्दिर के वैरागी के पास भी हस्तलिखित ग्रन्थ थे उनमें आलम प्रकाश प्रधान था।

17 अक्टूबर राघोगढ़

····बारह बजे तूमनखेड़ी गया और वहां भी वि.सं. 1732 का खीची नरेश गरीबदास, राजकुमार राजा दीपशाह का शिलालेख देखा और वहां की बेवा जागीरदारनी के यहां दो हस्तलिखित ग्रन्थों की जिल्द देखी....एक में "जयसिंहप्रकाश" (राघोगढ़ के खीची नरेश जयसिंह)····पं: लक्ष्मी नारायण खेड़ापति के यहां "बिहारी सतसई" पर अच्छी हस्तप्रति थी।

14 जनवरी, पुष्कर

....मिश्रीलाल भंवरलाल पन्डे के पास बनेड़े के ऐतिहासिक कागज़ देखने गया। वि.सं. 1770 का राजा सुलतानसिंह का पट्टा तथा वि.सं. 1804 का राजा सरदारसिंहजी का पट्टा देखा।

30 जनवरी

मातेश्वरी का देवलोक माघ शुक्ला 3 सं. 1997 सवा ग्यारह बजे हो गया.... ....मैं सीधा श्मशान गया और आहुति दी....मेरा भाग्य था कि अन्त्येष्टि में शामिल हुआ। मातेश्वरी साक्षात् देवी थी....मृत्यु भी उत्तम दिन हुई, जब सब भोजन कर चुके थे।

20 फरवरी, राघोगढ़

....महा. ग्वालियर की शादी नेपाल के राजा शमशेर जंग की दोहिती से कल हो रही है। राजमाता की ओर से निमन्त्रण आया, जिसका जवाब दिया।

1 जुलाई, उदयपुर

शाम को 6 वजे दावड़ा और रींछड़ा के केस के लिए प्रधानमन्त्री विजय-राघवाचार्य के पास मैं और दरबार गए....उनको केस भली-भांति समझाया।

16 जुलाई, इलाहाबाद

सवा नौ बजे यहां के प्रमुख वकील प्यारेलाल बनर्जी के पास गए व डा. अस्थाना को बतलाया....उन्होंने एतराज बतलाया....दोनों में नाइत्तफाकी होने से डा. सेन से सलाह करने गए तो उन्होंने बनर्जी से इत्तफाक किया।

7 नवम्बर, दिल्ली

सर वी. एल. मित्तर, एडवोकेट-जनरल के पास पहुँचे। उन्होंने केस बनाकर पेश करने को कहा और राय की फीस 1200 रु. बताई।

1942

27 फरवरी, कुचामन

....श्री प्रताप की धर्मपत्नी के लिए भागवत 2 खण्ड 8/- स्त्री-सुबोधिनी 2-12-0, गृह-स्वर्ग 11-8-0 जो आगरे से लाया था देने के लिए श्रीमती माजी साहिबा के पास भेजे....फिर माजी साहिबा ने अन्दर बुलाया....राणी सा. से मिले....8.30 बजे लौटा।

17 मार्च

मंगलवार का व्रत था सो सुन्दरकांड का पाठ किया।

17 अप्रेल, जयपुर

....वैद्यजी ने महामहोपाध्याय गिरिधरजी शर्मा, प्रिंसीपल संस्कृत कालेज से मिलाया। बंगले लौट, भोजन कर, श्री प्रताप की धर्मपत्नीजी से मिला.... बड़ी सभ्य और विदुषी महिला है....

23 सितम्बर लखनऊ

....12 बजे की गाड़ी से लखनऊ पहुंचे....सीधे 16 क्लाइड रोड गया....प्रताप मिले....बड़ी खातिर की....प्रताप की धर्मपत्नी स्वयं भोजन के समय उपस्थित थी। शाम को अमीनाबाद, चौक गया....4 जिल्दें खरीदीं।

24 सितम्बर, लखनऊ

प्रताप के लिए नोट लिखता रहा....12 बजे प्रताप से मिला, नखास से थोड़ी दूर मस्जिद के पास से रास्ता है। आधे घंटे बात कर, सामान ख़रीद, वापिस लौटा, सरकार की संक्षिप्त औरंगज़ेब....पुस्तकें ख़रीदी....

10 फरवरी, उदयपुर

....दो से साढ़े तीन बजे मोतीलालजी वोहरा के यहां मेवाड़ के राणा के पहले राजवंश की उनके खेत में घंटी (टोकरिया) मिली, उसे देखने गया....

13 फरवरी, कुशलगढ़

....9.30 बजे राजमाता सा. का बुलाना हुआ....उनसे मिलने गया। शाम को मंगलेश्वर जहां प्राचीन महादेव का मन्दिर है, देखने गया....इस स्थान पर प्राचीन नगर भी बसा हुआ मालूम देता है....

16 फरवरी, कुशलगढ़

....रावों की छतरियां देखने गया....वहां पर अखेराजजी का शिलालेख मिला जिसमें उनके आगे राजा का नाम दर्ज है और पिता का नाम, वंश और देव शरण का संवत् दिया है....

18 फरवरी, कुशलगढ़

....छतरियों पर फिर शिलालेख पढ़ने गया....मगरदा के खंडहर देखे....यह राजा मकरध्वज की राजधानी थी....

1 मार्च, अजमेर

....नौ बजे ओझाजी (गौरीशंकर ही०) से मिलने गया....ग्यारह बजे जीतमलजी (मेहता) से मिल, चित्र देखने का समय नियत किया। साढ़े पांच बजे ढाई दिन का झोपड़ा देख, चित्र देखने गये।

2 अप्रेल, जयपुर

....रिकार्ड आफिस गया....मौलवी साहब गलत रास्ते पर काम कर रहे थे। पता लगाया तो भीमसिंहजी (बनेड़ा राज्य के संस्थापक) राजकुमार बेदर-वख़्त की सेवा में स्वर्गवासी हुए....

3 अप्रेल, जयपुर रिकार्ड आफिस

....दरबार भीमसिंहजी के 9 और 17 जुलाई सन् 1694 के पत्र जो राज-कुमार बेदर-वख़्त की फौज से आए थे, पढ़े गए और 26 अगस्त को बेदर-

वख्त की फौज से समाचार आए कि भीमसिंहजी की रानी-पद्मसिंह (बीकानेर वाले) की पुत्री मना करने पर भी सती हुई....

12 अप्रेल, बृजनगर (झालावाड़)

....श्री परमानन्द पुस्तकालय गया जहां पुस्तकों का अच्छा संग्रह है....

13 अप्रेल, बृजनगर (झालावाड़)

....प्रख्यात साहित्य-सेवी गिरिधरजी नवरत्न राजगुरु से भेंट हुई....महाराजा बारह बजे पूजा करने पधारे....बाद में गिरिधरजी के घर गये....दोनों पुत्र ईश्वरलालजी, परमेश्वरलाल....तीनों पुत्रियाँ शान्ता, सुशीला और विमला तथा पौत्र योगेश्वर से भेंट हुई---सारा कुटुम्ब विद्वान और कवि है। गिरिधरजी नागर ब्राह्मण हैं और तीन-चार साल से नेत्रहीन हैं। इन्होंने 20-25 ग्रन्थ रचे हैं....4 वजे चन्द्रभागा नदी पर चन्द्रावती नगर के खंडहर देखे....पाटन के मन्दिर भी देखे....वहां से सीधे नगर के पुस्तकालय गए....

14 अप्रेल, ब्रजनगर (झालावाड़)

....शाम को साढ़े पांच वजे मऊ मैदाना के लिए प्रस्थान किया। ये खीचियों की राजपूताना में सबसे प्राचीन राजधानी थी और 1715 के लगभग इनको यहां से निकाला गया। अब भी किले के खण्डहर उनकी समृद्धि के सूचक हैं। जगतसिंह हाड़ा के देहावसान पर यह परगना बनेड़ा राज्य के संस्थापक भीमसिंह को भी औरंगजेब बादशाह ने दिया था।

6 नवम्बर ब्रजनगर, (झालावाड़)

....गागरोनगढ़ देखने गया। किलेदार सा. ने किला अन्दर से दिखाया.... किला विशाल और कारीगरी का नमूना है।

7 नवम्बर

....गागरोन के पुराने ग्रन्थ देखने गया....खींचियों के सम्बन्ध में कोई बात नहीं मिली....वहां से सीधा झालरापाटन सिटी पं. शिवशङ्करजी के यहां ग्रन्थ देखने गया। पं. गिरिधरजी शर्मा से मिला....

10 नवम्बर

....भवानीदास वैरागी, पुजारी मन्दिर पीपाजी को, राघोगढ़ इतिहास गवेषणा और साहित्य ख़रीदने के लिए पचास रुपये महीने पर मुकर्रर किया।

1944

14 मई, हरिद्वार

....प्रातःकाल उठ, गंगा पर स्नान संध्या की। वहां से लछमन भूला, स्वर्गाश्रम हो वापस हरिद्वार लौटे....लौट कर ब्रह्मकुण्ड (हर की पेड़ी) पर विधिपूर्वक पंडितजी महाराज की अस्थि का प्रक्षेपण किया और फिर कुशाव्रत घाट पर पिंड-श्राद्ध किया। इसके बाद में कई पंडों से ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त की। नई बात यह मालुम हुई—I, सं. 1753 में राजा सूरजमल काबुल के मुहिम में जाते समय हरिद्वार गए। II, राजा सुलतानसिंहजी के, सरदारसिंहजी के अलावा एक और कुंवर थे जिनका नाम उदयसिंहजी था। III, सुलतानसिंहजी ने 1770 में हरिद्वार की यात्रा की....गंगाजी की आरती देखी।

18 मई, जयपुर

साढे छः बजे मेल आने पर अजमेर के लिये रवाना हो गये। मैं किशनगढ़ पर मित्र ख़ान साहब तजमुल हुसैन से मिलने उतर गया।

10 जुलाई, बनारस

भँवरबाई को राजघाट स्कूल ले गया। वहां परीक्षा आदि करा दूसरी कक्षा में भर्ती कराया। वहाँ से लौट, गंगा स्नान कर, श्री काशी विश्वनाथजी के दर्शन करने गए....पूजा की....मणिकर्ण घाट जा, बनेड़े और राघोगढ़ के पंडे त्रिलोकीनाथ का पता लगाया....कचौड़ी गली में रहते हैं। पंडाजी बाहर थे....मुनीम से कागज़ देखे....क्रमवार नहीं थे....भोजन कर विश्वनाथजी की झांकी देख सोए।

15 जुलाई, कलकत्ता

मिस्टर लहरी के यहां 28 Elgin Road पर गया, वहीं ठहरा....साढ़े आठ बजे Sir Jadunath Sarkar से मिलने 125 Lake Terrace गए। बनेड़ा-राघोगढ़ इतिहास की बात की....

16 जुलाई, कलकत्ता

....नौ बजे इम्पीरियल पुस्तकालय गया वहां से पौने तीन बजे लौटा.... Sir Jadunath Sarkar से मिलने गया....उनके साथ बनेड़े के कई अख़बारात देखे....

18 जुलाई

....फलकूजी पर विष्णुपद समक्ष तथा अक्षय वट के नीचे गया....श्राद्ध किया....

3 अक्टूबर, दिल्ली

....आज अर्द्धाङ्गिनीजी का देहान्त तीन बजे हुआ ।

19 अक्टूबर, बनेड़ा

....आज जावद से सासुजी के अमावस्या को स्वर्गवास के समाचार आए....

16 नवम्बर, हरिद्वार

....साढ़े दस बजे के लग-भग हरकी पेड़ी ब्रह्म-कुण्ड पर सासुजी का अस्थि-प्रक्षेप कर्म किया और फिर कुशाव्रत घाट पर हवन व पिण्ड-दान दिया ।

17 नवम्बर, गढ़मुक्तेश्वर

....साढ़े सात बजे गाड़ी गढ़मुक्तेश्वर पहुँची । तांगा करके स्नान के लिए धाराजी पहुंचे । ग्यारह बजे करीब वहां से लौटे ...पंडों (बनेड़े के) की तलाश की । पहले एक पंडा निरर्थक ही अपने घर ले गया जा अकेला ही सीसोदियों का ठेकेदार बन रहा था, उसके पास गोविन्दसिंहजी का परवाना जरूर था पर हम लोगों ने उसकी अवहेलना की । उसके पश्चात् बाज़ार में मन्दिर पर पांच पंडों ने अपनी अपनी बहियें लाकर दिखाई । दो पंडों के पास बनेड़े तथा उदयपुर के काग़जात थे । कश्मीरीलाल के पास राजा सुलतानसिंहजी का सं. 1768 का पट्टा तथा 1777 के पट्टे थे । यहां पर खोज की जाय तो उपयोगी ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध हो सकती है....

18 नवम्बर, दिल्ली

....Grindlay Bank जाकर type-writer ले आए....

1945

26 जनवरी, बनेड़ा

....नौ बजे घर पहुँचा....पिताजी के दर्शन किए....पिताजी के कष्ट था....मेरे पहुंचने से उनको विश्राम मिला तथा मुझे आशीर्वाद दिया....पूज्य पिताजी का ढाई बजे स्वर्गवास हो गया । देहान्त सौम्य और शांत था । दाह संस्कार 4 से 6 बजे के बीच हुआ । पिताजी महान् योगी थे....

12 मई, राघोगढ़

....कचहरी से बारह बजे लौटा....दिन भर काम करता रहा । आज शनिवार का व्रत था । शाम को सेठ घासीलाल नीमखेड़ी वाले ने राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में पार्टी दी । सबसे सुन्दर प्रबन्ध था और बड़ी भक्ति से पार्टी की । दिन में श्रीमती रानी साहिबा ने एक फेहरिस्त भेजी, उसमें उन्होंने कई गिन्नी और मोहरें राज्याभिषेक के समय ख़र्च की और बहुत सा रुपया बांटा ।

राणा अमरसिंहजी को विदाई में क्या दिया जावे? ....इस सम्बन्ध में बुलाया। मैंने रानी साहिबा को खुले शब्दों में निवेदन किया कि इस तरह लापरवाही से खर्च करना अनुचित है और रियासत फिजूल खर्च बरदाश्त नहीं कर सकती है। उन्होंने राजासा. की सहमति से खर्च होना बतलाया और राजा सा. ने इसे स्वीकार किया। राजा सा. से उनके शराब के नशे में किए हुए वादों का उल्लेख किया और शहादत में रानी साहिबा ने स्वयं को पेश किया....दोनों के समक्ष में हुई बात स्पष्ट थी।

13 मई, राघोगढ़

....साढ़े-तीन बजे श्रीमती रानी साहिबा मिलने को पधारीं। मैंने उनको तीन उपदेश दिये। (1) अपने पति को सद्मार्ग पर लाना क्योंकि उनकी कामवासना, मदिरा पान की आदत बढ़ रही है (2) स्वयं चरित्र को उज्ज्वल करना (3) अपने पति के कार्य में सहयोग देना, उनके जीवन को सुखी बनाना। कई बातें ऐसी स्पष्ट कहीं कि उनका मुख सूज गया और बड़ी नाराज़ मालूम हुई। मैंने स्पष्ट कह दिया था कि मुझे उनकी नाराज़ी से किंचित् मात्र भी डर नहीं है। मैंने अपना कर्त्तव्य समझ उनको उपदेश दिया है।

15 मई, राघोगढ़

....कई मसलों पर अपनी राय दी—श्रीमती रानी सा. की मांग पर एक तगड़ा नोट लिखा जिसमें उनको यह बतलाया कि इस ज़माने में मोहर और गिन्नी की क्या क़ीमत है और रियासत का रुपया किस तरह उड़ाया जाता है....आगे सब बात निश्चित करने पर रुपया दिया जाया करे....

26 मई, पुष्कर

....स्नान कर संध्या की....टाट बाबू बंगाली साधु से मिलकर डेढ़ बजे अजमेर लौटे।

15 सितम्बर, गुना

....पंडितजी के पास गया....विद्या, अक्षय की कुण्डली बताई....अक्षय की कुण्डली अत्युत्तम बताई—उसकी कुण्डली के, मेरे लिए दो कुयोग बताए—एक स्त्री की मृत्यु और दूसरा....

1946

9 मार्च, बनेड़ा

शाम पाँच बजे राजाधिराज तथा युवराज सा. ने मिलने बुलाया—उन्होंने

प्रकट किया कि कुछ उमराव अधिकार छोड़ना चाहते हैं इसलिए वे भी सम्मिलित होना चाहते हैं....जागीरदारों के अन्तिम दिन आ रहे हैं।

14 मार्च, बनेड़ा

शाम को दरबार सा, युवराज सा, तथा भंवर सा. ने सलाह के लिए बुलाया—उनकी आपसी नाइत्तफाकी के बारे में साफ़ कहा।

18 अप्रेल, गुमानपुरा, डूंगरपुर

मैं डूंगरपुर दरबार से मिलने डूंगरपुर गया....दफ्तर में डेढ़ घण्टे बातें हुई.... फिर दरबार ने प्रतापगढ़ दरबार से मिलाया। उनके साथ लंच ले, ढाई बजे गुमानपुरे आया।

25 अप्रेल, डूंगरपुर

बिनौरे का भोजन बनवाया—लड्डू, गुलाब-जामुन, दही-बड़े, आइसक्रीम, बड़ी-पूरी बनाई....निमंत्रण करने किले पर गये—राजा सा. राघोगढ़, युवराज चंदिया, रा.कु. मानसिंहजी, गुमानसिंह, महाराज धीरजसिंहजी नरवर, रानी सा. बनेड़ा, युवरानी सा. बनेड़ा, राजरानी सा. सादड़ी, युवरानी चंदिया, बहुरानी सा. बनेड़ा, छोटी कुंवारी सा बनेड़ा पधारी....अच्छा जलसा रहा।

31 जुलाई, डूंगरपुर

दरबार की जनम-गांठ थी....किले पर गया। राजाधिराज सा. ने ताज़ीम प्रदान की।

9 अगस्त, डूंगरपुर,

साढ़े तीन बजे की गाड़ी से अजमेर के लिए रवाना हुए—हटूंडी पर डा. रामरक्षपाल तथा सिद्धिशंकर राय व पं. हरिभाऊ उपाध्याय भी मिल गये।

15 दिसम्बर, बनेड़ा

....आज सं. 1825 में रचा हुआ तोमर बख्तसिंह का चरित्र मिला....इसमें बनेड़े का इतिहास दिया है....भीमसिंह का लिखा है और राजा रायसिंह के क्षिप्रा युद्ध का वर्णन है। पंडितजी के पुस्तकालय में अमूल्य ग्रंथ हैं।

29 सितम्बर, उदयपुर

....राव सा. मनोहरसिंहजी बेदला होम मिनिस्टर के पास गया और उनसे कनकजी को बेल पर छोड़ने को कहा....उन्होंने कैबिनट के सम्मुख प्रस्ताव रखने को कहा....घर लौटा....विद्यापीठ वाले 'पृथ्वीराज रासो' लाए....जांच

की....कनकजी भी पेशी पर गए....मजिस्ट्रेट सा. नहीं आए तो पेशी नहीं हुई। प्रजा मण्डल के सदस्यों से मिला।

22 अक्टूबर, उदयपुर

....बारह बजे प्रो. असावा शाहपुरा प्रजा मण्डल के प्रधान परामर्श करने और पुस्तकें देखने आए....दिन भर उनसे बातें कीं।

25 अक्टूबर, उदयपुर

श्यामसुन्दरजी पुरोहित माफ़ी की मिसलें लाए।

1947

28 फरवरी, इन्दौर

....राघोगढ़ युवराज सा. का जन्म हुआ....ठीक आठ बजे जन्म हुआ। राजा सा. के पास गया....उनको बधाई दी। जन्म कुण्डली बनाई....मीन लग्न निश्चिय किया। कुण्डली के फल सुनाए, फिर युवराज सा. को देखा....रानी सा. को कुण्डली सुनाई....वहां से लौट, साढ़े तीन बजे मोटर द्वारा राघोगढ़ के लिए रवाना हुआ।

10 अगस्त, दिल्ली

....ट्रेन 8 बजे दिल्ली पहुँची....सीधे मिनर्वा होटल गये परन्तु वहां स्नान नहीं किया ...वापिस गए। वल्लभभाई पटेल और पोलिटिकल सेक्रेट्री के नाम पत्र भेजे। पोलिटिकल सेक्रेट्री का लेटर आ गया....सरदार पटेल का कोई प्रत्युत्तर नहीं आया।

11 अगस्त, दिल्ली

....सरदार पटेल के यहां से फोन आया कि कल सुबह साढ़े आठ बजे मिलेंगे....तीन बजे सेक्रेटरी मिस्टर राजेन्द्रसिंहजी रंधावा से मिलने गया।

12 अगस्त, दिल्ली

सरदार पटेल से मिलने औरंगज़ेब सड़क पर गए....दस मिनट राजा साहब से बातें कर हुक्म कि प्रधान सेक्रेटरी मि. मैनन से मिलें। वहां से लौट मि. मैनन द्वारा 3 बजे मिलने का समय नियुक्त किया।....तीन बजे मि. मैनन से नहीं मिल सके।....मि. मुन्शी मिले....केस बताया तो कहा कि 10-15 दिन बाद आवें।

7 नवम्बर, दिल्ली

....साढ़े सात बजे गाड़ी दिल्ली स्टेशन पहुँची....सीधे कोरोनेशन होटल पहुँचे। Hon ! Sir B. L. Mitter K. C. S. I. Advocate General को फोन पर मिलने का समय तय किया। उन्होंने केस बनाकर पेश करने के लिए कहा और राय की फीस 1200 मांगी।

मेरे पिता श्री

मेवाड़ तथा बनेड़ा के अनेक परिवारों में पिता को 'काकासा' कहने की परम्परा है। तदनुसार मैं तथा मेरे भाई-बहन भी अपने पिताश्री को 'काकासा' के सम्बोधन से सम्बोधित करते थे। अतः इस लेख में भी 'काकासा' के सम्बोधन से उनका उल्लेख करूंगा।

मेरी डेढ़ वर्ष की अवस्था में मेरी माता माधुरीजी का देहान्त हो गया। उसी समय से 'काकासा' मेरे पिता व माता सम्मिलित रूप से हो गये। काकासा की डायरी से पता चलता है कि सन् 1944 में मुझे तथा मेरी माता को वे अजमेर, आगरा, दिल्ली, बड़ौत (मेरठ), हरिद्वार, ऋषिकेश, स्वर्गाश्रम, लक्ष्मण झूला व जयपुर की यात्रा पर ले गए थे। उस समय की मुझे कोई स्मृति नहीं है।

अक्टूबर सन् 1944 से सन् 1947 तक पहले कुछ महीने मेरे दादा रामनाथजी व बाद में मेरी बड़ी बहन शतरूपाजी ने मुझे संभाला। इसी अवधि में मुझे याद है कि एक बार काकासा अपने कमरे के बाहर रखे तख्त पर मुझसे खेलते-खेलते ही नहाने चले गए तो इस पर मैं रोने लगा। वे निर्वस्त्र साबुन लगे शरीर से ही स्नानागार से तुरन्त मुझे मनाने बाहर निकल आए। यही उनकी पहली स्मृति मुझे है।

सन् 47 में शतरूपाजी का विवाह हो गया। उसके बाद सन् 47 से सन् 1952 तक तो मैं निरन्तर काकासा के सानिध्य में रहा। उन्होंने मुझे अपने पास रखकर स्वयं पढ़ाया, स्कूल में नहीं डाला। मुझे रामायण, महाभारत व पुराणों की कथाएं भी सुनाते थे तथा संस्कृत व अंग्रेजी का अभ्यास कराते थे। विशिष्ट व्यक्तियों के सामने मुझसे कथाएं दोहराने को कहते थे तथा संस्कृत के श्लोक व अंग्रेजी की कविताएं पढ़वाते थे। इसके फलस्वरूप मेरे बारे में यह मिथ्या धारणा फैल गई थी कि मुझे फ्रेंच आदि कई विदेशी भाषाओं का ज्ञान है। इसी समय राजश्री-फिल्मस के स्वामी श्री ताराचन्द बड़जातिया के पिता श्री मोहनलालजी ने काकासा को लिखे एक पत्र में मेरे संस्कृत ज्ञान की प्रशंसा की थी।

बचपन में बनेड़ा में मुझे सन् 1949 में एक बार बहुत तेज ज्वर चढ़ गया था तथा सन्निपात के प्रभाव में बहकी-बहकी बातें करने लगा। काकासा को राघोगढ़ से बुलाया गया। मुझे भीलवाड़ा अस्पताल में कोई दो महीने से अधिक रहना पड़ा था। काकासा मेरे साथ रहे। मेरी सेवा शुश्रूषा की। मैं बिगड़े

मियादी बुखार से पीड़ित था। स्वस्थ होने पर काकासा ने अजमेर से नियमित रूप से अंगूर भिजवाने का प्रबन्ध किया ताकि मैं शीघ्र खोई शक्ति को प्राप्त कर सकूं।

सन् 52 से मार्च 56 तक मैं बनेड़ा पढ़ा। काकासा हर महीने मुझे संभालने आते थे। प्रति सप्ताह मुझे व मेरे ज्येष्ठ पिता पं. शिवनारायणजी जिन्हें हम बाबूसा कहते थे, को पत्र लिखते थे। मेरे लिए खाना बनाने तथा देखभाल को मेरी सबसे बड़ी बहन सुनिआजी को तथा उनके इन्दौर चले जाने पर हमारी एक रिश्तेदार जग्गोबाई को बनेड़ा में रखा था। छुट्टियों में मैं राघोगढ़ चला जाता था।

जुलाई 56 से अप्रेल 58 तक मैं जोधपुर तथा जुलाई 58 से जयपुर में पढ़ता रहा। इस अवधि में मुझे संभालने हर दूसरे-तीसरे महीने आते रहते थे। छुट्टियों में मैं राघोगढ़ जाता ही रहता था। वहां से वे जहां भी जाते, मुझे यात्रा में साथ ले जाते थे।

राघोगढ़ में मैं सदा उनके साथ रहता था। शाम को वे जब भ्रमण को निकलते, मैं भी उनके साथ रहता था। यहां यह उल्लेख करना चाहूँगा कि बनेड़ा में भी मुझे साथ घूमने ले जाते थे। मुझे याद है कि धाराधर मोराधर के पहाड़ों से जड़ी-बूटियां लाने से एक दिन पहले उनकी अक्षत रोली तथा ताम्बे का पैसा भेंट कर विधिवत् पूजा कर उन्हें निमंत्रण दे आते थे। राघोगढ़ दुर्ग के चारों ओर सघन प्राकृतिक दृश्य था तथा राघोगढ़ राज्य में भी कई रमणीक स्थल थे। इन सब जंगलों में उनके साथ जाता था। वहां के जंगलों में लगे करौंदों के फूलों की महक अब भी मेरे को सुवासित करती रहती है। राघोगढ़ में जंगली जानवर भी उनके साथ खूब देखे। सड़क पर जब जीप में जा रहे होते थे तथा कोई जंगली जानवर उस समय सड़क पार करता तो राजा सा. बलभद्रसिंहजी व काकासा जानवर के दाये व बायें आने से शकुन-अपशकुन का विचार करते थे। प्रायः जीप या स्टेशन वेगन को राजा साहब चलाते थे तथा काकासा उनके साथ की आगे की सीट पर बैठते थे तथा मैं उनकी गोद में बैठता था। काकासा ने मेरा पालन-पोषण एक राजकुमार की तरह किया था और वे स्वयं इस बात का उल्लेख कभी-कभी कर देते थे।

काकासा ने यात्राएं बहुत कीं। उनकी यात्राएं बहुउद्देशीय होती थीं....यथा मित्रों से मिलना, परिवारजनों, संबंधियों एवं मित्रों के सुख-दुःख में सम्मिलित होना, विवाह तथा मृत्यु के अवसरों पर सामाजिक कर्त्तव्य का पालन, राजाओं के संरक्षक तथा कानूनी सलाहकार का दायित्व निभाना, ऐतिहासिक वस्तुओं को देखना, उनका संग्रह करना, तीर्थाटन एवं देशाटन करना आदि। मैंने उनके

साथ दिल्ली, बम्बई, जयपुर, लखनऊ, नैनीताल, आगरा, फतेहपुर, सीकरी, मथुरा, वृन्दावन, इन्दौर, ग्वालियर, रतलाम, उज्जैन, पंढरपुर, औरंगाबाद, अजन्ता एलोरा, अजमेर, इन्दौर, कोटा की अनेक यात्राएँ की। गागरोन, मउमैदाना, नरवर व ग्वालियर के इतिहास प्रसिद्ध दुर्ग देखे। यात्राओं में कपड़े रखने का एक काला बक्स, फलों की टोकरी, बिस्तर-बन्द, किताबों का बक्स, तथा पानी का बादला तो प्रायः हमेशा साथ रहता था। इसके अलावा और छोटे मोटे नग हो जाते थे। सफ़र में अधिक सामान होने से असुविधा अवश्य होती थी। सफ़र में रेल्वे स्टेशन पर ही स्नान कर लेते थे।

काकासा बहुत स्वाभिमानी एवं निर्भीक थे। राजाओं से वे बराबरी से बात करते थे। जो राजा उनसे आयु में छोटे थे उन्हें वे पुत्रवत् मानते थे।

वे राजाओं में रहे किन्तु सामान्य से सामान्य व्यक्ति से प्रेम भरा मानवीय व्यवहार करते थे।

मुझे याद है कि सामान्य कार्यकर्ताओं को भी जीप में अपने साथ आगे की सीट पर बिठा लेते थे। रुडयार्ड किपलिंग की 'If' (इफ) कविता की निम्न पंक्तियाँ उन पर पूर्ण रूप से लागू होती थी।

If you can talk with crowds & keep your virtue or walk with Kings—nor lose the common touch.

काका साहब हँसमुख अवश्य थे किन्तु क्रोधित होने में भी उन्हें समय नहीं लगता था। क्रोध में जोर-जोर से फटकारने लगते थे, यद्यपि उनका यह क्षणिक रोष किसी गलत बात के विरुद्ध होता था, किसी व्यक्ति विशेष के विरुद्ध नहीं।

उनके हृदय में किसी के प्रति दुराग्रह की भावना नहीं रहती थी। गुना के एक कांग्रेसी नेता इनकी निन्दा करते थे परन्तु काकासा हमेशा उनसे हँसकर मिलते थे एवं परिहास में उन्हें अपना एक कपूत बेटा कहकर पुकारते थे।

प्राचीन वस्तुओं के संग्रह का उन्हें बेहद शौक था। घण्टों बिना किसी झुंझलाहट के कबाड़ियों के यहां बड़ी सूक्ष्मता से प्राचीन पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों को खोजते रहते थे। उन्हें प्राप्त कर बनेड़ा तथा राघोगढ़ में बिखरी पाण्डुलिपियों को मुझे तथा अन्य उपस्थित व्यक्तियों को साथ बिठाकर ग्रन्थों को व्यवस्थित कराते थे।

एक बार किसी से संबंध बना लेने पर वे आजीवन उसे निभाते थे। अपने इसी गुण के कारण उन्होंने अपनी सांसारिक महत्त्वाकांक्षाओं को गौण रखा। राजा बलभद्रसिंहजी ने मुझ से कहा था कि सन् 1936 में इंग्लैंड से लौटने पर टाटा ग्रुप ने उन्हें 5000 रु. मासिक पर अपना कानूनी सलाहकार नियुक्त करना चाहा था तथा स्वतंत्र प्रेक्टिस करने की भी छूट देने का आश्वासन दिया था परन्तु राजा-महाराजाओं के साथ अपने पुश्तैनी संबंधों को बनाए रखने को उन्होंने प्राथमिकता दी और प्रलोभन को ठुकरा दिया। अपनी योग्यता के आधार पर यदि वे कानूनी प्रेक्टिस करते तो देश के नामी वकीलों में उनकी गणना की जाती एवं उच्च अथवा संघीय न्यायालयों के न्यायाधीश होना तो निश्चित था। इसी प्रकार किसी बड़ी रियासत में उच्च पद प्राप्त करने की भी उनकी लालसा नहीं रही और बनेड़ा तथा राघोगढ़ सदृश छोटी रियासतों का उन्होंने साथ नहीं छोड़ा। इस प्रसंग में कई बार मेरा उनका विवाद भी हुआ था कि वे राजाओं के लिए अत्यधिक परिश्रम कर अपने स्वास्थ्य की अवहेलना कर रहे हैं....यहाँ तक कि मैंने उनको बचकाना किस्म की धमकी भी दी थी कि यदि वे मेरी बात मानकर राघोगढ़ नहीं छोड़ेंगे तो मैं इस संसार को ही छोड़ दूंगा। मेरी बात उनको लगी और उन्होंने राघोगढ़ छोड़ने का आश्वासन दिया। उस समय लिखे पत्र में मुझे उन्होंने लिखा कि यदि मैंने संसार छोड़ा तो यह उनके लिए प्राण लेवा आघात होगा। उनके परम मित्र पं. विश्वनाथजी शास्त्री ने भी मेरी भावनाओं को समझने का उनसे अनुरोध किया।

काकासा के जीवन का स्वर्णिम काल इंग्लैंड में व्यतीत हुआ था। वहां के प्रबुद्ध वर्ग से उनकी मित्रता रही। इंग्लैंड के कई संसद-सदस्य यथा सर फिलिप डासेन तथा प्रसिद्ध न्यायविद् सर विलियम होल्डवर्थ आदि उनके घनिष्ठ मित्रों में थे। इंग्लैंड में उनकी सच्चरित्रता तथा भारतीय संस्कृति के ज्ञान की धाक जमी हुई थी। अनेक अंग्रेज़ उनके शिष्य हो गए थे। भारतीय चित्रकला आदि के सम्बन्ध में वे उनसे जानकारी प्राप्त करते थे। यदि वे भारतवर्ष नहीं लौटते तो विश्व में अपना स्थान अवश्य बना लेते। डॉ. कोलम्बस ने उनके देहावसान पर मुझे लिखा था कि:—

"He was a deeply religious and good man and you should feel proud to be his son."

इंग्लैड के अपने दो अनुभव मुझे सुनाये थे। एक बार इंग्लैंड के एक कर्नल ने भारत की निन्दा की तो उन्होंने उसे duel द्वन्द्व के लिए निमंत्रित किया।

द्वन्द्व में उसे चित कर दिया तो कर्नल एकदम चिल्लाया कि अब भारत को Home Rule यानि स्वायत्तता दे देनी चाहिए। दूसरी घटना यह थी कि एक अंग्रेज़ महिला ने कहा कि भारतीय पुरुष बहुत कामी होते हैं। इस पर काकासा ने उन्हें बड़े आदर से कहा कि जो सच्चे भारतीय हैं वे एक निर्वस्त्र स्त्री की ओर आंखे उठाकर भी नहीं देखेंगे। काकासा का तात्पर्य था कि सच्चे भारतीय सच्चरित्र होते हैं। इंग्लैंड में भारतीय विद्यार्थियों की भी उन्होंने भरपूर सहायता की थी। छोटा उदयपुर रियासत के कुमार पराक्रमसिंह जो रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात् I. A. S. में आ गए थे, वे अपने पत्र दिनांक 26 जून 1936 में काकासा को लिखते हैं :—

"You have been indeed the God father of the Indian students here. I may be allowed to say that no man has done so much for the Indian students here as you have done."

इंग्लैंड में उनके प्रशंसक मित्रों में—प्रफुल्लचन्द्र भंजदेव बस्तर, उनकी महारानी, कांकेर की महारानी. महाराजा नगेन्द्रसिंह I C S., कुमार पराक्रमसिंह चौहान, कुमार नरेन्द्रसिंह महीदा, कुमार हिम्मतसिंह, कुमार यशवंतसिंह मानसा, प्रतापसिंह कुचामन, रावत संग्रामसिंह सामोद, पराक्रम बेन भिजवा, के.डी. ढोलकिया, सरदार अर्जुनसिंह, राजेन्द्रसिंह रंधावा, मोहिन्दरसिंह रंधावा, राव बहादुर जी. आर. वर्वे दीवान साँगली, एम. पी. श्रीवास्तव, डॉ. तुलपुले, गजेन्द्रसिंह कुनाड़ी, डॉ. कटियाल, सी.बी. पटेल, डी.सी. सेठिया, महारानी नरसिंहगढ़, रहमान, श्रीमती जामखंडी तथा सुश्री धर्मशीला। अंग्रेज़ मित्रों में प्रमुख थे—डॉ. कोलम्बस, प्रो. सेन, सर लिंडन मैकेंज़ी, सर थामस एडलसटन एम.पी., सर फिलिस डॉसन, एम.पी. कैथरीन तथा रौलेन्ड कैनस्टर, प्रो. विलियम हाल्डसवर्थ प्रो. Fitzgerald, प्रो. Wortley, Prof Smally Baker, Rev. ओल्ड बरनाल्ड, केप्टन स्टीफेन, जी. मेनले, मि. मिटन, बेरिस्टर ग्राइम डेक्सन, बैरिस्टर विल्सन, बैरिस्टर एडी प्रोफेसर होल्डन आदि थे। उनका सर स्टेफर्ड क्रिप्स से भी परिचय था। डॉ. कोलम्बस तथा सर लिन्डन मैकेंज़ी से तो इन्होने जीवन भर सम्पर्क बनाये रखा। जब राघोगढ़ राजा साहब इंग्लैंड गये तो काकासा ने डा. कोलम्बस तथा सर लिन्डन मैकेंज़ी को परिचय पत्र लिखकर दिये। अपने अंगरेज़ मित्रों को चाय-पान अथवा भोजन पर वे निमंत्रित करते रहते थे तथा उनके यहां भी इसी उद्देश्य से जाते थे। कृष्ण मेनन उनके साथ लिंकन्स इन में थे। लंदन प्रवास के दौरान सर तेज बहादुर सप्रू से भी उनकी भेंटे हुई थीं। लंदन में रहते उन्होंने 1935 एक्ट के तहत कई राज्यों का Instrument of Accession संबंधी मसविदा तैयार किया था तथा बस्तर का मुकदमा लड़ा था।

काकासा त्यागी अवश्य थे किन्तु विरक्त नहीं। उन्होंने यह महसूस किया था कि छोटे-छोटे राज्यों के कार्यों में उलझ कर मैंने व्यर्थ में अपना जीवन नष्ट किया। इस बात का उल्लेख उन्होंने अपनी वसीयत में भी किया है।

प्रत्येक की सहायता करना वे अपना परमधर्म समझते थे। जाति अथवा धर्म के नाम पर वे किसी से भेद नहीं करते थे। अनेक मुसलमान भाइयों, अल्प संख्यकों एवं कमज़ोर वर्ग के लोगों को वे राघोगढ़ तथा अन्यत्र ले गए तथा उन्हें नौकरियाँ दिलवाईं। बनेड़ा के एक तम्बोली परिवार के लड़के को तथा राघोगढ़ के एक हिन्दू सिलावट परिवार के लड़के को पढ़ा लिखा कर चिकित्सक बनवाया। संस्कृत का निम्न श्लोक उनके व्यक्तित्व पर पूरी तरह लागू होता है :—

नत्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनर्भवम्
कामये दुःखतप्तानां
प्राणिनामार्तिनाशनम्

(मुझे संसार का राज्य नहीं चाहिए—स्वर्ग भी नहीं, मोक्ष भी नहीं, मैं तो केवल दुःखी व्यक्तियों के दुःख दूर करने की आकांक्षा रखता हूँ)

काकासा अपने पिता के प्रति असीम श्रद्धा रखते थे–यहाँ तक कि उनके द्वारा प्रचलित एक श्लोक को प्रत्येक पारिवारिक समारोह, विवाह आदि की पत्रिकाओं में उद्धृत करते थे :—

कार्य्यं स्वकीयं हृदये विदित्वा, कृत्वानुकम्पां मयि माननीयाः।
सुहृद्वरैर्वंशजनैश्च सार्द्धं, कुर्वन्तु पादार्पणमत्र विज्ञाः॥

दीपावली, क्रिसमस तथा नव-वर्ष के उपलक्ष्य में भेजे जाने वाले शुभ-कामनाओं के कार्डों पर युवावस्था में तो निम्न संदेश लिखते थे :—

"Look upward and onward"--कार्ड के ऊपर अपना मोनोग्राम भी छपवाते थे–प्रौढ़ावस्था में कार्ड के ऊपर अथर्ववेद के एक श्लोक का अनुवाद छपवाते थे। वह निम्न प्रकार है :—

"May all betide us good for body mind and soul. May we live long to see many a day of active life" Atharva Ved 1.4.4.

सन् 1938 में राघोगढ़ के जंगल में एक चमकीला पत्थर पाया गया था उसको काटने व तराशने पर उसमें प्राकृतिक ॐ लिखा पाया गया। इसकी

प्राण-प्रतिष्ठा करवाकर उन्होने इसे पूजा में रख लिया और प्रतिदिन उसका जल से अभिषेक कर पूजा करते थे। पुरुष सूक्त तथा सुन्दर काण्ड का पाठ व "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" का जप करते थे। कभी-कभी महिम्नस्तोत्र का पाठ भी करते थे । पूजा के समय पीताम्वर पहनते थे। पूजा का कोई निश्चित समय नहीं था। बनेड़ा में बचपन में सायंकाल के समय उनके कमरे के छत पर घूमते-घूमते 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय:' 'ॐ नम: शिवाय' गायत्री-मंत्र तथा अन्य कई मंत्रों का मुझसे जप करवाते थे। रक्षा बन्धन व ऋषि पंचमी के पर्वों पर यथा संभव बनेड़ा आते थे। श्रावणी में तर्पण आदि कर नगर के बाहर स्थित कुण्ड से अन्य ब्राह्मणों के साथ शिव महिम्न स्तोत्र का पाठ करते हुए सिद्धेश्वर महादेव के मन्दिर तक आते थे। वहां आरती कर फिर घर आते थे।

अपनी स्वयं की माता के अलावा उन्होंने तीन अन्य महिलाओं को माता स्वरूप मान रखा था—इनमें उनकी बड़ी माता पं.नगजीरामजी की धर्मपत्नी हंसा बाई, उनके प्राध्यापक प्रो. लालजी श्रीवास्तव की धर्मपत्नी तथा सावित्री गर्ल्स कालेज अजमेर की संस्थापिका श्रीमती रामप्यारी चंद्रिका तथा रानी चन्द्रकांता कुमारी बनेड़ा, धर्मपत्नी राजाधिराज अमरसिंह बनेड़ा थीं। उक्त तीनों महिलाएँ भी उनको अपना धर्मपुत्र मानती थीं।

अपने पुत्र व पुत्रियों के अलावा अपने भतीजे, भतीजियों, भांजे, भांजियों, विशेषकर अपने भतीजे प्रो. सत्यदेवजी, युवराज प्रतापसिंह बनेड़ा के पांचों पुत्र-पुत्रियों, राघोगढ़ राजा बलभद्रसिंह तथा उनकी पत्नी अपर्णाकुमारी को भी वे अपनी सन्तान तुल्य समझते थे।

मेरी माता की असामयिक मृत्यु, मेरे भाई विद्याजी को अपने अनुरूप न पाने, अपनी अपूर्ण महत्त्वाकाक्षाओं की पूर्ति मेरे में प्राप्त करने की इच्छा तथा अपने नैसर्गिक व स्वाभाविक स्नेही स्वभाववश मेरे पर काकासा की अत्यधिक अनुकम्पा थी।

सन् 1960 में मेरा ऑपरेशन इन्दौर हुआ तो मेरे पास से मेरे स्वस्थ न होने तक वे हिले भी नहीं तथा रात दिन साथ रहे। जब आपरेशन में अधिक समय लग गया तो एक दम घबरा गये—यद्यपि यह उनके स्वभाव के विरुद्ध था परन्तु यह मेरे प्रति उनके स्नेह और करुणा का द्योतक था। मुझे हमेशा सद्-उपदेश देते रहते थे। लार्ड बेकन को बहुधा उद्धृत करते रहते थे। मैं बहुत पढ़ता था किन्तु लिखने का अभ्यास नहीं करता था। मेरा अध्ययन विस्तृत होता था किन्तु गहन नहीं—इस कारण मैं परीक्षाओं में विशेष सफलता नहीं

प्राप्त कर पाता था—इस परिस्थिति में वे मुझे वेकन के निवन्धों से कुछ अंश उद्धृत कर प्रेरित करते रहते थे—वे अंश हैं :—

1. Some books are to be tasted others to be swallowed & some few to be chewed & digested

2 Reading makes a free man, conference a ready man and writing an exact man.

जव उन्होंने भारतीय कला भवन को सुन्दर प्राचीन चित्र भेंट किए तव मेरी अल्पायु ही थी किन्तु उन्होंने रायकृष्णदासजी को यह सूचित किया था कि यदि चित्रों को प्रकाशित किया जाय तो उनकी मृत्यु के वाद चित्रों की मुद्रित प्रतियाँ मुझे दी जांय।

दिसम्बर 61 में अस्वस्थ होने पर मेरे अध्ययन में विघ्न पड़ जाने से मुझे सूचना भी न दी—किन्तु मुझे किसी तरह पता लग गया और मैं राघोगढ़ पहुँच गया तथा मेरे ज़ोर देने पर इन्दौर इलाज कराने के लिए सहमत हो गये। जव इन्दौर के लिए राघोगढ़ दुर्ग से स्टेशन वेगन में लेटे हुए वाहर निकले तो अनेक नागरिक विदा करने एकत्र हुए तथा सड़क के दोनों ओर अनेक लोग खड़े थे। उनसे वात करते वे कह रहे थे कि मैं स्वस्थ हूँ पर अक्षय के ज़ोर देने के कारण जांच के लिए जा रहे हैं और शीघ्र ही लौटेंगे परन्तु राघोगढ़ कभी नहीं लौटे। वह भाव विह्वल दृश्य अभी भी मेरी स्मृति में अमिट हैं। इन्दौर से कुछ दिन वाद ही उन्होंने मुझे अध्ययन के लिए जयपुर विदा किया तथा उनकी आंखों से अश्रु गिरते देख हृदय विह्वल हो गया। उस अस्वस्थता के बीच में वे एक वार अजमेर आये तो मैं उनसे मिलने गया। यही मेरी उनसे अंतिम भेंट थी उस समय उनका स्वास्थ्य गिर रहा था—मन से कमज़ोर हो गए थे—शरीर पीला पड़ गया था पर यह आशा नहीं थी कि हमें छोड़ जायेंगे। 11मार्च को तार आया कि उन्हें वनेड़ा लाया जा रहा है। मैं तथा मेरे बड़े भाई विद्याजी तुरन्त भीलवाड़ा पहुँचे। वहां रेल्वे फाटक के पास ज्यों ही मैंने उनकी कार का दरवाज़ा खोल काकासा पुकारा,उसी क्षण उनका देहांत हो गया। जैसे वे मेरे से मिलने की ही प्रतीक्षा कर रहे थे। वीमारी में उनके साथ मेरे ज्येष्ठ पिता श्री शिवनारायणजी, फूफा रामचन्द्रजी, वड़ी वहनें, भाणजे जगदीश व सत्यनारायण, राघोगढ़ के राजा वलभद्रसिंह तथा उनकी रानी साहवा व डॉ. शंकरलाल थे। मुझे वावू साहव ने वतलाया कि जव काका साहव को यह भान हो गया कि उनका अंत निकट है तो उन्होंने संसारिक वातें करना त्याग दिया तथा मौन रहकर ईश्वर भजन करने लगे। जन्मभूमि वनेड़ा से इतना मोह था कि वावू साहव के इस प्रस्ताव

को कि अंतिम समय पास के तीर्थ स्थान ओंकारेश्वर या उज्जैन में वितायें तो उन्होंने ठुकरा दिया तथा बनेड़ा के लिए रवाना हो गए ।

उनके देहांत ने मुझे निर्जीव कर दिया—यह बात हमेशा कचोटती रहती है कि मैं अभागा उनकी सेवा नहीं कर सका और उनकी अनेक आकांक्षाओं में से एक की भी पूर्ति नहीं कर सका। अस्वस्थता की अवस्था में भी वे मुझे उच्च शिक्षा हेतु इंग्लैंड भेजने के लिए पत्र-व्यवहार कर रहे थे—विधि का विधान विचित्र है।

उनकी इच्छाओं के अनुरूप मैंने उनके द्वारा संगृहीत समस्त प्राचीन चित्रों को उदयपुर के राजकीय संग्रहालय एवं पाण्डुलिपियां राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्टान, जोधपुर को भेंट कर दीं। भेंट की हुई पाण्डुलिपियां प्रमुख तौर से संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, राजस्थानी व मराठी भाषाओं में हैं। कुछ फ़ारसी फ़रमान हैं तथा कुछ पुस्तकें उर्दू में भी हैं। पाण्डुलिपियाँ वेद, वेदांग, धर्म, दर्शन, मंत्र, तंत्र, ज्योतिष, कोष, राजनीति, संगीत, शिल्प-वास्तु, आयुर्वेद तथा साहित्यिक सभी प्रकार के विषयों और विधाओं से संबंधित हैं। वेद और वैदिक वाङ्मय में 1523 वि.सं. की शतपथ ब्राह्मण की प्रतिलिपि, सं. 1506 में प्रतिलिपित कुण्ड-मण्डप विधि, प्रवन्ध-दीप, और्ध्व वैदिक-विधि, नवरात्र पद्धति, संस्कार विधि (श्री वास्तु विवेकिनी टीका), गिरिधर कृत संस्कार कौमुदी तथा शांखायन शाखा से संबधित सौत्रामणि- मैत्रा वरुण प्रयोग, पुराण साहित्य में गणेश पुराण तथा पूतना वध आख्यान (मराठी अनुवाद सहित), दार्शनिक साहित्य में हरिहराद्वैत, निम्बार्क-शांकराद्वैत सिद्धि, अमृतराय भट्ट का वेदान्त सार पद्यमाला, तन्त्र साहित्य में महीधर नागर कृत मन्त्र महोदधि (नौका टीका सहित), जैन साहित्य में समन्त भद्र स्वामी कृत और विद्यानन्द की अलंकार टीका से युक्त्यानुशासन तथा समन्त भद्रस्वामी द्वारा रचित बृहद् शांति स्तवन अत्यधिक महत्त्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार संस्कृत काव्यों में संक्षेपावचूरि टीका सहित शिशुपालवध का अपना महत्त्व है जिसमें संभवतः पहली बार इस रहस्य का उद्‌घाटन होता है कि माघ के पिता श्रृंगदत्त थे। अमरुक शतक की सूर्यदेव विरचित श्रृंगार-तरंगिणी टीका, आभाणक शतक, संस्कृत तथा हिन्दी भाषांतर युक्त कवि कुशल देव विरचित उम्मेदसिंह चरित (मूल प्रति), एकोत्तरशत (कत्रोरशत) भाषा, भाव दीपिका टीका, भोलानाथ कृत कृष्णलीला सटीक गोवर्द्धनोक्ति शतक, धनाराम पाठक कृत भर्तृहरि नीति शतक टीका, महाराजा माधव चरित्र, वैजनाथ शर्मा कृत वैजनाथ काव्य रत्नावली, सरदार नृप विलास काव्य तथा त्रिलोचन भट्टाचार्य कृत नीति कुसुमाञ्जलि जैसी रचनाएं भी भेंट किए संग्रह में हैं।

व्याकरण, कोश तथा छंद साहित्य में कवि रहस्य (टिप्पण सहित),

जगन्नाथ शर्मा कृत वासुदेवकवि रहस्य, षट्कारक-व्यवहार-परिच्छेद (महा-महोपाध्याय रत्न पाणि कृत), एकाक्षरी कोश, धनञ्जय नाम माला, वृत्त पादप, वृत्त-रत्नाकर (समय सुन्दर कृत टीका सहित), वृत्त रत्नाकर(श्री कण्ठ भास्कर कृत टीका युक्त), सरस्वती तीर्थ विरचित काव्य प्रकाश टीका तथा आयुर्वेद ग्रन्थों के शतशः ग्रन्थों में तत्व भार्गव (वररुचि कृत), राम शर्मा प्रणीत रोग विनिश्चय टीका और ज्योतिष परक साहित्य में वेदांगरायकृत गिरिधरानन्द, जीवनाथ कृत भाव-प्रकाश और संवत् 1715 वि. से 1964 वि. तक के लगभग 800 पंचांगों का संग्रह इस संकलन के महत्त्व को दर्शाते हैं।

हिन्दी-राजस्थानी तथा इतर भाषा के विरचित साहित्य का भी अपना एक मनोरम स्थान है। इस साहित्य में भी संस्कृत साहित्य की भांति विविध विषयों के ग्रन्थ हैं। मासिक और वार्षिक वैष्णव पर्वोत्सवों पर प्रकाश डालने वाले ग्रन्थ, आयुर्वेद, ज्योतिष, इतिहास, पुराण, ख्यात, बात, वंशावली, छन्द शास्त्र, भक्ति साहित्य, वर्णक काव्य तथा पत्र लेखन विषयक साहित्य इस संग्रह की प्रमुख विशेषता हैं।

हिन्दी साहित्य के प्रसिद्ध कवि चैनराम द्वारा प्रणीत भारतसार चंद्रिका, अद्भुत राम-चरित्र, दशकुमार नाटक भाषा, सांगानेर निवासी रामचन्द्र दुबे (उपनाम चन्द्र कवि) कृत सवाई जयसिंह चरित्र, बुद्धिविलास, अंक-बत्तीसी, प्राणनाथ कृत विराट चरितामृत (शिव पुराण गत), कविकलानिधि कृत संभरी युद्ध, राज बुधसिंह कृत शेरप्रकाश, प्रताप कवि कृत जयसिंह प्रकाश, कायस्थ-गोत्र-विवरण, महाराव हनुमन्तसिंह कृत पातशाही वृतान्त, हेमरत्न कृत गोरा बादल चरित, जटमल प्रणीत गोराबादल चरित चौपई, खिड़िया जगा कृत रतन-रासो व राठौड़ रतनसिंह महेश दासोतरी वचनिका, राजाधिराज विजयसिंह का गुणराज ग्रन्थ, जोधराज कृत हम्मीर हठ, करणीदान कृत सूरज प्रकाश, नरहरिदास बारहठ कृत अवतारचरित, सायाँ भूला विरचित नाग-दमण उल्लेखनीय हैं जिनमें से अनेक रचनाएँ अज्ञात कवियों की एवं दुर्लभ है। कुछेक रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं पर शोधार्थियों के लिए इन सबका फिर भी महत्त्व बना हुआ है।

इन ग्रन्थों में राजा-महाराजाओं और शूर सामंतों तथा प्रसिद्ध पुरुषों की प्रशंसा में लिखे गए सैकड़ों डिंगल गीत, कवित्त, दोहे और प्रशस्तियों का भी बड़ा अनूठा संग्रह है।

मेवाड़ के सीसोदियों, राठौड़ों, देवड़ा, हाडा तथा खीची चौहानों, सोलंकियों आदि से संबंधित वंशावलियों तथा गोत्राचार, महाजनों की जातियों

का वर्णन, नगर-वर्णनात्मक गज़लों तथा फल-फूल, पक्षी, पकवान, अश्व आदि विषयक चितावणियों या कुतूहलों का संकलन भी इस संग्रह की शोभा है।

संत साहित्य, भक्ति साहित्य तथा शृंगार परक रीति साहित्य से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ इस संग्रह में विद्यमान हैं। छंद चिंतामणि (कृष्ण कवि प्रणीत), छंद-रत्नावली (हरिरामदास निरंजनी), छन्दसार (नारायणदास वैष्णव), सद सिणगार पिंगल जैसे छंद शास्त्रीय ग्रन्थ तथा अमृत सागर, अश्व-शास्त्र, काल ज्ञान (रस रत्न सागर), यन्त्रराजकरण भाषा, मेघमाल संवत्-सार जैसे आयुर्वेद, पशु-विज्ञान तथा ज्योतिष विज्ञान परक साहित्य, सुरतरंग जैसे संगीत शास्त्रीय ग्रन्थ और स्त्री, पुरुष, मित्र, गुरु, पिता, पुत्र आदि के परस्पर पत्र-व्यवहार से संबंधित विधि विधान दर्शाने वाली रचनाएँ भी इस संग्रह में मिलेंगी।

गुटकों में अज्ञात व अप्रकाशित कवियों की कविताएँ, कवित्त, सवैया, दोहा, चौपाई, सोरठा तथा छंद हैं जो प्रायः अन्यत्र देखने को नहीं मिलते। जिज्ञासु विद्वान इनका लाभ उठा सकते हैं।

ग्रन्थों के अलावा इस संग्रह में बनेड़ा, कुचामण व राघोगढ़ सम्बन्धी अनेक दस्तावेज हैं जो तत्कालीन, राजनीतिक, आर्थिक, प्रशासनिक, व्यापारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों पर प्रकाश डालते हैं। कुछ चित्रित ग्रंथ हैं। ये सब ऐतिहासिक-सांस्कृतिक व चित्रकला के शोध में लाभकारी होंगे।

सम्पूर्ण संग्रह में सबसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ गोरा-बादल पर है। गोरा-बादल 14वीं शताब्दी में गहलोत वंश के प्रसिद्ध वीर थे जिन्होंने मेवाड़ के महाराणा रतनसिंह को अलाउद्दीन की क़ैद से मुक्त कराने तथा पद्मिनी के पातिव्रत्य की रक्षा के लिए प्राण त्याग दिए थे। यह ग्रन्थ राजस्थानी भाषा की प्राचीन रचना है। इसकी रचना हेमरतन ने महाराणा प्रताप के मन्त्री भामाशाह के अनुज ताराचन्द के अनुरोध पर सादड़ी (मेवाड़) में की थी। इसमें कई घटनाएँ कवि कल्पित ज्ञात होती हैं परन्तु यह मेवाड़ के मंत्रियों के संकेत पर लिखा गया था अतः इसे ऐतिहासिक ग्रन्थ कहना अनुचित न होगा तथापि इसमें लिखी घटनाओं पर आगे गहन शोध की आवश्यकता है।

काकासा केवल संग्रह मात्र नहीं करते थे अपितु आयुर्वेद तथा ज्योतिष का व्यावहारिक ज्ञान भी रखते थे। शहतूत, अनार, नींबू, नारंगी के शरबत मुरब्बे, गुलकंद, कमल पाक तथा आयुर्वेद की अन्य औषधियां अपने तथा अपने

परिवार के सदस्यों तथा मित्रों के लिए अपने निरीक्षण में बनवाते थे। कमल-पाक मुझे बहुत प्रिय था। खगोल-शास्त्र में भी उनकी रुचि थी। मुझे छत पर टहलते हुए नक्षत्रों का ज्ञान कराते रहते थे। काकासा बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। दुर्भाग्य यही रहा कि राजाओं के कार्य में अपनी व्यस्तताओं के कारण वे अपने ज्ञान व अनुभव से संसार को लाभान्वित न कर सके।

काकासा को सांस्कृतिक व ऐतिहासिक धरोहर के संचय का शौक था परन्तु धन अथवा जायदाद के संचय का नहीं। अपने पूर्वजों के मकानों को ही वे सुधरवाते रहे और पृथक् से कोई नया मकान अपनी सुविधानुसार नहीं बनवाया। जमीनें नहीं खरीदी। बाग-बगीचे नहीं लगवाये। पूरा जीवन विद्यार्थियों की सहायता करने, बेरोजगारों को रोजगार दिलाने, राजाओं के कार्य में लिप्त रहने, ऐतिहासिक शोध के लिए सामग्री एकत्र करने तथा सहायता को आए व्यक्तियों की सहायता करने में ही उन्होंने लगा दिया था। जीवन भर विश्राम नहीं किया। जब मैं विश्राम करने की प्रार्थना करता था तो वे कहते थे कि उनके लिए Rest is in the grave (मरणोपरान्त विश्राम) था। उनकी आकांक्षा To die in Harness थी। ऐसा उन्होंने मुझे अपने एक पत्र में भी लिखा था।

उनके स्वास्थ्य तथा कुशलता के लिए मैं हमेशा चिंतित रहता था। बचपन में भी जब वें निश्चित समय पर यात्रा से नहीं लौटते थे तो मैं रोने लगता था। राघोगढ़ के उदेमहल की छत या दुर्ग के प्रांगण में एक चबूतरे पर एकलिङ्ग के पास बैठकर मंत्रोचारण करता हुआ उनके सकुशल लौटने की प्रार्थना करता था।

काकासा का वर्ण अति गौर था। कद मध्यम से कम था किन्तु हड्डियों का ढांचा बड़ा होने से वे ठिगने नहीं लगते थे। आंखें विशाल थी। ललाट चौड़ा था। मस्तक के बीच में लाल रंग का तिल था। स्कंध बड़े थे। सीना चौड़ा था। प्रौढ़ावस्था में पेट बढ़ गया था। शरीर गठीला और सीने पर घने बाल थे। उनके शरीर की बनावट तथा रंग उनके पिता पर गया था तथा मुखाकृति उनकी माता पर। पूजा के समय जब वे पीताम्बर पहनते थे तो बहुत कुछ बुद्ध की तरह लगते थे। चेहरा चमकता था। इन्दौर से सर्ज के ढेरों सूट सिलवाकर लाए थे जो आजीवन चले। इंगलैंड से एक बहुत ही सुन्दर रेशम का नाइट सूट लाए थे। उसे मैंने विद्यार्थी अवस्था में पहना था। उनके और भी अनेक कपड़े मैंने उनके जीवन काल में ही पहनकर फाड़े। जब खुला सूट पहनते तो टाई बांधते थे। बाद में टाई बांधने के झंझट से बचने के लिए बन्द गले का सूट

पहनने लगे थे। घर के बाहर निकलने पर प्राय: बन्द गले का सूट पहनते थे तथा फैल्ट कैप लगाते थे। फैल्ट कैम्प इंग्लैंड से मंगवाते थे। बचपन में मैंने उन्हें 'सोलो' पहने भी देखा है। वैसे अवसर के अनुसार पोशाक पहनते थे। शादी-ब्याह तथा राजकीय समारोहों पर चूड़ीदार पाजामा और शेरवानी पहनते थे तथा साफ़ा बांधते थे। कभी-कभी पगड़ी भी बांधते थे। साफ़ा प्राय: गुलाबी रंग का बांधते थे। उनकी एक काली शेरवानी जिसमें चाँदी के बटन लगे हुए थे, बहुत फबती थी। मृत्यु या शोक के अवसर पर सफ़ेद पगड़ी बांधते थे तथा धोती-कुर्ता पहनते थे। जाति वालों से मिलने जाते या उनके सामाजिक कार्यों में सम्मलित होते तो धोती, कुर्ता बन्द गले का कोट पहनते थे तथा काली टोपी लगाते थे। अधिकतर सांभरी रंग के जूते राघोगढ़ में ही बनवाते थे। बाज़ार से फ्लेक्स के जूतें खरीदते थे। बाहर निकलने पर हाथी दांत की छड़ी रखते थे। कमीज़ें चेक या क्रीम या भूरे रंग की पहनते थे। लंगोट बांधते थे। बनियान खादी या हैण्डलूम की अपने दर्ज़ी से सिलवाते थे। सर्दियों में पूरे बाँहों की बनियान पहनते थे। घर पर केवल पाजामा या धोती पहनते थे। कमर से ऊपर कुछ नहीं पहनते थे। कभी-कभी बनियान पहन लेते थे पर अधिकतर कुछ नहीं। युवावस्था में कुर्ता पाजामा पहनते थे। पूजा के समय पीताम्बर पहनते थे। पुखराज की अंगूठी पहनते थे। इसके अलावा और कोई आभूषण नहीं पहनते थे। घर पर खड़ाऊ व चप्पल इच्छानुसार पहनते थे। राघोगढ़ में उनका कमरा कुर्सी-महल राजा साहब के कमरे हनुमान महल में स्थित शयनागार के एक दम ऊपर था। सुबह जल्दी जाते थे अत: राजा साहब कहा करते थे कि गुरुजी के पांवों की की रगड़ की आवाज़ से उनकी निद्रा शीघ्र टूट जाती है। राघोगढ़ में जीप या स्टेशन वैगन में बैठकर बाहर जाते थे। बचपन में उनको आसन व्यायाम करते देखा था परन्तु नियमित रूप से नहीं। कार्य की अधिकता थी एवं कुछ व्यायाम के प्रति उदासीन हो गये थे। तैरने का शौक था। अवसर मिलने पर इस शौक को पूरा कर लेते थे।

भोजन में समय की पाबन्दी का पालन नहीं करते थे। जब समय मिलता भोजन कर लेते थे। इंग्लैंड से लाए कूकर में स्वयं का भोजन बनवाते थे। इस कूकर में चावल-दाल व सब्जियाँ दम से पकती थीं। चपाती अलग से बनती थी। रसोइया था परन्तु कभी-कभी स्वयं भी भोजन बना लेते थे। रतालू की सब्जी व लप्सी बहुत स्वादिष्ट बनाते थे। आंवले की सूखी टिकियां बहुत ही स्वादिष्ट व स्वास्थ्यप्रद होती थी। उसकी छोटी टिकियायें बनवाकर रखते थे। लौकी की पकौड़ियों तथा मिठाइयों का भी शौक था। राघोगढ़ में हलवाई से मेरी बहन को गुलाब-जामुन व जलेबी बनाना सिखाया था। दूध-दही अच्छा लगता था परन्तु दही का अधिक प्रयोग नहीं करते थे। प्रवास के दौरान मुझे भिन्न-भिन्न

शहरों में वहां की प्रसिद्ध मिठाई खिलाते थे तथा स्वयं भी खाते थे। यात्रा के दौरान शकरपारे तथा घर पर बने कई तरह के बिस्कुट रखते थे। फलों का बहुत शौक था। फलों में अनार, संतरा, आम व ग्रेपफ्रूट उन्हें बहुत पसन्द थे। सूखे मेवे का भी बहुत शौक था। हम सब बच्चों की जेबें सूखे मेवे से भरी रखते थे। बाद में एक समय भोजन करना प्रारम्भ कर दिया था। भोजन का समय निश्चित न होने से तथा यात्राएँ अधिक करने के कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। सम्भवतः यही उनकी अकाल मृत्यु का कारण बना।

निद्रा उन्हें अच्छी आती थी। यात्रा में वाहन चलते ही उन्हें निद्रा आ जाती थी तथा ज़ोर से खर्राटे लेने लग जाते थे। घर पर बिस्तर में लेटते ही सो जाते थे।

सूची-पत्रों तथा संस्मरणात्मक लेखों के लिए सामग्री एकत्र करने में डा. पद्मधर पाठक, निदेशक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर ने कठिन परिश्रम किया है। प्रथम सूची पत्र के निर्माण में डा. बृजमोहन जावलिया ने बहुत परिश्रम किया था। प्रतिष्ठान के श्री मेनारिया, डा. क्षीरसागर तथा श्री ओमप्रकाश शर्मा ने सूचीपत्र तथा संस्मरण प्रकाशित करने में सहर्ष सहयोग दिया है। प्रकाशन को मूर्त रूप देने के लिए राजस्थान सरकार, डा. पद्मधर पाठक व उनके अधिकारियों का आभारी हूँ।

विजयादशमी
18-10-91

अक्षयकुमार देराश्री
आर. आर. एस.
उपनिदेशक
राष्ट्रीय कस्टम, एक्साइज़
व नारकोटिक्स अकादमी
नई-दिल्ली

परिशिष्ट

1, Greenway
Berkhamsted
Herts
England

Dec, 6, 1935

Dear Mr. Derashri,

I was glad to get your letter from Birmingham yesterday informing me of your welfare.

The winter is no season for journey to Birmingham or anywhere else—hardly London even for me. I am paying visits occasionally to London to attend R.A.S. (Royal Asiatic Society) lectures to borrow or return books from the library. I spent two hours one rainy day in the India House Library chiefly working through the Catalogue and glancing at some books. I belong to the Historical Association and so am going to have a look over their library in Russell Square. I am at the moment working through Steherbatsky's little book "The Central conception of Buddhism", it is very clealy expounded and I am really begining to understand something on Buddhism. But I know from other reading that Steherbatsky's view on Nirvana is considered unlikely dubious. I am glad to hear you are well fixed as regards diet, in your vegetarian family. I hope you eat enough to keep out the cold and damp I shall be glad to come and see you sometime after Jannary 2nd (in London).

My daughter leaves London for Marscilles on that day. She has to be in Poona as soon after Jan, 15 as possible. She is still working in her post at a Guildford school and so is very busy shopping and outfitting herself on the weekends

I am glad to hear that some friend of yours wishes to translate Bhim-Singh[1] into Hindi. Does he know anything of book publishing ? Macmillans have only the English version copyright; they have left me all other rights; but of course, I should like to give them the publishing of any translation : (or their Indian allied firms). They won't do these things on speculation, however, and so we shall have to show them fair prospects. Whatever is done must be on a business footing and agreements drawn up etc I do not simply say 'Yes" "go ahead and chance it." So we can discuss the whole business when next we meet in London early in January.

[1]Bhim Singh : A Romance of Mughal Times by Frank R. Sell. M A. Macmillan & Co, Ltd London 1926.

The illustrations and map in the book are Macmillan's copyright : if necessary we could approach them for use of the blocks. One reason why a translated edition should be sponsored by them.

Yours sinccrely
Frank R. Sell

Bhimrao R. Ambedkar
M.A. Ph. D., D. Sc.
Barrister at-Law

15th Feb. 1952
26, Alipore Road
Civil Lines
Delhi

Dear Mr. Derashri

Thank you very much for your letter of the 3rd. I had been to Bombay when it came. I returned on the 12th. This is the cause of the delay in acknowledging your letter. I shall be glad to discuss the matter with the Raja Saheb. I shall not charge more than what I have charged Sardar Angre. Third week of this week (month) will not suit me. I shall be free in the first week of March.

With Kind regards
Yours sincerely
B.R. Ambedkar

Indian Women University
Karve Road,
Poona-4
28th July 1935

Dear Sir,

I enclose herewith a copy of the appeal that explains the present situation of the University and gives an idea of the progress it has made. Kindly see if you can do something directly and indirectly.

The accompanying print of Mahatmaji's letter will speak for itself.

I hope this finds you. I remember the valuable help you gave me at Agra.

Yours sincerely
D.K. Karve

St. John's College,
Cambridge
15th Nov. 1935

My Dear Panditji,

Many thanks for your letter. I hope you have received my telegram. Your answers are pretty detailed indeed.

(1) Could you not persuade privately Green to do the work ? or to kindly see it after lt is finished.

(2) Cripps is useless for this work.

(3) I am writing to Dūngarpur to tell them your wish. Thirpa and Pritt are better persons.

(4) What do you think of Sir C.P. Ramaswami Ayyar former Law member.—Do you think he should be engaged in India and no need to get help from here ?

Please write to me immediately and let me know. Do you think there is any particular advantage in getting the Instrument made here ? Is Jowitt a better lawyer than Sir C.P. Ramaswami. The best plan would be to meet in London. On the day you can get a cheap return, you run down to London and inform me of that day so that I also join you. We will be able to talk over the matter and if time permits see any one of the Barristers you proposc. You may write and fix up a time for that day. I hope you understand me. But if there is no special advantage here, I think Sir C.P. Ramaswami Ayyar will be allright.

What do you think.

Yours
Nagendra Singh

19, Albert Road
Allahabad
5th September, 1936

My dear Mr, Derashri,

I am grateful to you for your letter of the 30th of August which I received yesterday. I was away at Nagpur doing a case in the High Court there.

I note that you have conveyed my message to the Rani Saheba of Raghogarh and that she is thinking over the course that she ought to take in the matter in which you consulted me on her behalf.

Some of the Indian States have already written to me about the Instrument of Accession. They are collecting material.

Trusting you are well and with kind regards.

Yours sincerely
T.B. Sapru

"Navin-Vasant"
E 4/1, Krishna Nagar
Delhi-31

Adaraniya Derashri ji,

Many thanks for your appreciative letter of 9-12-1960 Footnote 40 on page 21 of the Early Chauhan Dynasties tells the reader that the writer proposes to take up the history of the Khichis in a subsequent volume, I must implement this promise, for the Khichi's service to our Motherland deserve being commemmorated. At present I am busy writing something on the social history of Rajasthan. As soon as I finish it, I shall take up the history of the Khichis. If you or your friends have any material on the subject, traditional, semi-historical or historical kindly have it sent to

me. All the help received would be duly acknowledged.

With Namaskara & Pranamas,

Yours obediently
Dasharath Sharma

Sri R.S. Derashri ji,
Barrister-at-Law
Advocate, Supreme Court of India,
Raghogarh (Guna) Madhya Pradesh

4, PUMP COURT,
TEMPLE, E.C. 4
London, 1st August 1949

My dear Derashri,

I was very pleased to receive your kind letter and to hear that you are keeping well and always busy with your important legal work. We have the utmost goodwill for India and delighted to see the wonderful progress she is making for complete Self-Government.

I should be very pleased to see your nephew when he arrives in England. Journalism is, unfortunately not my special province. The top man there is Sir Lynden Macassey whom you will, no doubt, remember.

I regret to say that I do not keep copies in my Library of the Annual Survey of English Law as it is readily available in the Middle Temple. But when the vacation is over, I shall try to get for you second-hand copies as you wish.

Kindly keep in touch with me as I shall always be pleased to have your news.

Yours Affectionately
S. John Coloumbus

Silver Craig
Simla
27th April 1938

Advocate General
India

Dear Mr. Derashri,

Thanks for your letter enclosing copies of the appreciative letters about your work in England.

I am not sure that under the amended Rules you are entitled to be enrolled in the Federal Court. My impression is that enrolment in a High Court for 5 years is essential. Anyhow, I should advise you to write to the Acting Registrar, Federal Court, New Delhi and you will know how you stand. I take this opportunity to express my appreciation of the care and labour with which you prepared the Raghogarh case and which lightened my task,

Yours truly
B.L. Mitter

From
The Senior Tutor

Oriel College
Oxford
17th June, 1935

Dear Mr. Derashri,

Thank you very much for the letter you wrote to me in College and for that which followed shortly afterwards from London.

I return herewith the list of Benchers you kindly left for me. I know none of them personally with the exception of Sir William Holdsworth, and I recognize only one name as that of a member of Oriel College, but as a member who has left Oxford long years before my connection with the College began.

I saw Sir William Holdsworth on Saturday evening as you suggested that I should do, for his willingness to further your cause with the Benchers. He seems genuinely interested and anxious to help, and he told me that he had written to the Bencher and hoped, though he could not promise, that they would give a favourable answer to your request.

I do not know when they meet to decide this and other questions, but I do earnestly hope that soon you will be set free from your uncertainity and able to make immediate preparations for your return to your own country and your own family, and that when you are there again you will have a truly successful career. Mrs. Tod joins me in warmest greetings and best wishes.

Very Sincerely Yours
Marcus N. Tod

Marcus Niebuhr Tod ; O.B.E; F.B.A (1878—1974 A.D.)

Extracts from

The 'Oriel Record, 1974 related tc M. N. Tod are given below :—

"Vice-Provost and senior fellow of Oriel College, Oxford and University Reader in Greek Epigraphy. He had become one of the foremost Greek epigraphists in Europe, and in 1906 he became a corresponding member of the Imperial German Archaeological Institute........later he became reader, in Greek epigraphy....In 1929 he became a Fellow of the British Academy....Honorary D. Litt. of Dublin and of Birmingham and Oxford, an Honorary LL.D. of Edinburgh and an Honorary Fellow of St. John's and of Oriel....

6, Crown Office Row,
Temple E.C.
London
23.7.1934

Dear Mr. Derashri,

You may perhaps remember the letters we exchanged some weeks ago about some Rajput paintings of which I was hoping to ascertain the history. Since then I have had no leisure to pursue the matter until a few days ago when I wrote to you asking you if you would care to come and see the miniatures for yourself. I was actually on my way to the post when I met Mr. Sunderraj who told me that you had returned to India : and who was kind enough to send me your address there.

When you return to this country in the autumn, will you let me know so that I can arrange a meeting ? I shall be changing my chambers in the autumn, so perhaps you will find me easiest by letter to my private address (The Orchard, Abbotswood, Guildford); though I am sure that a communication with these chambers will still find me even if my new address should not by then have appeared in telephone directory.

Meanwhile you may possibly be able while still in India to ascertain for me who was ' Shri Rai Teg Chand Katocha". That is the name of the nobleman (written in Hindi at the top of the picture) whose portrait I have. If possible I wish to learn—

(1) When and where he lived.

(2) To what district or province the Katocha caste or tribe belonged

(3) What painters lived in that part of the country about that time ?

Perhaps one of your friends interested in Rajput History or painting may be able to throw some light on the problem. I shall be so grateful for any help you can give me : it may ennable me to write a new chapter on the History of Indian Art.

When you return to this country I shall be delighted to show you my small but beautiful collection of Indian paintings and drawings—they are the joy of my life and the solace of my humdrum existence in the Temple.

Yours Sincerely
W.B. Manley

Sarkar-Abas,
Darjiling
P.O (Hills)
5th August, 1932

Dear Sir,

Thakur Kishore Singh Barhat has written to me from your place that in connection with your projected History of Banera, you want to consult the Court Bulletins of Aurangzib of which I possess copies. I shall be glad to let you or any other scholar consult these records and other Persian manuscripts in my possession that they may require.

But please note that I no longer live in Calcutta. I have a house in Darjiling (2 Tonga Road) where I pass nine months of the year, viz : April to part of December, and all my manuscripts are kept here. If you should happen to pay a visit to Calcutta, in any month except Dec-March, you can very easily come to this beautiful hill station (by rail) for a week and go through my library. There are excellent hotels for Indians (with vegetarians and meat-eaters) here,—one "The Snow View Hotel", being very close to my house.

Details about Banera are wanting in the Akhbarat (Court Bulletins) as the Emperor was concerned with great states—Mewar, Marwar, etc. only. Consequently I am not hopeful that you will get sufficient

materials in this source. Be that as it may; you are always welcome to utilise my collection, if you come here during the nine months indicated above.

Mr. Ravishankar Derashri,
M.A. B Sc. LLB

Yours Sincerely
Jadunath Sarkar

VESEY FITZGERALD

Warrenhurst
West Drive,
Virgina Water,
Surrey
June 19th

Dear Mr. Dcrashri,

We shall be delighted to lunch with you on Friday July 5th at 1 O' clock, if that will be convenient to you. I fear it is our only free day before we go away. Will you please let us know if we are to come to Lancaster Gate and if this day and time suits you. It is very kind of you to invite us.

Yours Sincerely,
D. Vesey Fitzgerald

---

*Dr. S G. Vesey Fitzgerald. (1884-1954 A.D)

"Dr. Fitzgerald was educated at Charterhouse Sc ol and Keble College, Oxford. where he was an Open Scholar. M.A. in classical Moderations and History. His LL.D. was from the Universlty of London. Barrister at Law of Gray's Inn. In 1950 apponited as King's counsel. In 1907 he entered the I C.S. ...Legal Remembrancer, Legal Secretary, and Secretary to the Legislative council in 1918. In 1918-19 he was on military duty but returned to civil duty as District and Sessions Judge in 1919-23 when he retired and joined the Oxford circuit From 1937-47 Reader in Indian Law at School of Oriental and African Studies and

UCL and became Professor of Oriental Laws at SOAS... Head of the Department of Law at SOAS from (1947-1951)

Prof. Vesey Fitzgeralddied on 28 September 1954". (Based on information received from Prof. C.D. Cowan, Director, School of Oriental and African Studies, University of London)

---

1. Brick Court
Temple
London, E.C. 4

Dear Mr. Derashri,

Many thanks for your letter of the 22nd and I am very grateful to you for all the kind interest you are taking on my behalf with regard to the Instrument of Accession,

I had a most interesting conversation yesterday with Maharaj Nagendra Singh who is indeed a very nice youth and whom I like very much. We discussed in general terms the India Act and I tried to answer the main questions covered by his brother's letter. I also suggested to him that the Princes should select counsel whose main and sole interest is the protection of the Prince's interest and who are prepared to put up a fight to secure the best possible terms for them. Although counsel chosen must be persons agreeable to the India office in view of possible negotiations in this country, they must not be subservient to the Political Dept. and do exactly as they are told. This is a matter strictly confidential. I have been engaged for over four years now in the work connected with the Indian constitutional reforms and know that there are many conflicts of interest.

I am looking forward to seeing you when you are a_ain in town.

With best wishes
Yours very sincerely.
C. J. Coloumbus

प्रिय रविशंकरजी

आपका पत्र ता. 27-9-34 का यथासमय प्राप्त हो गया था, किन्तु खेद है कि मैं अभी तक उसका उत्तर नहीं दे सका। नहीं मालूम यह पत्र आपको भारत में मिल सकेगा। कुछ तो सुस्ती तथा दूसरे कार्याधिक्य के कारण यह हुआ।

खैर ! जदुनाथ आए थे, उनसे बहुत कुछ सहायता मिलेगी। अधिक क्या उन्होंने मुझे अपने शिष्यों में नाम लिखाने की आज्ञा दे दी है। वे मेरे Researches को Guide करेंगे अपने पास की सारी सामग्री दे देंगे। उनसे सारी बात में उन्होंने आपका भी जिक्र किया था, यह भी कहा था कि आप उनका शिष्यत्व प्राप्त करने को उत्सुक हैं। मुझे तो उन्होंने यह आदर प्रदान कर दिया।

बहुत कुछ बता गए हैं, किस तरह, कहां-कहां क्या ढूंढना यह भी बताया। जो कुछ नई ख़बर मेरे पास थी वह भी ले गए। शायद वे रामपुरा जायेंगे। मैं भी प्रयत्न कर रहा हूं। जयपुर की सामग्री के बारे में उन्होंने पूरा पता बताया।

अब आपके पत्र के बारे में। जिन-जिन का पता बताया उसका अब पता लगाऊंगा। परन्तु कृपया एक बात करें। यदि कहीं बापना न मिलें तो वहां यह प्रवन्ध कर देवें कि आप निजू आदमी को कु. मानसिंहजी या राजा साहब बनेड़ा भिजवा देवें जिससे आपके न होने से कोई बाधा समुपस्थित न हो।

राघोगढ़ के बारे में सामग्री कैसे प्राप्त हो सकेगी ? क्या-क्या प्राप्त हुई ? तथा किस प्रकार वहां कुछ हो सकेगा सो लिखें। यदि वहां इसका ढेर हो तो एकाध बार मैं ख़ुद वहां जाऊँगा तथा कुछ करूं। परन्तु पक्का पता हो तो। अभी भाई वलभद्रसिंहजी को भी पत्र लिख रहा हूं। किशोरसिंहजी से भी पूछूंगा कि उनके पास क्या-क्या सामग्री है। वैसे ही ठा. नाहरसिंहजी को भी लिख रहा हूं।

बनेड़ा के बारे में जो सामग्री मिली उसके लिए धन्यवाद। मैं अपना इतिहास सन् 1698 ई. से लगाकर सन् 1798 तक का लिखूंगा। अतएव यद्यपि राजा भीमसिंहजी का उल्लेख तथा विवरण Directly न आवेगा फिर चूंकि उनकी सत्ता की मालवा में स्थापना का लिखना होगा अतएव कृपया निम्नलिखित बातें अधिक स्पष्टतया लिखें—

(1) भीमसिंहजी को जो शाही फ़रमान अता हुआ उसकी फ़ारसी नक़ल (फोटो हो तो अधिक अच्छा तथा हिन्दी अनुवाद।)

(2) जो परगने या इलाके बनेड़े से दिए e.g. आंबा आदि उनका आगे का वंश विवरण ।

(3) सं. 1794 में जो ये परगने राजा सरदारसिंहजी को दिए गए उस उल्लेख का पूर्ण अवतरण Extract.

(4) क्या आप सूरजमलजी, सरदारसिंहजी तथा सुल्तानसिंहजी के बारे में विशद वर्णन दे सकेंगे—उनकी जीवनी आदि की घटनाओं का विशेष उल्लेख ।

(5) क्या कोई कागज़ात इस बारे में प्राप्त हुए हैं ? जिनमें सूरजमलजी की नियुक्ति का उल्लेख आता है ।

बनेड़े के इस काल के इतिहास का जितना विवरण आप दे सकेंगे विशेषतया वह जिसका मालवा से सम्बन्ध हो उसके लिए मैं अधिकाधिक कृतज्ञ रहूंगा ।

शायद आप इस ख़त के पहुँचने के पहिले रवाना हो गए हों सो मैं यह ख़त खुला ही भेज रहा हूं जिससे यदि बनेड़ा से इसका उत्तर दिया जा सके तो अच्छा, नहीं तो आपके पास भिजवा दिया जावेगा ।

अधिक क्या लिखूं ?

शेष कुशल

आपकी सहायता से ही मैं अपने इस महान् कार्य में सफल हो सकूंगा ऐसी आशा है—

भवदीय
रघुबीरसिंह

श्री

राघोगढ़
7–6–53

श्रीमान् पूज्य पितृ तुल्य गुरुदेव,

सादर सविनय प्रणाम ! कल आपका कृपा पत्र प्राप्त हुआ । उत्तर कल न दे सकी इसके लिए क्षमा याचना है । पूज्य पिता पता नहीं आप अब क्यूं मुझसे नाराज है । अब तो आपके वा दरबार के हुक्म से बाहर नहीं हूं फिर भी क्या कारण हैं नाराजगी की, मुझे जब भी आप कहिए मैं मिलने को तैयार हूं । जो आपकी इच्छा हो आज्ञा दीजिए पालन करने के लिए भी हर वक्त तैयार हूं, जो

आप टाइम टेबल बना दीजिए उस पर चलने को भी तैयार हूं--अगर मैं किसी काम के लिए इनकार करूं, तो आप अवश्य मुझे दंड दे सकते हैं। मैं खुशी से भोगने के लिए भी तैयार हूं फिर क्या कारण है जो आप इस तरह से मेरे ऊपर नाराज़ है, आप जो लिखते हैं कि तूं यह समझती है कि मुझे कोई कहने वाला नहीं है वह मैं कभी भी न समझी और न समझती हूं और न समझूंगी, न मुझे आपका कहना बुरा लगता है अगर मुझे बुरा लगता तो मैं आज तक आपको पिता कह कर क्यों मानती और अब भी मान रही हूं। आप जो यह लिखते हैं कि दरबार ने आपको सलाहकार नियुक्त किया है उसे भी मैं कब इनकार करती हूं। आप मुझे एक सप्ताह का जो टाइम दे रहे हैं उसमें मुझे क्या-क्या करना चाहिए कैसे रहना चाहिए कृपया दया करके फर्माने की कृपा करें और मैं करीब 2 बजे हाज़िर हो रही हूं। ज्यादा क्या अर्ज करूं—मैं तो आपकी पुत्री हूं ही।

पुत्री अपर्णा[1]

Raghunath Palaee
Ambikapur (Surguja)
Eastern States Agency
Dated the 4th September 1936

My dear Punditji,

Very many thanks for your letter of the 29th ultimo which came to my hand to day.

Yes the instrument of accession is vital document and best possible care and caution should be exercised in framing it, and it should be framed by great scholars of laws. Is Dr. Columbus likely to come over this side ? What will be his exact charges for framing one for a State like Surguja ?

I am very eager to know the contents of the instruments of accession that are being framed for States of your side. Can you send me a copy of one for any State. Of course it should be strictly regarded as confidential. It would help me a great deal. Kindly do send me one as quickly as possible.

Hope this finds you in the best of health. Thanking you again in anticipation of getting one copy from you soon.

Yours Sincerely,
Maharaja of Surguja State

Pt. R.S. Derashri
Bar-at-Law,
Banera (Mewar)

---

1. राघोगढ़ के राजा बलभद्रसिंह की धर्मपत्नी।

राघोगढ
ता. १०-११-३२

पं. रवीसंकरजी से पगे लागनो वंचे। खुसी रहना। ईहा पर सब तरहे से खेरीयेत है, तूमारा कागज आया पढ़के सब हाल मालूम हूवा। पेसतर कागज का जवाब संकरलालजी की मारफत भेज दीया करती थी क्योंकि मेंने कबी कीसी को कागज न्हीं लीखा था। ईस वजे से मुजे सरम आती थी। संकरलालजी को इसी बकत रवाना कर दीये वो हजूर दादा भाईसाहीब का तार आते ही फोरन रवाना होगये। पेसतर २ महीना तक कागजात तयार कराये। बादको ऊनोने कहाको गवा तोयेर के कूल हाल लेना चतू ईसलीये वागये वापीस आके खोलची-पूर जारये थे की आज खोलचीपूर जाके सब हाल सूनके क़लकी गाड़ी से बनेड़ा जाऊंगा। ईतने में तार आगया। ऊसी वखत रवाना हो गये। वो ईतने रोज ईहा पर न्हीं ठहरते तो ईतने नकसे तयार न्हीं होते। ईन नकसो से जीतनो खराबी है सब मालूम पड़ जावेगी। ईश्वर चाहा तो सब काम अछाई होवेगा। ठाकुर साहीब की बहुत महरबानगी है। ईतना सब काम ऊनसे ई हुवा है न्हीं मूजे ऊमेद न्हीं थी। तूम भी बहुत ही कोसीस कर रहे हो। तूमरी वजे से माकमा जलदी कागजात तयार करता हे। न्हीं ईतना रोज हुये क्या काम हूवा, जब तूमने काम हात मे लीया जब सब काम ठीक तोर पर चला, ईश्वर ईस काम का तूम सबको जस देवे। तूम तो बहुत ही कोसीस कर रहे हो, आगे मेरी तगदीर है। बापूने लीखाया की ठाकुर सा. लीखा कि अब ऊमेद मालूम पड़नो है कि काम जरूर हो जावेगा। ईतनो ऊमेद है जब तो जलदी होवेगा। बीमारी की वजे से संकरलालजी रुक गया, कचेरी का कागजात मोका देख के नीकालना पड़ता है. कामदार जीसमें बदमाम हे सुनले तो जलदर नीकालदे ईसो उसके डरके मारे छाने काम कीया सब ये तो सब देसू हे जीसे ईतना भी काम होगया। न्हीं परदेसी कोन करता। मेने अरज भी कर दीया हे। संकरलालजी के सात में तूम भी जाना जीससे काम अछा रहेगा। सब संकर-लालजी ने कीया होवेगे वाके सब हाल आतेही लीखना। कागज़ लीखते रहना।

बाईसाब बनेड़ा[1]

अजमेर
ता. ४-११-३२

श्रीमान् पंडितजी श्री रविशंकरजी देराश्री की सेवा में गौरीशंकर हीराचंद ओझा की आशीष अपरंच।

---

1. कृष्णाकुमारी

आपका पत्र मिला, रामेश्वर ता. २७-१० से कॉलेज में काम देता है। आपको बुखार अब मिट गया होगा। मैं रोहेड़े गया था, इस वास्ते पत्रोत्तर भेजने में देरी हुई है। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'राजविलास ग्रन्थ' तो मेरे द्रष्टिगोचर हुवा है। यह ग्रन्थ मान कवि का बनाया हुवा है। 'राजदेव' विलास नामक कोई ग्रन्थ मैंने नहीं सुना। संभव है 'शिवसिंह सरोज' के कर्ता ने कहीं देखा हो।

मेवाड़ के कई महाराणा कवि हुए हैं और राजसिंहजी के बनाये हुए राज-समुद्र के महलों के गोखड़े में जो छप्पय खुदा है, उससे उनका कवि होना निश्चय है। संभव है भीमसिंहजी भी कविता करते हों।

महाराणा भीमसिंहजी की मृत्यु का सं. १८८४ चेत विद १४ रविवार दिया है, वह ठीक नहीं है। नगोनावाडी आदि में हकीकत लिखी जाती है वहां चेत सुदि १४ सं. १८८५ (चैत्रादि) अर्थात् श्रावणादि सं. १८८४ में हुई है ऐसा ही 'वीर विनोद' में लिखा है। संभव है वही के लेखक ने दोष से सुदि के स्थान में वदि लिख दिया हो। मेवाड़ में गद्दीनशीनी का दस्तूर मृतक महीपति के दाह संस्कार बाद हो जाता है, इसलिये जवानसिंहजी का भी राज्याभिषेक चैत्र सुद शु. १५ को हो गया। आपने जो मिति वैशाख सुदि ८ भोमे लिखी है. वह राज्याभिषेकोत्सव की होगी। जो शु. महुर्त आने पर होता है। राज्याभिषेकोत्सव होने के बाद हरे की सवारी होती है। उसके बाद बाहिर जाके आते हैं।

नाथूलालजी को आपका संदेश कह दिया वह उधर आना चाहेंगे, तब आपको सूचना दे देंगे। घसीपाई का रुपया नहीं आया है।

भवदीय—
जी. एच. ओझा

विद्या-रत्न
पं. सूर्यनारायण व्यास,
राज्य-ज्योतिषी,
ज्योतिषाचार्य, साहित्य-शास्त्री,
पंचांग-प्रणेता

भारती - भवन
उज्जैन

ता. – –

श्रीमान् बन्धुवर देराश्रीजी !

आपका कृपा पत्र मिला, और उस पर श्रीमान् राजकुमार महोदय की लिखित स्वल्प मौक्तिक-पंक्तियां थी—वास्तव में बड़ा आनन्द हुआ। मेरी वृत्ति में बड़ा संकोच रहता है अतएव आप्त वर्ग में भी जब मैं अपना कार्य करवाने का

साहस कर बैठता हूं तो बड़ी लज्जा का अनुभव होता है, हृदयमें एक अजीब बात मुझे दबा रखना चाहती है जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता. यह बाहर हो सो नहीं, बल्कि घर में भी मेरी यही स्थिति है, मैं अपनी आदरणीया माताजी पर भी 'क्षुधा' लगी हो तो तकलीफ की आशंका से असमय जबान खोलने में (व्यक्त करने में) डरता हूं, सामने जाकर लौट आता हूं, फिर समय की प्रतीक्षा किया करता हूं, इस एक उदाहरण से आप मेरी हार्दिक कमजोरी और सुकुमारता का पता लगा सकेंगे, अतएव आप के स्नेह का जब मैं स्वार्थमय उपयोग करने जाता हूं, तब एक अज्ञात भाव मुझे दबाने लगता है। यही कारण है कि मैंने अपनी हार्दिक दुर्बलता ही व्यक्त की है। व्यर्थ का शिष्टाचार नहीं। किंतु ख़याल होता है कि आप जिस पुनीत-स्नेह में मुझे बांध चुके हैं उस ख़याल से मैं किस अज्ञात स्थल पर अपनी आवश्यकता व्यक्त करू ? आपही के समक्ष साहस कर देना उचित है. इसीलिए निःसंकोच, किन्तु कुछ लज्जा और भय करते हुए आपके निकट अपने कार्यों का भार रख ही देता हूं। आप जिस सहृदयता से मुझे निकट ले रहे हैं –मेरा हौंसला बढ़ता ही जाता हैं, दो फोटोस् भेज चुका हूं। दो लेख भी और इस पत्र के साथ आपके सपरामर्श के अनुसार 'इन्टरनेशनल' भविष्य भी भेज रहा हूं, इसमें भी आपको यह कष्ट होगा कि ट्रांसलेशन करना होगा, और किसी उच्चकोटि के पत्र में छपवाने का प्रयत्न भी, यह जनवरी के पूर्व ही छप सकें तो उत्तम हो। उस पत्र की ५-१० कॉपी मैं प्राप्त कर सकूं, ऐसा यत्न जरूर करें, यदि प्रथम यत्न में पुरस्कार न भी मिला तो हर्ज नहीं है। हाँ– आगे के लिए जमीं जरूर बन जाय, यह ध्यान रहे। मेरी 'टाईटिल्स' और 'संक्षिप्त-परिचय' पत्र के साथ हैं, यदि इस भविष्य में वह जुड़ जाय और उपयोगी बन सके तो एक साथ दो बातें हो जायेगी, यह जैसा आप उचित समझें कीजिए– अभी 'भविष्य' के साथ काम देगी फोटो (ब्लाक) भी आपके पास है ही। सुन्दर बात हो सकेगी। भविष्य-फल की मेरे पास कॉपी भी नहीं रखी है, उपयोग कर लेने पर भिजवा दें तो जनवरी में भारतीय पत्रों में भी निकलवा लूंगा। ट्रांस-लेशन करके आप उधर जर्मनी, इटालियन और अमेरिकन पत्रों में भी इस 'भावी' की एक-एक कॉपी भिजवा देंगे तो जनवरी के पूर्व ही छप सकेगी। एक साथ प्रचार हो जायगा। यदि यह हो गया तो मेरे लिए वास्तव में बड़ा प्रशस्त मार्ग होगा। और यही क्यों ? इस विषय में आपको ही एक अपने स्नेहीजन की प्रगति का श्रेय है। जो मेरे लिए भूलने की बात न होगी। सभी पत्रों से आप उनकी कॉपीस् भिजवाने का जरूर लिख दें।

हाँ, जनवरी में उन लेखों का भी आप ध्यान रखियेगा।

श्रीमान् राजकुमार सा. के ब्योरेवार फल के विषय में आपने पिछले पत्र

में लिखा था, मैं उसके पूर्व ही सेवाएं भेज चुका हूं, प्राप्त हुई होगी ही। उस पर से आपका 'तार' भी 'स्टॉर्ट वर्क' का मिला है और आपकी आज्ञानुसार कार्यारंभ पू. पिताश्री की निरीक्षकता में आरम्भ भी करवा दिया गया हैं। ईश्वर ने चाहा तो यश भी मिलेगा ही। पू. पिताश्री की धारणा है।

श्री कवचाले सा. की और मेरी भी दृढ़ धारणा हैं कि ओक साहब अब कुछ गड़बड़ में हैं, देखिए मैं एक पत्र श्री कवचाले का २५-३-३३ का पुराना आपके अवलोकनार्थ भेजता हूं जिसे मैंने सुरक्षित रखा था, परन्तु आप मेरी या कवचालेजी की डॉ. ओक से कोई भी चर्चा न कीजिए, यह केवल आपकी जानकारी के लिए ही हैं, वे तो पता नहीं देना चाहते हैं, और इस कॉर्ड से क्या ध्वनि-व्यक्त होती है? कवचाले और मेरे बूते से बाहर की बात हो गई है, उन्हें यह सन्देह न होने दीजिए कि हम लोग भी पुस्तक का अस्तित्व मानते हैं, वे नाहक चिढ़ते हैं। क्या सोचते हैं भगवान जाने!

आप भारत में आजाइएगा, तब और मार्ग सुझाऊंगा।

एक मार्ग और है, उस पुस्तक को जो डॉ. ओक ने लिखी है, वे हिन्दी में छपवाना चाहते हैं, यदि श्रीमान् बनेड़ा नरेश उसकी छपाई मात्र देवें तो इन पर ठीक प्रभाव—दवाव भी पड़ेगा। ये पुस्तक भी नरेशवर्य को समर्पित कर देंगे, यह मैंने उन्हें प्रेरणा की है, समर्पण स्वीकार करने में आपत्ति नहीं है—क्योंकि उसी राज परिवार के पूर्व पुरुषों के नामकत्व में यह पुस्तक लिखी गई हैं। पांच-छःसौ रुपए का काम है। डॉ. ओक ने बनेड़ा पर भी लिखा था ...उत्तर नहीं मिला है। इस अवसर का लाभ लेकर राजकुमार की सुकुमारता का पता लगा सकेंगे, अतएव आपके स्नेह का जब मैं स्वार्थमय······ ····उन्हें और दबाया जा सकेगा। और दोनों अवस्था में लाभ कीर्ति है ही। देखिए—पुस्तक का भाई गोपीवल्लभजी अनुवाद करने को तयार है। यह मुझे आप निर्णय कर सूचित कीजिए....उत्तम होगा। भाई गोपीवल्लभजी आगरा में बैठे हैं, कुछ झंझटों में हैं। स्वास्थ्य भी ठीक नहीं था, अब कुछ सुधार पर है।

और मेरे लायक सेवा लिखें, कृपा-प्रेम रखें।

श्रीमान् सहृदय राजकुमार महोदय को मेरी ओर से हार्दिक आशीर्वाद कहिएगा। आशा है आप और श्रीमान् राजकुमार महोदय प्रसन्न होंगे। उत्तर दीजिएगा। 'भविष्य' का ट्रांसलेशन हो जाने पर एक कॉपी या मूल कॉपी हिन्दी की भिजवाने का कष्ट करें। उत्तर सविवरण दें, परीक्षा परिणाम की सूचना दीजियेगा।

आपका अभिन्न

पं सूर्यनारायण व्यास[1]

---

1. पद्मविभूषण पं. सूर्यनारायण व्यास

श्रीयुत पं. रविशङ्करजी साहब   माणक भवन
सुयोग्येषु ।   कोटा 29-7-1932

आपका ता- २२-७ का पत्र मिला अवश्य ही बनेड़ा हमारे लिये प्रधान स्थान है और उसकी सेवा हमारा कर्तव्य है।

आपने कोटे के कानूगो के पास भी सामग्री होना लिखा, परन्तु कानूगो तो अनेक हुए हैं, जब तक किसी घर विशेष का पता न हो कैसे मालूम हो सकता है। कोटे के मऊ-मेदाना का प्रान्त बून्दी के हाथ में आया है। उस बून्दी के अधिकार से पहिले उस प्रान्त पर खीची व राठोड़ों का राज्य भी रह चुका है, बनेड़े के अधीन किन वर्षों में रहा इसका पता यहां लगना कठिन है। शाहबाद का परगना नरवर के अधीन था, उनकी तरफ से एक ब्राह्मण कुल को दान में दिया गया—समयान्तर में उसी कुल से झाला जालमसिंहजी ने छीन लिया। प्रियवर अक्षयसिंहजी साहब ने उनके पत्र में किसी एक कानूगो का नाम लिखा है, स्पष्ट पढ़ा नहीं गया, स्पष्ट लिखें तो पता लगाऊंगा।

पिताजी के पास की ऐतिहासिक सामग्री भाई किशोरसिंहजी के पास है। मैं उनको लिखूंगा कि बनेड़ा सम्बन्धी साहित्य से आपको मदद दें। मेरे पास कोई सामग्री नहीं।

फिर भी मैं यथाशक्ति जिस अंश में अपने को समर्थ समझूंगा सहायता देने में तत्पर रहूंगा। कृपा रहें।

भवदीय
ठाकुर केसरीसिंह

History & Research Deptt   Patiala,
H. Hs, Govt. Patiala   Dated 2-3-1937

My dear brother.

I had been out of Head Quarters for a considerable period and have only arrived here yesterday with His Highness Maharajadhiraj. On my return I found your letters on my table awaiting my arrival, hence I could not reply to them earlier

With regard to the Political History of Jaipur, I herewith write to inform you that the typing of it would be finished within this week and I will return you the original alongwith one spare copy of the same in the begining of the next week

Rampyari Chandrika
Hony. Lady Superintendent

Shri Savitri Pathshala
Ajmer
Dated 13-7-1931

॥ श्री हरि ॥

चिरंजीवी प्रिय पुत्र रविजी !

ईश्वर आपको सदा सुखी रक्खे। आपका पत्र मिला। प्रो. सा. के स्वास्थ्य के विषय में जो आपने पूछा सो वे अब बिल्कुल अच्छे हैं, केवल पैरों में कुछ-कुछ कमज़ोरी बाकी है। वे इसी इतवार तक आने वाले थे और कल आगये होते पर आज की चिट्ठी से मुझे मालूम हुआ कि मेरे भाई के वहां पहुँचने से वे नियत तिथि को न आ सके यह भी नहीं लिखा कि कब तक आयेंगे। खैर जी को इत्मीनान तो हो गया। मैनेजर महिला मेरा परिचय बहुत शीघ्र मांग रही हैं सो मैं अपने जीवन की संक्षिप्त घटना लिखती हूँ।

(1) मेरे पिताजी का नाम श्रीयुक्त बाबू शक्ति नरायण जी हैं। वे बड़े ही विद्वान व धार्मिक व्यक्तियों में से गिने जाते हैं। आप इलाहाबाद हाई कोर्ट के के सीनीयर ट्रान्सलेटर हैं, आज कल आप पेन्शन भोग रहे हैं। आप सत्यवक्ता व निर्लोभी हैं। आपमें लोभ न होने का एक प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जिस समय इलाहाबाद में प्रसिद्ध प्रदर्शिनी हुई थी उस समय मेरे पिताजी को उनके गृह को किराये पर 3 महीने तक लेने के लिये एक राजा ने आग्रह किया और वह 3000 रु. तक देने को तैय्यार था पर मेरे पिता जी ने यह विचार के उनके बहुत से इष्ट मित्र उनके घर तक की प्रदर्शनी भी देखने आवेंगे और यदि मैं उसे दूसरे को दे दूंगा तो उन्हें निराश होना पड़ेगा सो उन्होंने उसे नहीं दिया। मेरी माता बड़ी ही परिश्रमी व श्रद्धालु हैं।

(2) मेरे 4 भाई व एक बहिन है। भाईयों में से एक भाई इलाहाबाद में प्रसिद्ध संगीतज्ञ समझे जाते हैं।

(3) मेरा जन्म स्थान लेहड़ा नामक एक गांव जो कि कदाचित गोरखपुर के ज़िले में या उसके पास है, यह मैं निश्चय पूर्वक नहीं कह सकती पर मैं खेली कूदी पढ़ी लिखी सब कुछ इलाहाबाद में।

(4) नाम मात्र को केवल 4, 5 महीनों के लिये मेरी शिक्षा क्रास्थेट गर्ल्स स्कूल में हुई थी। परन्तु किन्हीं नैतिक कारणों से मेरे पिता जी ने मेरा वहां जाना बंद कर दिया था। मेरी जो कुछ भी शिक्षा हैं उसका मुख्य स्थान मेरे पिता का गृह व मुख्य गुरु पूज्य पिताजी ही थे जिनका मैं बड़ा आदर करती हूँ। यह भी कहना अतिशयोक्ति न होगा कि मेरी शिक्षा अधिकतर कोचिंग पर न निर्भर होकर स्वयं मेरे परिश्रम पर निर्भर थी। लड़कपन से ही मुझे निबंध लिखने व व्याख्यान देने का अवसर प्राप्त हुआ था।

मेरे बाल्यकाल में 'प्रयाग महिला समिति' नामक एक स्त्रियों की सभा श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के उद्योग से स्थापित हुई थी। अब उस सभा का अस्तित्व किस रूप में है यह मुझे नहीं ज्ञात है परन्तु उस समय उस सभा के द्वारा स्त्रियों का मनोरंजन होने के साथ उनकी विचार व वक्तृत्व शक्ति को बढ़ाने का अच्छा अवसर प्राप्त होता था। कम से कम मुझे तो इस सभा के द्वारा बड़ा ही लाभ हुआ। मैं प्रत्येक मास में निर्धारित विषय पर लेख लिखा करती थी और अपने बड़ों की आज्ञा से उन के सामने उसे सुनाया करती थी। मेरे कुछ लेख इतने पसंद किये गये थे कि प्रयाग से श्रीमती रामेश्वरी नेहरू के सम्पादकत्व में निकलने वाले 'स्त्री दर्पण' में छापे गये थे। एक व्याख्यान को जिसका विषय एकता था सुनकर उसे बहुत पसंद किया। उन्होंने अपनी एक कन्या से कहलवा भेजा कि व्याख्यान बहुत ही अच्छा व सोच समझ कर लिखा गया है। केवल आपको जरा और जोर से बोलने की आदत डालनी चाहिये।

(४) मेरा विवाह संस्कार प्रो. सा. के साथ हुआ था। उस समय उनकी अवस्था 25 साल की व मेरी 29 साल की थी। मुझे ठीक 2 सन् नहीं याद है। इस विषय में मुझे अधिक नहीं कहने की आवश्यकता है।

(५) मेरी पहली संतान सावित्री देवी हैं। इस के पश्चात् शरण जी इत्यादि हैं। इस विषय में आप स्वयं लिखा देंगे। सावित्री ने क्या शिक्षा पाई है व कैसे उसके आचार व्यवहार हैं। लखनऊ के डिबेट में उसको कई युनिवर्सिटी के विद्यार्थियों में प्रथम होने के उपलक्ष्य में एक स्वर्ण पदक मिला है तथा आल एशियाटिक कान्फ्रेन्स के अनुरोध से जन बालकों-बालिकाओं ने निबंध लिखे थे। उनमें से एक यहां है और उसे प्रथम पारितोषिक मिला है। नोट (यह बातें मैनेजर साहब के आग्रह से लिखती हूँ क्योंकि वे सावित्री का संक्षिप्त परिचय चाहते हैं और बहुत अनुरोध करते हैं) आजकल सावित्री देवी ड्राइंग व संगीत सीखने के साथ 2 अजमेर की सावित्री पाठशाला में अपना समय अपनी बहिनों की सेवा में अर्थात् उन्हें शिक्षा देने में बिताती है। सावित्री पाठशाला स्त्रियों तथा बहिनों को शिक्षा देने की संस्था है जिसका नामकरण प्रसिद्ध पूर्व सती सत्यवान श्री सावित्री के नाम पर रक्खा गया है। सावित्री का भी नाम इसी सती के नाम के पीछे है सो किसी को यह भ्रम नहीं होना चाहिये कि सावित्री के नाम से सावित्री पाठशाला है। मेरे विचार में व्यक्तिगत नामों को केवल प्रसिद्ध करने की गरज़ से जो काम किया जायगा वह ठोस नहीं हो सक्ता। यदि नाम करना चाहती तो सावित्री पाठशाला नाम न रख कर 'श्री चंद्रिका पाठशाला' नाम रखती। यह मेरी बहिनों को विदित रहे। विवाह के मेरे जीवन का कार्य क्षेत्र मुख्यतः अजमेर में सावित्री पाठशाला रहा। हर एक अच्छे काम काम में बीसों कठिनाईयां आया करती हैं सो ही उस में भी हुआ। ताहम अनेक कठिनाइयों को झेलते हुये भी यह हम दोनों के परिश्रम का पौधा

अर्थात् यह पाठशाला आपके सामने हैं। यदि आप सब लोग तन मन धन से इस में सहयोग करेंगे तथा द्रव्य की तो बहुत ही आवश्यक्ता है सो यदि हमारे लक्ष्मी-सम्पन्न दानवीर भ्रातागण इधर अपना ध्यान आकर्षित कर हमें द्रव्य संचय की चिंता से मुक्त कर देंगे तो आप लोग इस पाठशाला को एक वट-वृक्ष के रूप में पावेंगे जिसकी छांह में सैकड़ों हजारों लोगों को आराम मिलता हैं। गृह के झगड़ों से समय बचाकर मैंने अपना समय केवल इस ही पाठशाला में विशेष रूप से लगाने की चेष्टा की है। यद्यपि मुझे कवियों की कविताओं को पढ़ने सुनने तथा कभी स्वयं अपने उद्‌गारों को तुकवन्दी में बांधने का भी शौक है पर इस तरफ मुझे कम ही समय मिलता है। यहां के कुछ भद्रजनों के आग्रह से मैं कुछ दिनो से अर्थात् 3वरसों से मैं कवि सम्मेलन में भाग लेती हूँ। उदार कवि तथा जनता ने भी मेरी तुच्छ रचनाओं को समय 2 पर बहुत पसंद किया है। मेरे कुछ भाईयों ने अनेक विद्वानों के होते हुये भी मुझे अपने बीच में बुलाकर कभी डिवेट के अवसर पर विचारक बना कर तथा कभी किसी सभा इत्यादि की सभानेत्री बना कर मुझे समय 2 पर सम्मानित किया है।

मेरे विचार के अनुसार देश की उन्नति तब तक नहीं होसक्ती जब तक स्त्री शिक्षा के द्वारा स्त्रियों में जागृति के भाव नहीं फैलते। तदनुसार कार्य करना ही मेरा ध्येय है। पाश्चात्य भाषा के द्वारा उनके साहित्य के उत्तम भाग को तथा उनको व्यवहार चातुरी को हम बिना अपनी जातीयता, आदर्श व देश प्रेम को छोड़े बिना सीख सकते है। इस लिये मैं अगरेजी भाषा के सीखने के विरूद्ध नहीं हूँ....हां अपनी मातृ भाषा हिन्दी का ज्ञान सब से पहिले प्राप्त करना चाहिये। मैं धार्मिक संकीर्णता या मज़हबी कट्टरपना को धर्म नहीं समझती जैसा कि कुछ हमारी वहिनों या भाईयों का विचार है। मैं धर्म को व्यावहारिक रूप देना पसंद करनी हूँ तथा सदाचार को उसकी जान समझती हूँ। मेरे विचार में त्याग ही सच्चा तप है। देश ही ईश्वर है। शुद्ध प्रेम ही धर्म है। हम हिन्दू अथवा आर्य सनातनी मुसलमान इसाई जैनी सिख है तथा हम दूसरों से बगैर कुछ आचरण में सुधार किये ही श्रेष्ठ हैं। हमको ईश्वर ने श्रेष्ठ बनाया है— हमारा मज़हब ठेठ ईश्वर से हम को मिला है—इत्यादि बातों में मेरा तनिक भी विश्वास नहीं है। और मैं न तो विचार स्वातन्त्र्य को त्यागना चाहती हूँ और न मैं अपने को किसी समाज या सोसाइटी के तंग दायरे में बंद करना चाहती हूं। सभा सोसाइटी समाज अपने हैं। यदि हमें किसी की सेवा करने का अवसर मिले तो शुद्ध भाव से, सत्य के द्वारा उस की सेवा करने को तैय्यार हूँ। मेरी प्रकृति ऐसी है कि मुझे हर एक सोसाइटी या धर्म में कुछ अच्छी बातें मिल जाती हैं जिन्हें मैं जी जान से मानने को तैय्यार रहती हूँ परंतु पूर्ण रूपेण किसी संस्था की बातें मुझे नहीं भाती।

नोट– बेटे ! मैंने बहुत शीघ्रता में कुछ घटनायें लिखी हैं–कुछ मेरे विचार भी लिख दिये हैं जिन्हें आप भी कदाचित जानते होंगे। मुझे प्रसिद्धि की तरफ बहुत रुचि नहीं है परंतु चूंकि लोग चाहते हैं और कदाचित मेरे परिचय के द्वारा लोगों की सहानुभूति मेरे पाठशाला की तरफ अधिक होवे मैं यह लिखती हूँ। आप क्रमानुसार इन बातों का तथा मेरे विषय में आपको स्वयं जो कुछ मालूम हो लिखियेगा। लेख इसी महीने में निकालना चाहते हैं। इसलिये शीघ्र ही लिखके भेजियेगा।

आप जो महिला के लिये पूर्व आदर्श नारियों का जीवन चरित्र लिखना चहते हैं इस के लिये आप को बहुत धन्यवाद है। श्री राजकुमार सा. मानसिंह को कहियेगा।

आपकी शुभचिन्तिका
धर्ममाता।

Raghunath Palace,
Ambikapur,
SURGUJA STATE C.P.
Dated the 12th March, 1930

My dear Rabishankerji,

So many thanks for your kind letter of 5-3-30. I am delighted to hear from you. I quite agree with you about the future condition of Indian Princes, if there is no genuine awakening amongst them it seems to me that their position would become very shaky and precarious soon. Ae regards your enquiry about Mansinghji, I am very glad to tell you, that I found his behaviour, character most exemplary and you need not be anxious in any way about him. I am really proud of having a nephew like him.

With best pranams and trusting this find you quite fit.

Yours sincerely,
Rama Singh

Udai Bilas Palace,
DUNGARPUR
The 16th March 1936

Dear Mr Derashri,

I am deeply grateful for your letter of the 1st of March and the booklet sent by separate post. Although I have never had the pleasure of meeting you, your acquaintance with my Dear brother is a matter of much gratification to me.

Now that my correspondence with my brother is nearing the negotiation stage in connection with the Instrument of Accession, I am instructing my brother Maharaj Virbhadra Singhji, who is my chief minister. to open correspondence with you on this all important matter. You will, I am sure, be hearing from him very soon. If there is anything you desire writing to me personally at any time you are most welcome to do so. My brother Nagendra Singh will be asking you shortly to settle certain things of a business character and I do hope they will be settled in a business-like way. irrespective of friendship or regard. I have been kept regularly informed with regard to your relations and dealings with my brother and I am happy to say that I have ample reasons to place my fullest confidence in you.

The material regarding which you referred is mostly with us and some is being collected and it will not be long before things are well on the move. I would, neverthless, be very thankful if you could have the relevant portions concerning Dungarpur typed out from all available sources.

With renewed sincere thanks and best wishes

Yours sincerly
Lakshman Singh

SANGLI

Diwan, Sangli State
Date - 19th Sept. 1936

Dear Mr. Derashri

Thanks for your telegram of 18th which I was glad to have here last night. I am glad Dr. Colombos is out. Only yesterday I wrote to Mr. Polak who I hear has come out to India, asking him whether Dr. Colombos had come. This was of course before receipt of your telegram.

In this State the Political Minister looks after all matters in connection with the Instrument of Accession. So I handed over your telegram together with the reply coupon to Rao Saheb Y. A. Thombare the Councillor in charge of the Political Portfolio as he said he would reply to you.

I wonder when you came out. I trust you were called to the Bar all right before you left London I would be delighted to know all about

your plans and what you are doing at present. Is Dr. Colombos likely to come this side—is he refered by Kolhapur ?

With kindest regards and all good wishes.

Yours sincerely,
G.R. Barve

Udai Bilas Palace,
DUNGARPUR
the 19th December, 1936

Dear Raviji,

Many thanks for your letter of the 11th. The attitude of the Viceroy's Representative was sympathetic towards the demands of the State which he thought were eminently reasonable It is obvious that the Government are determined to go ahead with the federation. I think they will be prepared to concede our demand for currency. For salt Mr. Wylie assured me that the status-quo will be maintained. Any compensation will fall under the category of an-immunity and to my mind will be disadvantageous, particularly so when we are keen to press for a total remission of the tribute right at the outset. A satisfactory solution of the tribute case is far from easy but I intend seeing the Viceroy next month over it. I think the Government will probably examine the question with a sympathetic outlook.

Yours sincerely.
Lakshman Singh

Archaeological Department
Government of Jodhpur,
JODHPUR
27. March, 1939

My dear Derashri Sahab,

Many thanks for your letter of 16-3-39 and manuscript of Bhim Prakash. I will go through it and if it be found worth publishing I will try to get it corrected, retranslated and printed in the Marwar Darbar series and will mention the name of Thakur Sahab and yourself for kindly supplying the manuscript But it will be better. if you will Please send its original manuscript for a fortnight and oblige.

I am sorry to learn about the illness of Thakur Sahab. May God give him health. wealth and prosperity.

I will return the above manuscript to you as desired when done with.

I have not got any Khyat of Udaipur except Virvinod which you might have yourself seen. I will let you know whenever I will come across about the seniority of the two rulers mentioned in your letter.

I hope you will send me the catalogue number of the गजसिंह चरित्र whenever you go to Banera.

Yours sincerely
Bisheswar Nath Reu
27-3-39

'The Maratha-Rajput'
Conducted by Maratha-Rajput Union
Edited by ; Dr. Ravipratap Singh Shrinet, Ph. D.

Bhopal
16th Jan. 57

Shradheya Derashriji,

You may be rather surprised to receive this letter from a casual stranger; but still, the stranger has known about you from Rajkumar Mansinghji (of Banera) & Raja Sahab of Raghogarh years back. Somehow, the occasion to visit Raghogarh did not come, nor did the stranger think in terms of writing to you.

Yesterday, at Bhopal I met Shri B N. Sen (of Insurance Business), who has now shifted to Bhopal. I casually talked to him about a certain portion of History, which I was studying, i e,. Role of Muslim Women in in Maratha-History (1644 to 1752). Shri Sen got. not only interested, but he took your name and asked me to refer my subject to you, as you may be in a position to throw light upon this subject. He then. also remembered the various phases of your book-collections. Something new I learnt from him. I felt like writing to you, and here I am, on the typing machine.

This letter is being written to you with a specific purpose, which surely borders on a personal interest. That I have been searching materials in support of the descriptive role of Nawwab Zinat-un-Nisa (d/o Emperor

Aurangzeb, who was reported to be the 'Guardian Angel' of Shivaji). Virubai (who was presented to Shahu by Emperor Aurangzeb) and Mastani (Muslim Mistress of Bajirao Peshwa). Available record in History is very cursory. I have so far consulted ! Peshwa-Bakhara's. Parasnis Records, Poona-Akhbars, Itihas-Sangrah Virvinod, Farishta's Diary. etc, but still that urge for further knowledge is not satisfied. If you could help me, I shall feel greatly obligated.

The other subject of study is 'System of Political Intelligence in Maratha History (1772 to 1795)'. This study also runs along with the former one.

I happen to be a student of psychology but History has interested me very much, of late, and so I am studying these subjects. When I heard of your elaborate library and collection of studies, I felt like renewing my desire to visit Raghogarh positively, in the very near future, but before that I would confirm whether you are at Raghogarh.

Please remember me to Raja Saheb. With regards to self.

Sincerely yours,
R,N. Shrinet

My add :
Dr R.N. Shrinet Ph. D
Shahjehanabad
BHOPAL (M P.)

राघोगढ़
ता: 19–8–34

रवीसंकरजी से पगेलागनोबंचे तुम अछे रहना ईहापर सव खेरीयत हे । तुमारा कागज आया पढके बहूत खुसीहुई मेतो तारकी ईन्तजारीकर रही थी वना के पदारने का वनेड़ा से तार आवेगा मगर अभी तक कागज भी न्हीं आया तूमरा कागज आया जव मालूम पड़ी है ईश्वरकी कृपासे सव आगयेजो बहूत खूसी हूई जादा खुसी इस वात की हुई की मेरा काम सव हो जावेगा तूमरे वीगर जव से येक मोमीयरे भेजा है ओर कागज वगेरा कूछ नहीं भेजा जब मेमीयरे का जवाब अभी तक न्हीं आया रजीडन्टका कागज येई आयाके गवालीयेर दरबार का ईन्तजाम ठीक है सव काम ठीक हो जावेगा येई जवाब भेजा कागज की नकल भेजूंगी पीछे जीस पर सीनीयेर मेम्वर आया दजट मे हतखरच करदीया पेली जीतराई ओरतो येलकाराने अदल बदल करगया मेरा रूप्या रीयासत में बाकी था जनेक्कवका बीजेपूर का ऊस के लीये कह गयाके ईनको दे देना ओरतो कूछ न्हीं कर गया

गवालीयेर केहे कहते क्या करते क्या हे रजीडन्टी से वृछ दवेरी मीली होवेगा जीससे ईतनी पूछा ताछी करी न्हीं कवी पूछे भी न्हीं हे 2 कोपी मेमीयेर की मातमाने बीगर दसकत की भीजादई थी जो पीछी भेजीके ईनपर भी दसकत करदो 4 कोपी में से दो वेसी भेज दई 2 पर दसकत कर भेजे जो वापीस आगई आज दसकत करके पीछी भेजूगी पीछा क्या जवाव आवेदेखे खरावी यातो कोई न्हीं देखे जो आवे वाकोई राघोगढ में भेजदेवे तुम बाकी राये लीयायेजो वहूत अछीकरी अब ऊनकी जलदी कोसीस करो संकरलाल जी तो ड़ेड़साल में अब आयाहे जो हीसाव तयार कर रयाहे वोक्या अंगरेजी षड़ेहे वो क्या जाने तूमतो दोनू सीरदाराने मूलायेजे करादो फीर मारे पास में भेज दो मैं दसकत करके भेजदूगी महरवानी करके तूम ही लीखदेना मातमातो वहूत देर लगावेंगे ईसकी जलदी राख के भेजावे तो जवाव जलदी देवे रीयासत का नफ़ा नूगसान तो गवालीयेर वाला देखई न्हीं या भी लीखे खूब खा रया हे साबूत हो गई तो भी ऊसको न्हीं निकालते हैं वो तो येई चावे की केसई केसे राघोगढ़ नास हो जावे तो अछा हे। अब गाड़ीन येसा रखना चावेकी दाना बूढा होवे ल्याकतदार होवे मगर तूमरे भानेजीसा तो ठीक दीखे हे मगर वोतों जरासा दीखे कई भी न्हीं पड़ावे जब फीजूल खरच क्यों अब सूनते हे मेने कही जो वाकोतो सीखदेदई मगर वासे भी केदई के तूमकोई रखेगे मेरे से के गयाके बूढ़ाहे अछाहे पेली जजथा ऊसको रखेगे देखे कोन आवेगा जब लीखूगी। तूम वीलाईत से मसूरा लाये हो ऊसकी जलदी करना मेने सूनाहे की तूम 2–4 महीने में वीलाईत पीछे जावोगे क्या सचीहे लीखना बच्चों का प्यार करना खुसी के कागज लीखना चावेसो मगाना। मिनीबाई सलाम की जातीहे। कागज की याद राखे जलदी लीखावें।

बाईसा. बनेड़ा[1]

Rajrani
Muktawali Kunwar Shishodani

Bari Sadri (Mewar)

श्रीमान् पूज्य गुरुजी, सादर प्रणाम।

कृपा पत्र काल आयो पढ़कर दर्शना तुल्य आनन्द प्राप्त हुयो। पढ़कर मारा जी में वहुत दुःख हुयो के आप मारा वास्ते कई लिखायो है। गुरुजी मु सच परमात्मा की शपख खाकैर अर्ज करुँहूँ के मारो आपका पूज्य चरणा में सच्चा प्रेम है। मु कई अर्ज न कर सकू। मारा पूज्य वुजो मां सबने आपने सूपुर्द कर पधार्या है या वात मु कभी भूल संकू। आप शादी का निमंत्रण वास्ते लिखाई इकी मारी गलती हुई माफी चाहूँ हूँ। गुरुजी मु बराबर पत्र नजर कर रही हूँ लेकिन आपकी नमालुम अबके कई वात की नाराजगी है जिसे बहुत देर 2 सें बक्षाबो होवे है। मैं एक पत्र अबार पांच सात दिन पहले अठासे चतरभुजजी गया जांके

1. रानी कृष्णा कुमारी, राघोगढ़ (बनेड़ा के राजा अक्षयसिंहजी की पुत्री)

साथ में दी नजर क्यों हो आपको उठे नहिं होवा नहिं मिल्यो होगा अब तो शायद पहुँचो ही होगा। केश बक्स की पारसल मारी पास नहि आई है। एक कागज उर्दू में आयो सो मैं आपके पास भेज्यो है मैं हिन्दी कराई सो आपका नाम को निकल्यो।

आप अबार लन्दन क्यु पधारो हो कई कारण से पधार रिया हो ? मैं अठे राजी खुशी हूँ।

मारा छोटा ननद बीमार होवा से मारा सासू और सब कोई करीब 10–15 दिन हुआ इन्दौर पधार्या हुआ है।

कृपा पत्र बक्षावें। गलती की माफी बक्षावें।

श्री गुरुआनी जी से प्रणाम ! बहन भय्या का प्यार। गुरुजी एक मारी अर्ज है के आप मने राजरानी मत लिखाया करावो।

ली. पुत्री
मुक्तावली[1]

ॐ

Kotla Houre
Agra
2-6-37

पन्डीत साव से मेरा प्रणाम स्विकार करे. आप उस रोज आगरे में आये थे में आपको चिठो लिखने की थी फिर नही लिख सको सो क्षमा करे।

आपका कइना में वारम्वार मानुगी जेसी सिक्षा आप मुझे पत्रों में लिख देतें हे वेसी सोक पर जदी में नहीं चालुगी तो आगे का किया तो भोग रही हू अबका फिर भोगना पड़ेगा। मेरे सास ससुर सिवा क्या है इनकी वृध अवस्था में मन लगाकर सेवा करूगी तो यह बिगड़ा हूवा जनम सुधर जायगा। ओर मैं आपको ज्यास्ती क्या लिखू में आपको अपना तीसरा भाई समझती हूँ। आपने मुझे किताव दीधी वो मुझे बहोत पसन्द आई कृपा कर फिर कोई अछी किताव हो सो भेजना। प्रताप सिहजी दादाजी दो तारीख को उतर जायगे।

में आपको पत्र तो लिख रही हू। लेकोन मुझे यह मालुम नहीं हे की आप कहा रहते हें। आपके चिठो के पते से डालतो हूँ उमेद हे को पहोच जायगी।

1: राजरानी मुक्तावली, बड़ी सादड़ी, मेवाड़

श्रीमान राजासाब लखनउ से अभी नहीं लौटे है। पत्र का उतर देना आपके बाल बच्चों का प्यार करना।

आपकी सुभचिन्तक
बहेन चैंन
(चैन कुमारी)[1]

Prof. D. V. Potdar, B.A,
180, Shanwar, Poona
13-7-1936

Dear Mr. Derashri

Many thanks for your letter sent through my old pupil Dr. Tulpule who has just returned from England. Last time when the latter was there he had told me about your friendship with him.

I am very glad to see that you remember me still. I am also sorry because I have done nothing to help you.

Could you not come here, from Bombay when you come or have to come off and on ?

You can see our Institution, our work and our workers.

The subject you propose to specialise—Historical relations between Rajputs and Marathas is indeed very interesting and important.

You are probably aware that a genuine hrroscope of Shivaji from Biyawar Rajputana was brought to us and published. The one you refer to is another. Is it not contemporary ? We are now inclined to hold on the strength of Bahamani firmans from Mudhol Raja that Bhonsles were Rajputs no doubt. Now you say you can give us further convincing evidence on that point.

As to Peshwa's control over Rajputana, you can find evidence in recent Peshwa Daftar publication But the history of Dhar State by lele has some discussion on that point. More writings and details on the subject are awaited and may be found in Rajputana and Central India.

Mr. Sardesai stays at Kamshet on the G.I.P. Rly. line from Bombay to Poona. The more you meet people always the better, That may be easily done when you come this side I can also take you to Sardesai if Rao Bahadur Barve who stays at far away sangli will find it quite suitable.

If you give me more details about Vikramgit Manuscripts I will inquire further. Mr Gode from the Bhandarkar Institute Poona has in hand some useful manuscripts. I will consult him after I get more particulars from you.

Yours Sincerely
Datto Vaman Potdar

---

1. रानी चैनकुमारी, कोटला

D.O. No. 243/766/4

PATIALA,
Dated 3-9-32

My dear Brother,

I am in due receipt of per copy of ' Webb's Currencies in Rajputana" which you so kindly sent. But you have left me in dark as regards the price of the book as well as for the other one (The Missing Chapter of the Mutiny), I do not wish that you may undergo such undue burden for me. Please write me down what remittance should be made.

Mr. Raghunath Parsad Singhania, the Secretary of the Rajasthan Research Society at Calcutta, has now-a-days come here and is staying with me for compiling material for the issues of the 'Rajasthan'. I hope he will stay here for not less than a month. Consultation was held between Mr. Singhania and myself and it has been decided to open a Research Society at Ajmer and have it registered. The personnel of the Society will be as follows :-

The members of the Working Committee :-

1. Your goodself.
2. Rai Bahadur Gauri Shanker Hira Chand Ojha, Ajmer.
3. Dr. Mathura Lalji of Kotah.
4. Rao Saheb of Karwa.
5. Shubh Karan Ji Kavia, M.A., LL.B.
6. Hetu Dan Ji Ujal, M.A., LL B., Hakim of Sojat.
7. Kaviraja Saheb Durga Danji of Kotah.
8. Thakur Saheb of Badnor) Any one of these two.
   or Raoji Saheb of Devgarh)
9. Thakur Chagan Singhji of Pokhran.
10. Rajkumar Man Singhji of Banera.
11. Pandit Suraj Narainji Beas of Ujjain.

The Officer Bearers :-

1. Maharajkumar Raghubir Singhji of Sitamau — President.
2. Raja Dhiraj Amar Singhji of Banera — Vice-President.
3. Thakur Devi Singhji of Chommoo — Vice-President.
4. SECRETARY. My name has been proposed as Secretary, but I do not know if I can accept the offer or not because in case of my

remaining at Patiala, it would be very difficult to pull on with the work of the Secretary. But you may please also note that it is my keen desire to retire from Patiala as soon as possible.

Joint Secretary ; Mr. Ram Devji Chokhani, Ex-M.L.A. Calcutta
Asstt. Secretary : Mr......................Singhi of Calcutta.
Treasurer : Imperial Bank of India Ltd.,

....

....

....

and in case you agree please send your consent per return of post to enable me to forward the rules of the constitution to the Commissioner of Ajmer for Registeration. They will be supplied to the memhers as soon as they are got printed and published, The Society has no Political or Social aims, it is only a Research Society.

I asked Mr. Singhania, whether the Quarterly Journal of the Society was regularly sent to your address as well as Pandit Suraj Narainji He replied in negative the cause of which he explained that owing to the pressure of work to publish 'Sunder Granthawali" their whole attention was diverted to that side. Due to this the publication of the Journal had slackened. It is why we are now considering over to get the office of the Society at Rajputana with the above constitution and affiliate as a branch office, the Research Society at Calcutta to the same. The Press being already in our hand, the Calcutta Branch will only undertake to publish the books on Dingle and Rajasthan Literature. To give an impetus to our work in Rajputana we can easily collect a sum of Rs 10000/- from the Marwari brothers at Calcutta. And in addition to above we expect something from the Princes and Jagirdars of Rajputana also.

As regards the acceptance of the Vice-Presidentship you may kindly request Rajadhiraj Saheb on my name to send his consent. I am writting a seperate letter to him also.

I hope we will be able to apply in this connection to the Commissioner of Ajmer in the beginning of the new year.

To

Master Saheb Ravi Shankerji
Derashri, M.A.LL.B. Bar at law etc
P.O. Banera (Mewar) Rajputana

Yours very affectionately,
Kishoresingh

Sukhsampattirai Bhandari,
M.R.A S.
Author of
Twentieth Century English-Hindi Dictionary
History of Indian States, etc. etc.

Dictionary Publishing House,
Brahmpuri, Ajmer.
Dated 8th May, 1948

My dear Barristersahib,

As I wish to bring out the second volume of the dictionary at an earliest possible date I would request you to kindly give me all the literary help so far as legal terminology is concerned.

Will you kindly let me know the convenient time so that I may call on you at Banera.

As I am leaving Ajmer very shortly for Masoorree a prompt reply from you would oblige me very much.

With best wishes

Yours very sincerely
Sukhsampathrai Bhandari

बिजली

[बिजली (16 Ty) विविध विषय विभूषित सचित्र साप्ताहिक]

संपादक—
प्रफुल्लचंद ओझा 'मुक्त'

बिजली – कार्यालय,
बाँकीपुर (पटना)
ता० ६-१२-१६३६

प्रियवर,

कदाचित् आप मुझे पहचान लेंगे, जब मैं आपको स्मरण दिलाऊँगा कि कुछ वर्ष पूर्व प्रयाग से परस्पर हमारा पत्र-व्यवहार हुआ था। अब मैं पटना चला आया हूं और बिजली निकाल रहा हूं। आगामी अंक सेवा में अवलोकनार्थ भिजवाऊँगा।

आज एक कार्यवश यह पत्र लिख रहा हूं। पिताजी जो महाभारत निकाल रहे थे, कारणवश उसका कार्य अभी स्थागित कर देना पड़ा है। तत्काल हम भागवत निकालने जा रहे हैं। इसे पूर्ण करने के बाद फिर महाभारत में हाथ लगाने का विचार है। हम चाहते हैं, इस कार्य में आपका सहयोग हमें प्राप्त हो और आप हमें कुछ ऐसे सहायक, जो 15) रुपए पेशकी दे दें, शीघ्र बना दें। हम आपकी इस कृपा के लिए आभारी होंगे। आशा है, आप-जैसे हिन्दी-साहित्य-प्रेमी के निकट की गई यह प्रार्थना व्यर्थ न होगी।

विनीत
प्रफुल्ल

Badnor
17-7-30

Dear Panditji,

I have read the book 'Bal Rajniti with great interest and delight. The language is simple and easily inteligible. The book is full of quotations from the Learned Authors The efforts of the Author in writing this useful. interesting and instructive book are very commendable and praiseworthy.

The most difficult subject of polities has been rendered easy and the book is bound to prove very useful to young and old alike. The chapters on duties of administrators and present and ancient system of education are very interesting and highly instructive. Hope this finds hale and hearty.

Yours sincerely,
Thakur Gopalsingh
Badnor

3.6.9

To

The Director of Kala Bhawan.
Hindu University Banaras,
Varanasi.

Dear Shri Rai Krishna Dasji,

As promised long ago I am sending an album of artistic paintings of different castes on mica numbering one hundred and twenty four and another album of Hindustany Characters engraved and coloured by F. Dormieux in 1805. Both these albums are my humble gifts to the Kala-bhawan, Please acknowledge their receipt duly endorsed by the Vice Chancellor of the Banaras Hindu University. There will be two conditions (1) whenever any use is made of these paintingsd ue acknowledgement will be made and (2 if they are printed a copy will be provided to me and if I am dead to my son Shri Akshay Kumar Derashri at Banera (Bhilwara) Rajasthan.

I met you for the first time in 1931 and since then I have known you. My very dear friend Shri Vishwa Nathji Shashtri who will hand over the albums has been responsible for an early gift.

With best wishes,

Shriman Babu Rai Krishna Dasji
Director, Kala Bhavan
B.H.U. Varanasi (UP)

Yours sincerely,
(R. S. Derashri)

Dear Shri Jha Mahodays,

Thanks for your letter of the 14th May. 1959 I am sending an album of Hindu Character on mica in an artistic sandal wood casket, through Shri Vishwa Nathji Shashtri Bhardwaj a great friend of mine. Hope you will find it interesting. I shall send you illustrated Kamsutra when I go to my native place BANERA (Bhilwara) Rajasthan where it is preserved among my record I shall also send you another album on different RUP' of Lord Krishna, some deities, princes and saints They are all my humble gifts to the Sanskrit Vishwa Vidyalaya. Whenever I am in Varanasi, it will be a great pleasure to call on you. It is Sanskrit Vishawa Vidyalay that will raise Head of India in this world.

With namaskars

Yours Sincerely,
(R S. Derashri)
Banera (Mewar)
4-3-1945

Shri A N. Jha I.C.S.
Vice-chancellor. Sanskrit Vishwa Vidyalaya

फैलोशिप क्लब, लंदन नगर इग्लैण्ड
मार्ग कृष्णा ८ गुरुवार वि. सं. 1990
तारीख 10 नवम्बर 1933

प्रियवर राजकुमार श्री मानसिहजी,

आज आप जीवन के पच्चीस वर्ष समाप्त कर छबीसवें वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। आपका विद्यार्थी जीवन शीघ्र समाप्त होने वाला है, और आप संसार क्षेत्र में प्रवेश करेंगे। वह जीवन इस जीवन से नितान्त भिन्न होगा और उसके लिए यथोचित तय्यारी करने की पूरी अवश्यकता है। आपके जन्मोत्सव पर हार्दिक बधाई है और परमात्मा से विनीत प्रार्थना है कि आप में गुरु शक्ति का संचार करे कि आप जन साधारण की सेवाकर अपने जीवन को कृतार्थ करें। मनुष्य जीवन वार बार नहीं आता है और इसका लाभ नहीं उठाना मूर्खता है।

इस शुभ अवसर पर क्या भेंट करूं यही विचार कर रहा था, पर निर्णय पर पहुँचा कि श्री रामचरित मानस से बढकर क्या भेंट हो सकती है। इस युग में संस्कृत भाषा का जन साधारण से लोप होने से वेदों, स्मृतियों, पुराणों आदि अमूल्य ग्रंथों के रसस्वादन से विरले ही अपने आपको कृतकृत्य करते हैं। अनुवाद से वास्तविक आनंद नहीं मिलता। इस युग में श्री रामचरित मानस उपरोक्त ग्रंथो का सार कहा जावे तो अनुचित नहीं है। इस ग्रंथ ने इन 500 वर्षों में भारत

वर्ष में जन साधारण का अकल्पित उपकार किया है। राजा से लेकर रंक तक इस में से समय 2 पर एक दो पद उद्धृत कर अपने आपको संतुष्ट करते हैं।

रीति, नीति, आचरण और व्यवहारों को। बताने के लिए एक ही ग्रंथ है। चरित्र चित्रण और मानवीय विकारों का इस सुगमता से वर्णन किया है कि मनुष्य के हृदय में चुभ जाते हैं, प्रिय लगते हैं और अपना प्रभाव डालते हैं। यह इस काल में धर्म शास्त्र है, ज्ञान भंडार है। न जाने कितनों को डूबते बचाया, कितनों को कुमार्ग आदि जाने से 'रोका, कितनो के निराश मय जीवन में आशा का संचार किया, कितनों को घोर पाप से बचाकर पुण्य का संचय करने में लगाया, कितनों को धर्म पथ पर डगमगाते चलने में सहारा देकर सम्हाला। मनुष्य जीवन को सभी झंझटों की विवेचना कर सुलझाया है। इससे बढ़कर इस समय क्या भेंट दे सकता हूं।

यह सब होते हुए इसमें पुरुषोत्तम श्री भगवान रामचन्द्र का गुणगान है जो सोने में सुगन्ध है। 'राम नाम' मात्र ने न मालूम क्या जादू किया है। दुःख में सुख में, हर समय पाप कौ उठाने में यह असाधारण है। बालक से वृद्ध तक के जीवन का सहारा है।

श्री भगवान रामचन्द्र आपके पूर्वज हैं और उन्हीं की दया से इस काल में भी आपके पूर्वज ऐसे-ऐसे शक्ति सम्पन्न हो गए हैं जो अपनी कीर्ति को अमर कर गए हैं। आप पर भी बहुत टकटकी लगाए हुए हैं। कम से कम पूर्वजों का आभास तो देंगे ही।

आशा है मेरी इस भेंट को उम्र भर याद रखेंगे और इससे लाभ उठावेंगे।

शुभेच्छु
रविशंङ्कर देराश्री

Banera (Mewar)
4-3-1945

My dear Bhanejji Sahib,*

I learnt that you were away to Indore and therefore I did not write to you. I understand that you have returned to Raghogarh now.

After your succession to the Gadoi, I had no chance of having a heart to heart talk with you. You were ill and I was busy and then I had to return.

---

* राजा बलभद्र सिंह, राघोगढ़

Rajyabhishek is a vedic Sanskar and you must have it Lalaji sent me measurement of Gaddı but that is too small and one man can sit comfortably alone. Velvet is costly and brocade is still easily and it would cost thrice than what it would have cost before the war but is has to be prepared. What have you thought about the Rajyabhishek. please be frank. Eyery thing could be arranged according to your taste I shall have the seal made at Aligarh and I want to make a little change. If you have no objection I would like to have it in simple prose instead of poem. If you insist on a poem I shall like it in Sanskrit.

I have received a funny letter from the Kamdar but I do not want to reply any thing as he is going now and it is better to be friendly. He seems to be very much annoyed with Hardayalji. Please call Hardayal and explain him to keep the Kamdar pleased as he is a guest for some time. Shankarlalji managed to spread news that mother was anxious for 200 mds of sugar on the 12th day and it was I who got it reduced. He is trying to spread other poison too. But I think he will be a victim to his own poison.

You know my relation with you and I feel I have some right to make you a reasonable request too. when you intend distilling I warned you. I strongly hold the same views. I am sorry you are departing from the right path and you may have to sorry later on. Woman and wine are most dangerous for you, and specially the latter You may feel that you may be above it, but remember that once she takes a hold on you, you will be no where and all your efforts will be failure. I have clear example of your worthy father and other princes before me. Wrong and illegal actions not only kill conscience but drag a man to immorality. This is a delicate subject and so I do not want to write you in this letter but you must understand me and my mind in short. As one of your welwisher I have written you a few lines.

Rajadhiraj wants me to accompany him to Agra for legal work and for settling Bhanwarsahib other for training or education. I shall leave this place an Tuesday and I shall be in Jaipur on Wednesday and Thursday and so please let me have your reply about the gaddi and the seal. I prefer a big gaddi of Banera type so that if there is prince of equal status he could also sit along with you in the Darbar.

We must go with our irrigation projects. Please read the enclosed letter and give it to Pandit Kantichandraji after having entered in receipt register.

I was very sorry to hear about the death of Sailana Yuvaraniji Sahib It must be great shock for the Yuvaraj.

We must go Gwalior also. It will be better to go there after the Minister has visited Raghogarh. I must reach Raghogarh when the minister is there.

Trust you are quite fit. Please take care of Shrimati Ranijisahiba and give her my asirvads.

With love,

Yours affly,
R. S. Derashri

R.S. Derashri,
Barrister-at-law

Banera (Mewar)
6-2-1947

मान्यवर ब्याहीजी* सा.

सादर नमस्कार ।

कृपा पत्र मिला– पढकर समाचारों से सूचित हुआ । आपका बाजोट रह गया वह भेज रहा हूँ । कटोरिए काली होने गई थी जब आयेंगी भेज दूंगा । निवार मथुरा से मँगाई····पिलंग बड़ा बननेसे कम हो गई सो फिर वहाँ आर्डर दे दिया है। धोती–देखना ही भूल गया····आप आ ही जावेगी । क्या कृपा कर जोधपुर से दो बढ़िया चूंदड़िए बनवा सकेंगे । एक जोड़ी इयरिंग और 6 कुड़के मेरी भतीजी की भेज रहा हुँ । शायद इनमें सोना थोड़ा कम हो २।।) तोले की इयरिंग मय घड़ों के जैसे शतरूपा को दिए हैं वैसी बनवादें । विवाह के खर्चे का अनुभव अब होगा– 5000) पांचहजार से उपर खर्चा जेवर के अलावा बैठेगा । 1000) से उपर का यहां सस्तेभाव से हुआ अजमेर में 1500) लगते । अब के यहाँ पधारने की कृपा करें। ब्याहीजी साहिबा को लावें । चि. विष्णुजी का विवाह ऐतिहासिक रहेगा–जाति की उन्नति की नींव इसी समय लगो है । सबसे नमस्कार निवेदन करें । इस विवाह में सबसे जादा कृपा प्रेम दिखावें ।

मुझे खर्चे की चिंता नहीं है । आप लोगों की····महिमानों की अधिकता से खातिर नहीं हो सकी जिसका दुःख रहा। क्षमा करें, गरीब ब्राह्मण हूँ···· निभालिया और निभालें । जो कुछ है प्रेम है ।

Raghogarh (Gwalior)
12-2-1944

My dear Samar*

I understand you find it difficult now to prepare for the coming examination and that you have no hope of success. I told you at Banera that you should not waste time but you did not listen to me. There is no reason to be pessimist and if you make a sincere attempt there is still time. It is a general habit with the Indian students that they do not work all the year round but work hard only during the preparation leave. You are quite intelligent and if you study hard you have a fair chance of success. Have you employed a tutor ? If you have not done it, please employ one atonce. He will be very helpful to you and you will get confidence.

This is the age for the survival of the fittest and temporary success due to membership of a particular order or a class does not count in the long run. Man must stand on his own feet. A favour is a delusion and it degenerates a man, I must tell you most frankly that you have been misguided and you still wander in a fools parad.se. B A. is a minimum qualification these days and unless one is atleast a graduate he has no status. If you think that you are grand son of Rajadhiraj Banera and it is immaterial whether you are a graduate or not. If you think so it is a mistake. The times are fast changing and you have to be well qualified for discharging your office. You may ask your father or grand father how time was changing. I have special right to tell you frankly and therefore I have written you all this When I was coming to Raghogarh I met Mr. Ede and he spoke in very bad terms for you. He had every sympathy for you, but he was sorry for your life and habits. Some of your other teachers had a good opinion for you but they too considered you a gentleman at large. You will remember these days and be sorry later on if you do not work hard and get through the examination. I hope you will work hard and improve the mode of your life.

With love,

Yours affly,
R. S. Derashri

---

* भँवर समरसिंह बनेड़ा

S. DERASRI Jodhpur, 23- 58

Pujyawar Kaka Sahib

We have not heard from you for a long time and are very anxious to hear about your welfare. It seems that you have been moving about very much. I was sorry to note a marked weakening of your health. Kindly do not strain yourself too much Your age does not permit constant movements and very hard work You must settle down at one place now and read, think & write so that the world may learn from your great knowledge and experience I beg your pardon for this discourtesy.

I am very glad to inform you that dear Akshayaji has been doing very well. He was also awarded prize for regular attendence. at the annual Prize Giving.

We could not go to Capt Gopal Singh Ji's At Home but we have been to him since then I found him a nice man.

With respects,

Yours Affly,
S D. Derashri

P. S. We have just received your kind p.c of the 22nd and thank you for it.

Narendra Singh International Court of Justice
Peace Palace the Hague, Netherlands
Cable : Intercourt Thehague, Telephone : 924441
6, Akbar Road, New Delhi T.N. 11001
मार्च 12, 1986

स्वर्गीय पंडित देराश्री के संस्मरण

जब पूज्य पंडितजी लिङ्कन इन्न के एक सदस्य की हैशियत से कानून (Bar) की उपाधि का अध्ययन कर रहे थे मेरी मुलाकात प्रथम बार उनसे इङ्गलेंड में हुई । वे अपने भारतीय सहपाठियों को सहायता देने में अत्यन्त अभिरुचि रखते थे और यदि किसी भारतीय विद्यार्थी को किसी पुस्तक की जरुरत होती थी तो वे सहर्ष अपनी पुस्तकों को उनके अध्ययन के लिये दे देते थे यद्यपि इनकी अपनी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी । एक बार की घटना जो

मुझे याद है कि पंडितजी का एक सहपाठी उनकी पुस्तकों को अपने अध्ययन के लिये मांगकर ले गया जबकि उस समय उनको अपनी परीक्षा के अध्ययन के लिये अत्यन्त जरुरत थी। वे अपने भारतीय सहपाठियों को न केवल पुस्तकों की अपितु पहनने के लिये पोशाकों, आर्थिक सहायता आदि से बिना किसी संकोच से मदद दिया करते थे।

दूसरा महत्वपूर्ण गुण उनमें स्पष्टवादिता तथा सत्यवादिता का था। वे कभी[कभी किसी भारतीय विद्यार्थी को कठोर तथा असहिष्णुता से व्यवहार करने में सकोच नहीं करते थे क्योंकि वो सत्यवादिता व स्पष्टवादिता के लिये किसी व्यक्ति की अप्रसन्नता की परवाह नहीं करते थे। भारतीय विद्यार्थियों के हृदय में उनके लिये इस प्रशंसनीय कार्य के लिये अपार प्रेम था। जिन लोगों को उनसे सम्पर्क में आने का इङ्गलैंड में सौभाग्य प्राप्त हुआ, उनके हृदय में अपने भारतीय सहपाठियों के साथ सच्चे व्यवहार का एक अमिट चिह्न छोड़ गया है। अतः उनकी स्मृति में यह मेरा अत्यन्त प्रिय तथा लघु संस्मरण अर्पित है।

नागेन्द्र सिंह

Brussels, 5 February 1988

Shri Ravi Shankar Derashri, who out of admiration and respect was known as "Guruji", was a man of great erudition and learning. As a barrister, he had acquired an insight into the incricacies of law. Particularly Hindu Law, commercial law, taxation law and public international law. This knowledge enabled him to advise a number of erstwhile princely Indian States on matters concerning their pre-merger status in relation to British paramountcy and their tax and property problems after merger into the Republic of Indis

I had the privilege of working with him on many of these problems and I was always amazed at the ease with which he could deal with them and suggest solutions which were not only legally sound but also wholly practical. However, he never made law the source of his income and his whole legal career was devoted to helping those whom he loved and cared for.

Guruji was also a profound Sanskrit scholar. This was evident, to a certain certain extent, from the large collection of books and manuscripts in Sanskrit and Pali which he had acquired at great personal expense and by he . nd his family going without comforts. In this conrection, I rec ll his vividly long journeys in the narrow lanes of Delhi Bombay, Calcutta and

many other cities and his meetings with relatively unknown people, He had a tremendous fund of patience in dealing with those people. On many occasions when I accompanied him I used to become a bit irritated but I never failed to admire his tenacity and preservance and his love for rare books, manuscripts and paintings. His historical perspective was imbued with a somewhat romantic attachment to all that was good and beautiful in the past.

Guruji was a deeply religious man and was regular and meticuous in his prayers and meditation. He was rather orthodor with regard to Hindu culture and traditions, but that is far from saying that he was in any sense fanatic. He had respect for all religions He believed in tolerance and understanding between the different communities of India. He had very good friends who belonged to other faiths. His ethical values were based on norms which form the core of almost all religions.

What I admired most about Guruji was his outstanding character and his humanity. He was one of the noblest of the old generation and was a father figure to many deserving young people whether rich princes or children with very meagre resources He advised and encouraged the young and gave them material help where needed. There seemed to be no bounds to his munifence. If he himself could not help, he would persuade others to do so, which ofcourse caused him some embarrassment on a few occasions On the other hand, his wrath towards the undeserving was unbelievable. I was always a little bit scared of being taken to task by him for certain indiscretions or for following a life style he might not apprrove of I must admit that he was somewhat partial to me and overlooked many of faults.

Outwardly Guruji seemed to be an inflexible and a harsh person, His exterior however belied his innate kindness and generosity. It was typical for him to shout at a person and then quietly help that person. At times I could also make fun of his eating habits and other eccentricities. He was quite unassuming and despite knowing many press barons and politicians he shunned publicity or any office of profit.

Indeed, the number of people he knew was incredible.

They belonged to many different walks of life - lawyers, doctors, army generals, professors, businessmen, ex-rulers and princes and civil servants from the highest to the lowest. He treated almost all of them as equals. On the other hand, most of them regarded him with a certain

amount of awe and reverence, Sharing his company, I had the privilege of meeting many distinguished people. He was a close friend of my father and that actually made him a mentor to the whole family. Personally, I owe him a great deal. He encouraged me when I joined the bar and also later when I joined the Government Service. Unfortunately, he expired prematurly and his death deprived me and many others of sincere advice and assistance.

Guruji did not amass wealth, though he could easily have done so if he had wished, given his competence, contacts and the circumstances in which he was placed. Rather he chose to collect rare manuscripts and paintings. His collection was indeed extraordinary and I must congratulate Shri Akshay Derashri Guruji's worthy son and a colleague of mine, for his magnificent gesture in donating this vast collection to the Rajasthan Government This certainly involved a great sacrifice on his part. However, the gesture was certainly in keeping with Guruji's own deals and I am confident that Guruji, had he been alive, would have done exactly the same thing.

I was happy to learn that Rajasthan Government is bringing out a catalogue of the manuscripts etc. donated by Shri Akshay Derashri. On this occasion, I would like to pay my tributes to Guruji, a great man whose memory I shall alway cherish.

L.P. ASTHANA

Shankar Sadan,
Jaipur (Raj.)
Dated 22-2-1988

Pandit Ravi Shankarji Derashri B.Sc. LL.B. Bar at-Law of Banera (Mewar) was intimately known to me since his college days at Ajmer. We were together for sometime in the Agra College. He was only two years junior to me in the college but somehow got so much attached to me that he regarded me as his own elder brother for life.

Raviji, as he was lovingly called by all his elders, was a highly enterprising and forward looking man. Though he hailed from an orthodox family with a background of Sanskrit scholarship, he decided to go abroad for higher education in law. In choosing to go abroad, he disregarded the prevalent fear of being excommunicated for going beyond the seas.

Essentially freedom-loving, he did not take up general practice at the bar and did not move about from one law court to the other. He took only selected cases or worked for permanent clients. He also worked as advisor in running the administration of some princely States. These activities gave him enough money to maintain his simple life style and also to spare for his philantrophy.

He was a great patron of intelligent but poor students who chanced to meet and impress him. They were encouraged to do well and to undertake higher studies and were given the requisite monetary help to do so. Several such students stiil remember him with gratitude.

Pandit Ravi Shankarji was steeped in ancient lore, beginning from the Vedas and down to comparatively modern literature and history. He was very fond of collecting useful manuscripts and rare books at great cost and bequeathed a valuable collection.

He was respectful to elders, polite to equals and indulgent to youngsters. He had pleasant manners, was a colourful personality and was on agreeable and interesting companion. He is unforgettable.

L L. Joshi
I.A.S. (Retd.)
Chairman, Raj. Pub. Service Commission (Retd.)
Chairman Raj. Board of Secondary Education (Retd.)

Everlasting Memory of Shri Ravishankar Derashri

I had first met Shri Ravishankar Derashri in London in 1935. On the very first day of our meeting we became friends. He was a selfless person; very affectionate and friendly. Shri Ravishankar, popularly known as "Guruji" assisted young Indian students in London in all possible manner He encouraged youngsters to work hard; coaxed them to progress. He even nursed friends in illness, as he did with me whenever I fell ill.

He was very devoted to Indian culture, was religious and pious in habits. I was amazed at his quality of persuasion and friendly conversation. He was sincere and even offered help with his slender purse. We were in touch with each other when he returned to India.

His sudden demise was shocking and I greatly miss him. Many of his friends have very sweet memories of him. We shall not see a person of his calibre again.

Mahida Niwas,
Mandwa-Chanded
Dist. Bar da
31-4-1986

Narendrasingh Mahida
(Former Union Minister of Defence)

संवेदना–सन्देश

Prof (Dr) M L Sharma
Rajasthan University, Jaipur

"He was one of my esteemed friends for whom I had a great regard and whose learning I admired"

श्री विहारीलाल, सचिव,
हिज़ हाइनेस, सैलाना।

"श्री रविशंकर साहब अत्यंत कार्य कुशल एवं योग्य व्यक्ति थे। सज्जन एवं मृदु स्वभाव के थे... ....

"श्री हरिभाऊ उपाध्याय

"वे मेरे बड़े मित्र थे"

श्री सत्यप्रसन्न सिंह भंडारी

"हम सभी बनेड़े वालों के लिए बैरिस्टर साहब कई उदाहरण व आदर्श प्रस्तुत करते थे। उनकी लग्न, तत्परता—खोज करने की इच्छा सराहनीय थी.......वे सबकी मदद करना अपना पुनीत कर्त्तव्य समझते थे"

J. S Singhvi, I A. S.

"His friends and admirers would remember for long his amiable disposition and dedication to scholarship.

Dan Mal. Vice - Prinicpal,
Mayo College Ajmer

' Right from our school days I held him in high esteem and always felt proud of my association with a brilliant and devoted person like him who rendered invaluable services to Banera, Raghogarh and other families..............."

ले० कर्नल नाथूसिंह,
गुमानपुरा (डूँगरपुर)

"ऐसे विद्वान व योग्य व्यक्ति की इस लोक में बहुत ज़रूरत थी"

H. H. Raja Balabhadra Singh Raghogarh

"Pujya Guruji had done so much for me and my family and I am very sorry to loose him."

S. S. Chordia Gwalior

"By his death all of us. much more than yourself have lost a guide who was readily available. whenever he came to Gwalior he always paid a visit to us and treated my wife with more affection than his own daughter."

Shiv Shankar I, c. s.
Home Secretary, Govt of India

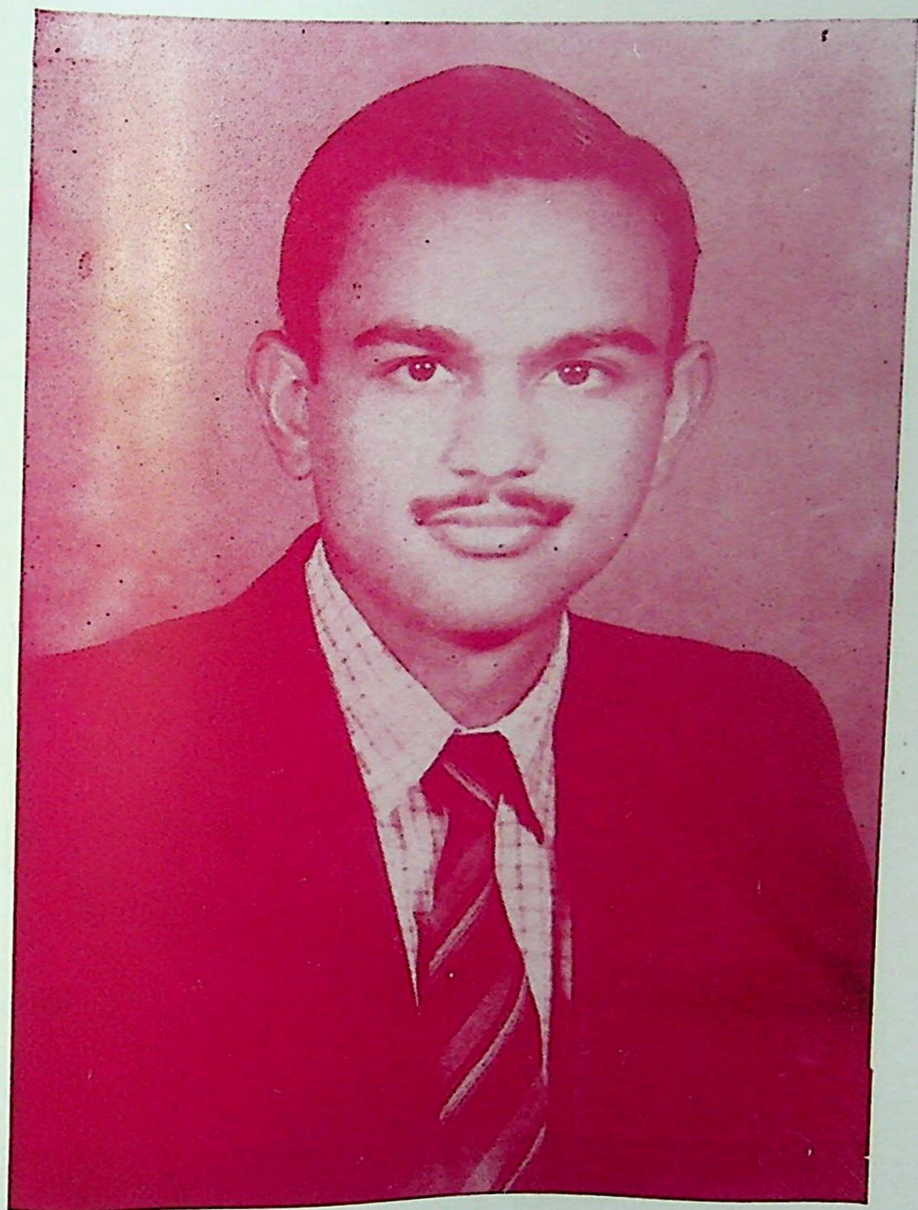
"He was a man of high ideals and I had a great regard for him"

Raja Pratap Singh Kuchaman

"lost dearest friend"

कनक मधुकर,
साप्ताहिक नवजीवन, उदयपुर

"विद्यार्थियों, असहायों और पीड़ितों के बड़े सहायक थे। बनेड़ा के अनेक नौजवान साथियों को उन्होंने आगे बढाया, पीठ थपथपाई, हिम्मत दी और उनमें जीवन का मन्त्र फूंका। उनकी सेवाएँ चिर-स्मरणीय रहेंगी विशेषकर शिक्षा, साहित्य और प्राचीन इतिहास के कार्य को उन्होंने हाथ में लिया और उसमें उन्होंने भारी काम किया। वे राज घराने के ही गुरु नहीं बनेड़ा के सबके गुरुजी प्रसिद्ध थे। उन्होंने मुझे भी गणित का पंजाब मेट्रिक में अध्ययन कराया, देर रात को जगाते रहते थे और बड़े लग्नशील व्यक्ति थे। बनेड़ा का एक अमूल्य रत्न खो गया।



पण्डितजी के सुयोग्य पुत्र
श्री अक्षयकुमार देराश्री I. R. S.





पण्डितजी की बाल्यावस्था का एक दुलर्भ चित्र



पण्डितजी की पूजनीया
माताजी श्रीमती टेकूबाई



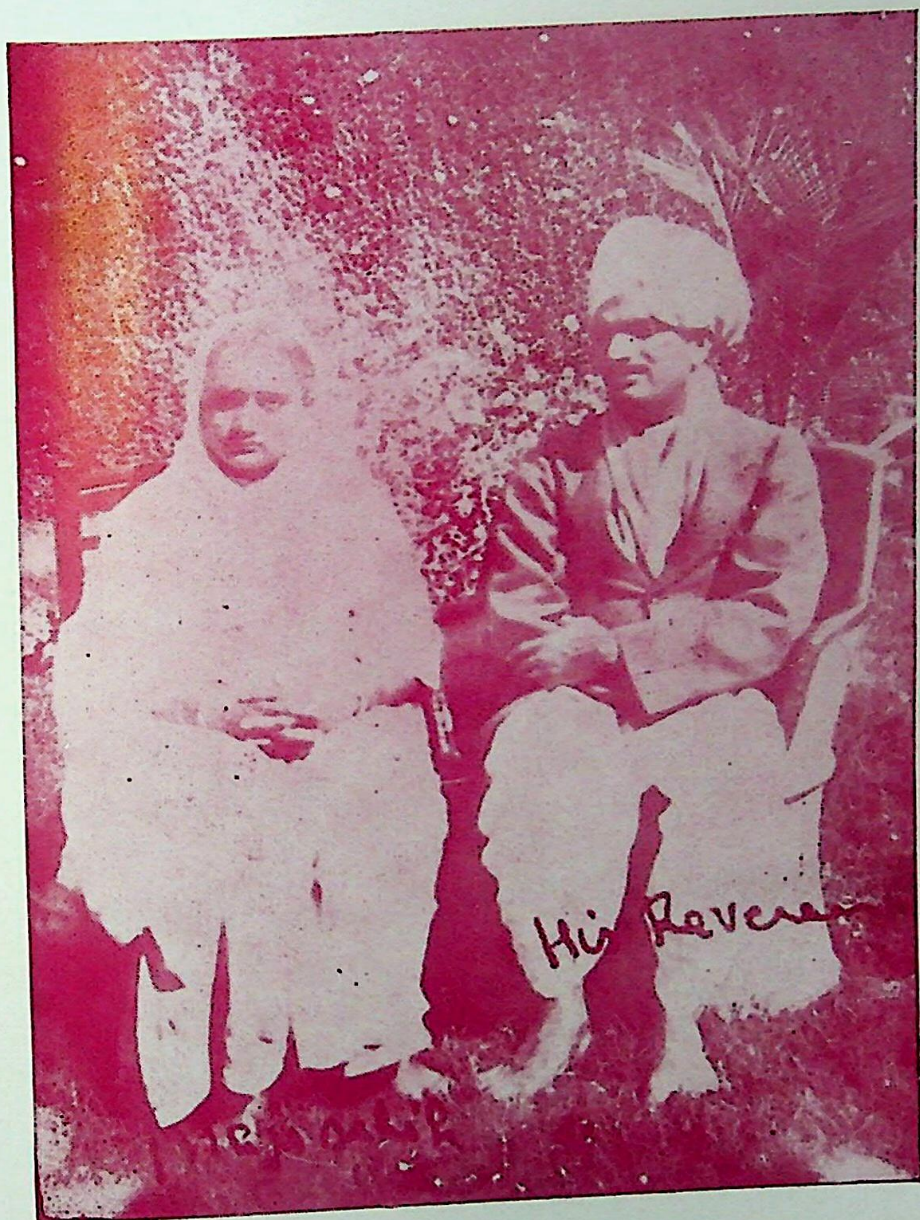
पण्डितजी की धर्मपत्नी श्रीमती माधुरी देराश्री



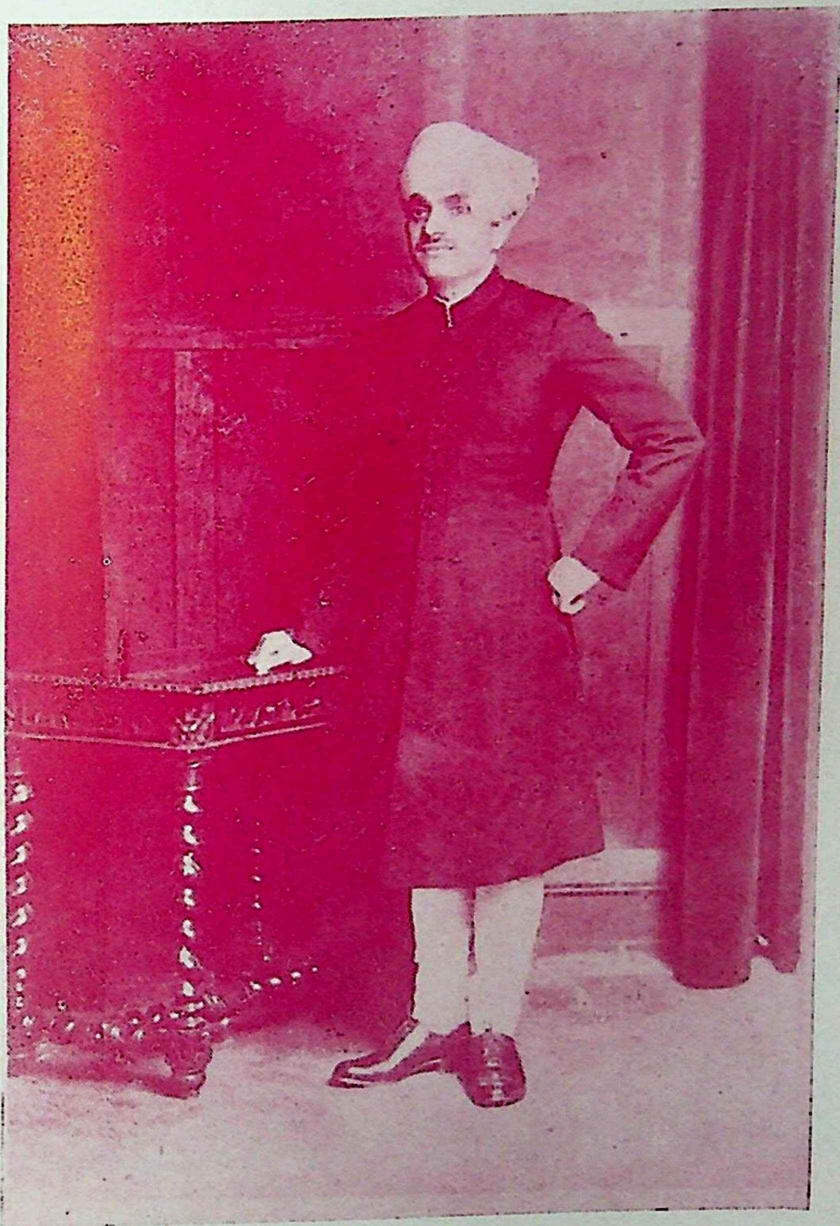
पण्डित रविशंकर देराश्री अपने पूजनीय पिता पण्डित रामनाथजी एवं
ज्येष्ठ भ्राता प. शिवनारायण के साथ
बुटक : सत्यवती, सत्यदेव, शांता
सन १९२५



पण्डित रविशंकर देराश्री
सन् १९२५



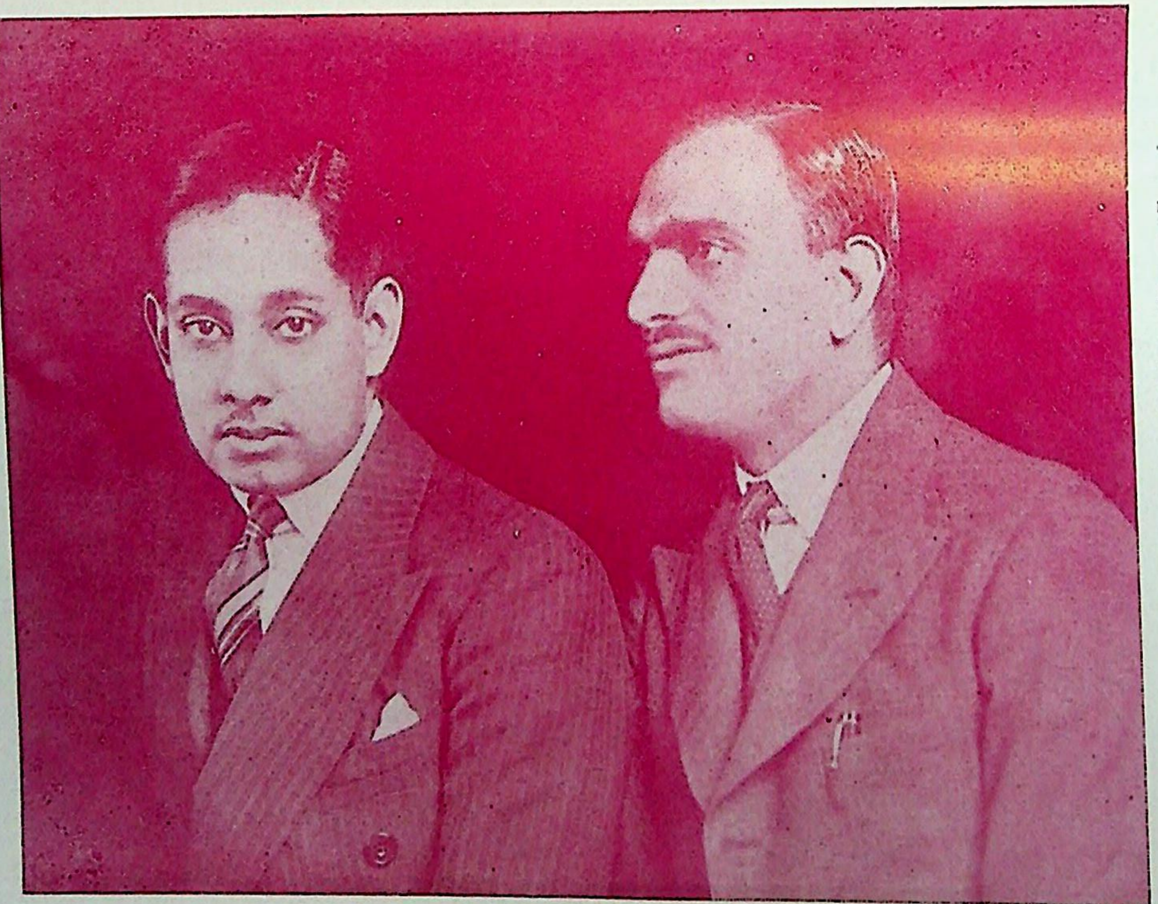
पण्डितजी मुक्तावली कँवर राजकुमारी बनेडा
(राजमाता बडी सादडी) के साथ



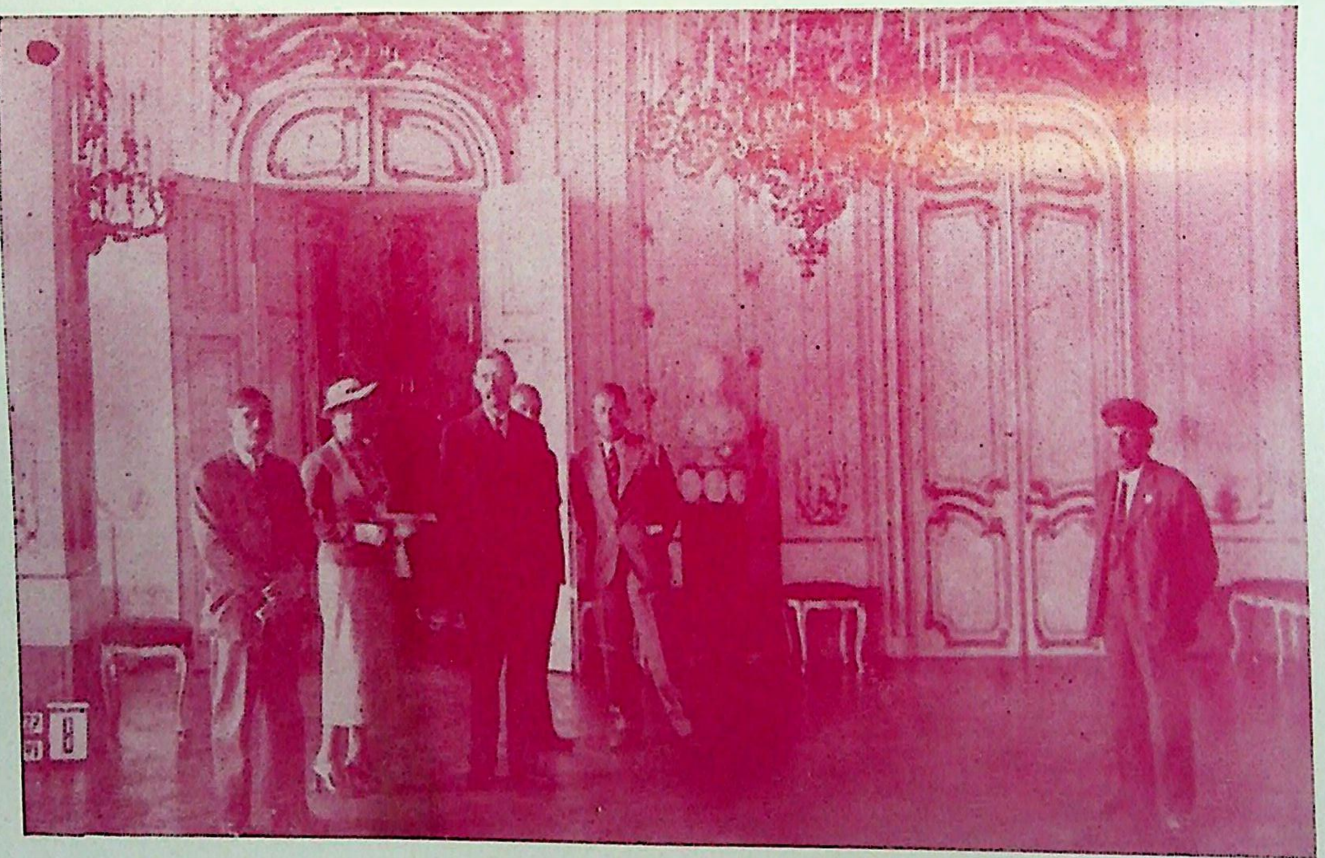
पण्डित रविशंकर देराश्री इंगलैण्ड मे
सन् १९३०



पण्डित रविशकर देराश्री
इग्लैण्ड मे
(१९३३)



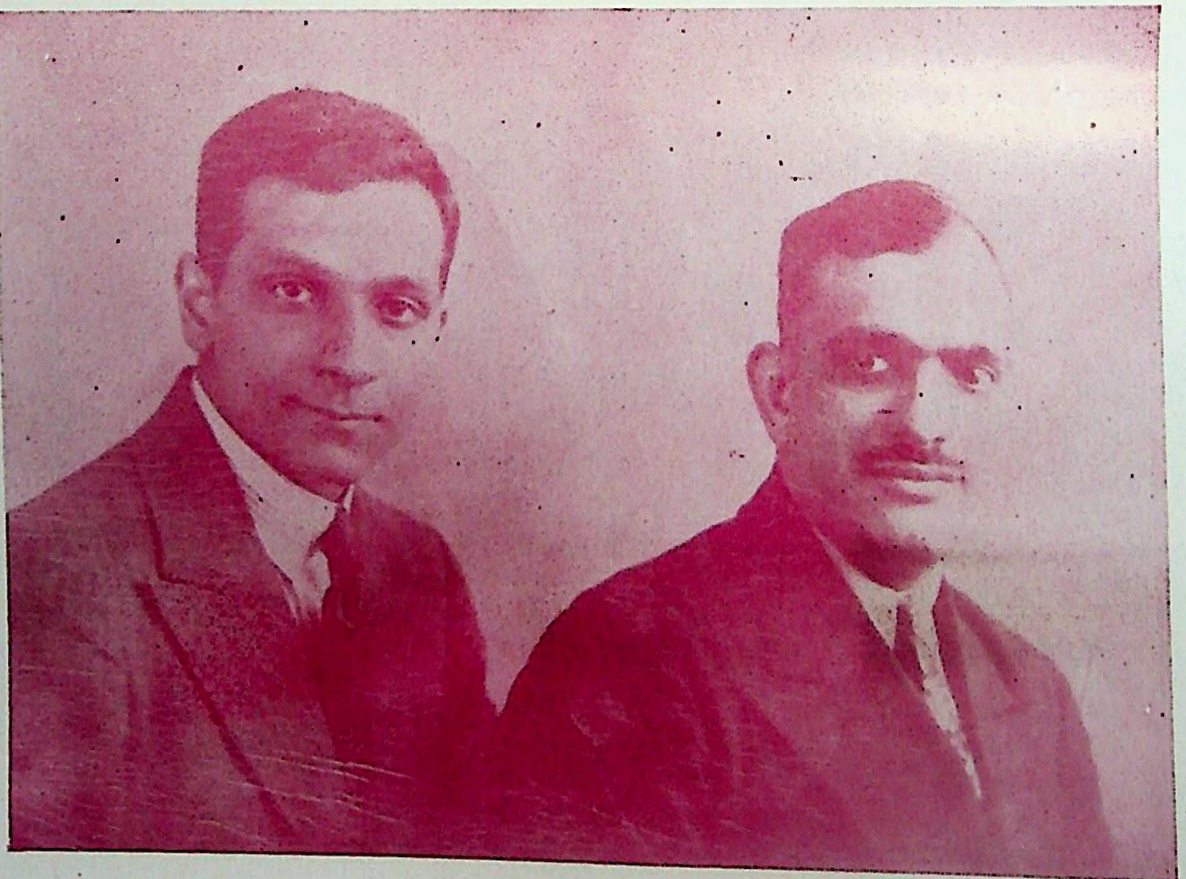
पण्डितजी बनेडा राजकुमार श्री मानसिंह के साथ
सन् १९३३



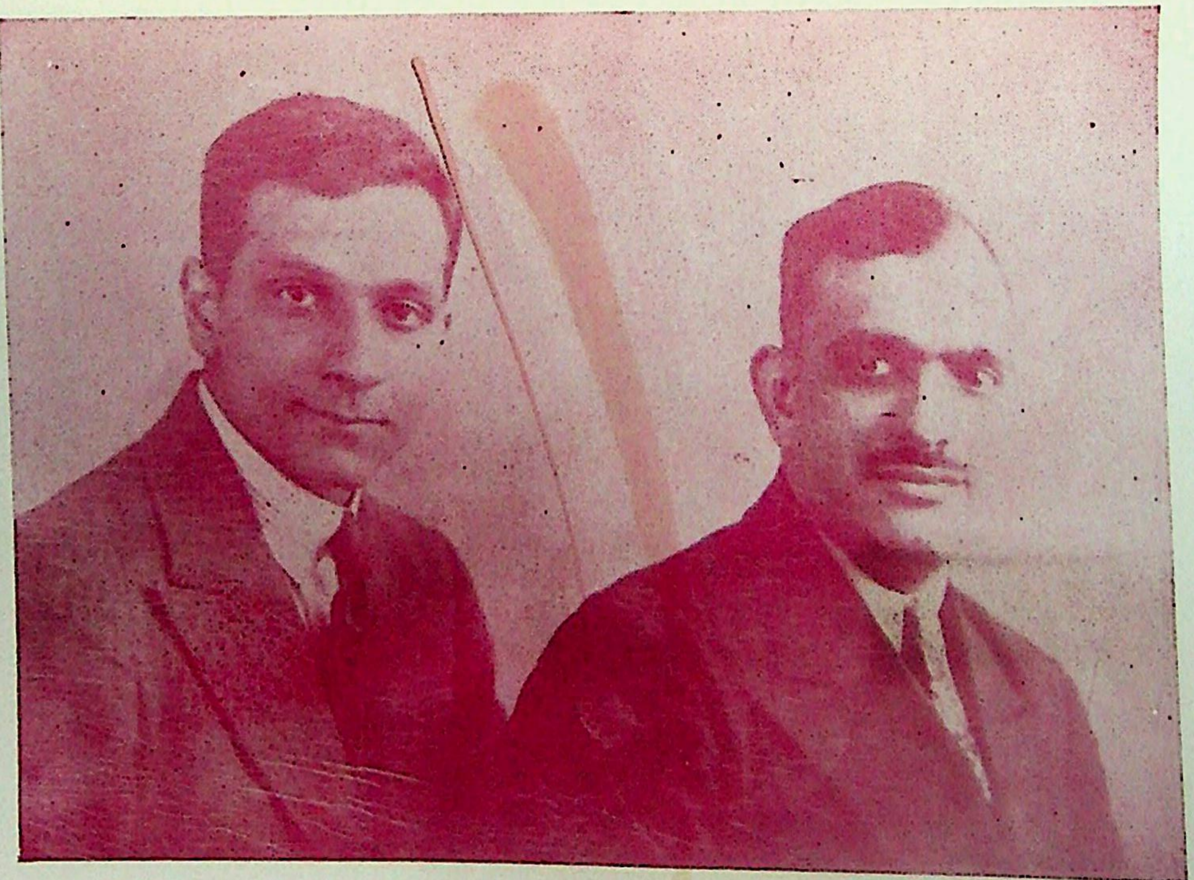
पण्डित रविशकर देराश्री यूरोप के एक राजप्रासाद में
सन् १९३५



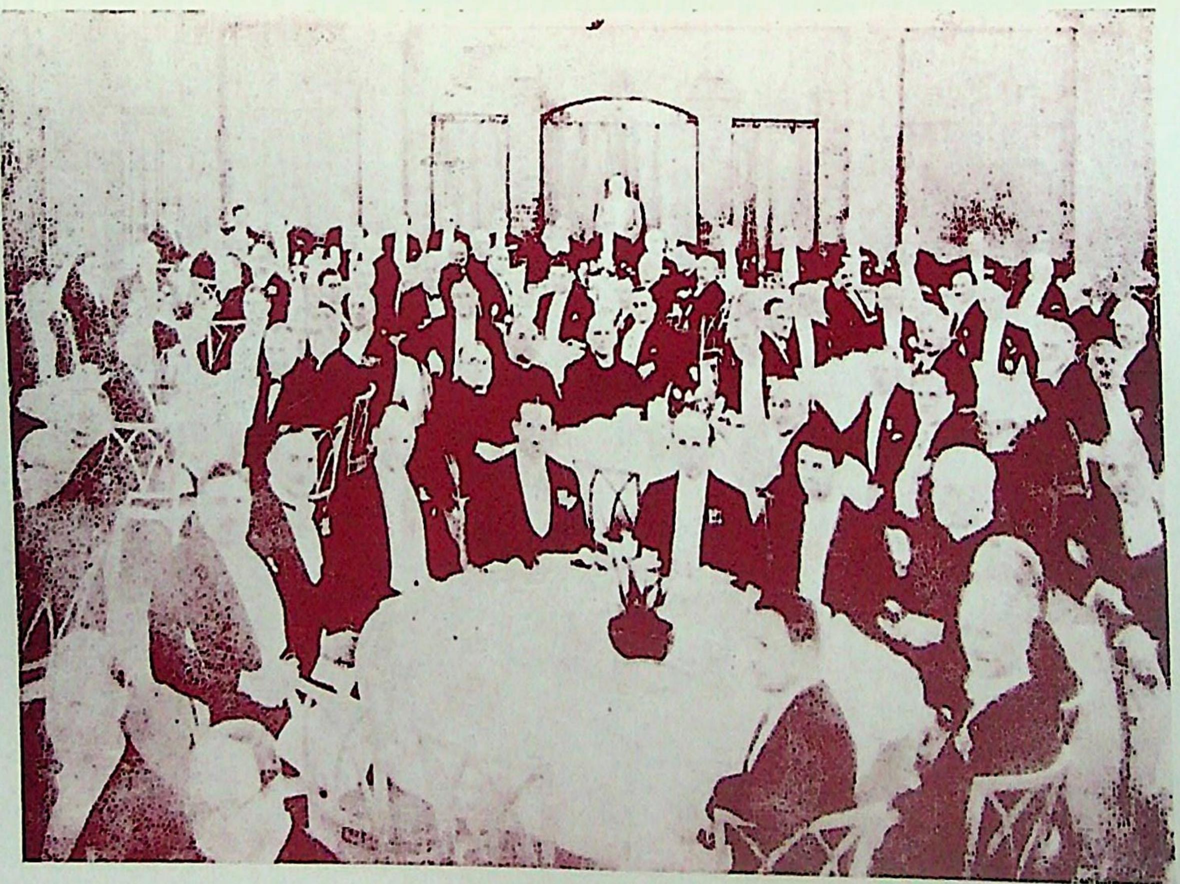
पण्डित देराश्री, श्रीमती सैल एव प्रोफेसर श्री फ्रैंक आर. सैल
सन् १९२५



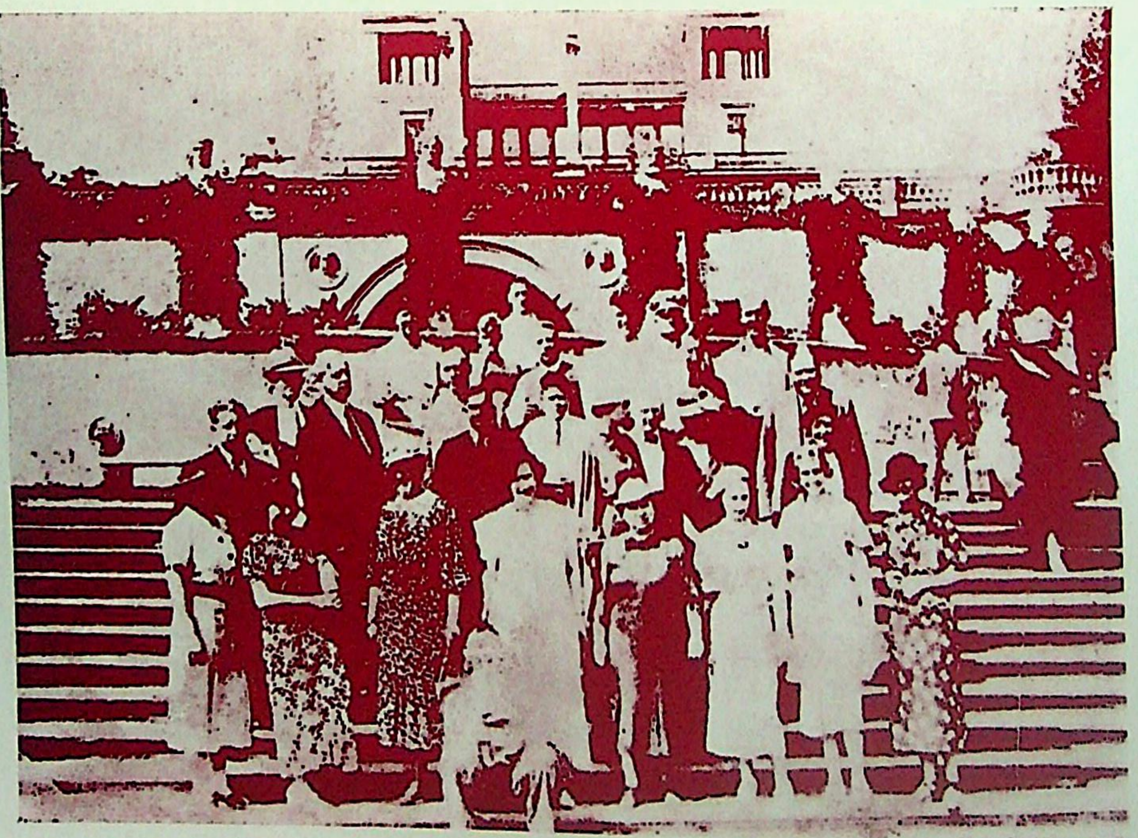
पण्डित देराश्री एवं उनके मित्र
श्री ढोलकिया इंग्लेण्ड में



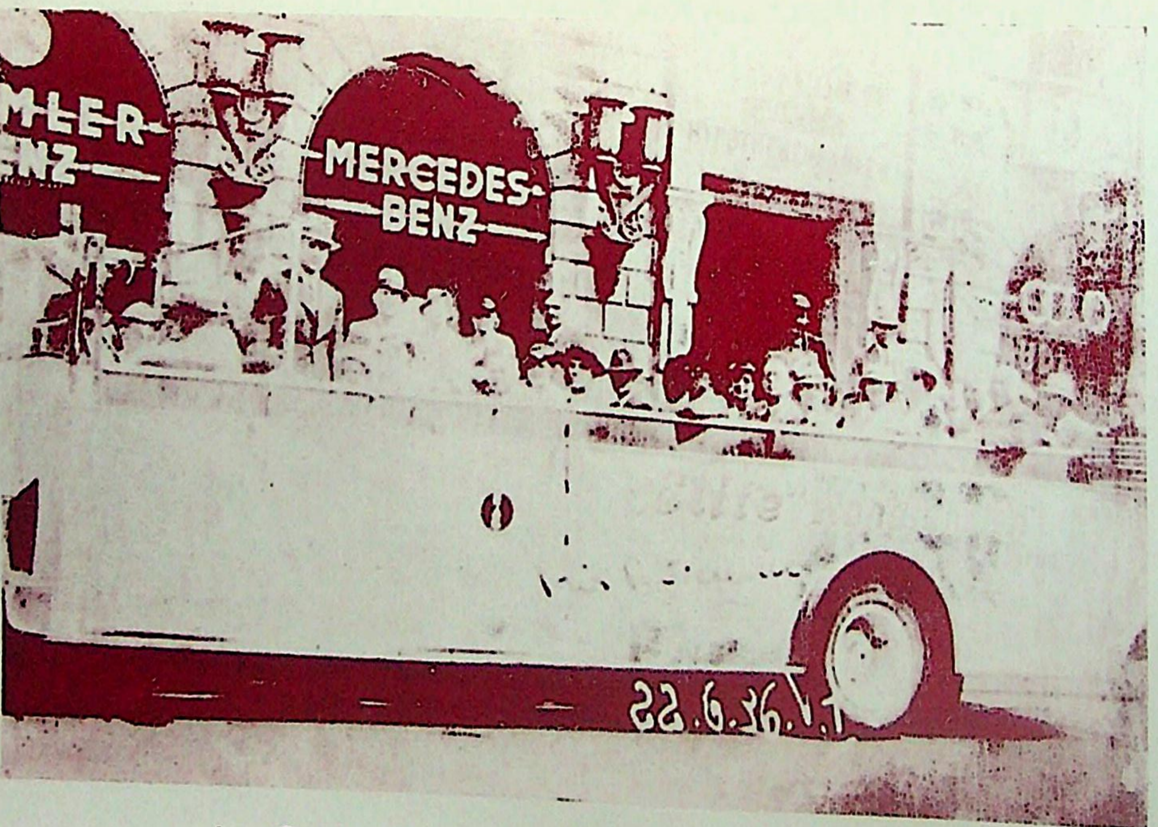
पण्डित देराश्री एवं उनके मित्र
श्री ढोलकिया, इंग्लेण्ड में



ट्रिनिटी कॉलेज, डबलिन, भोजन कक्ष
पं० रविशङ्कर देराश्री दाहिने कोने में पगड़ी पहने



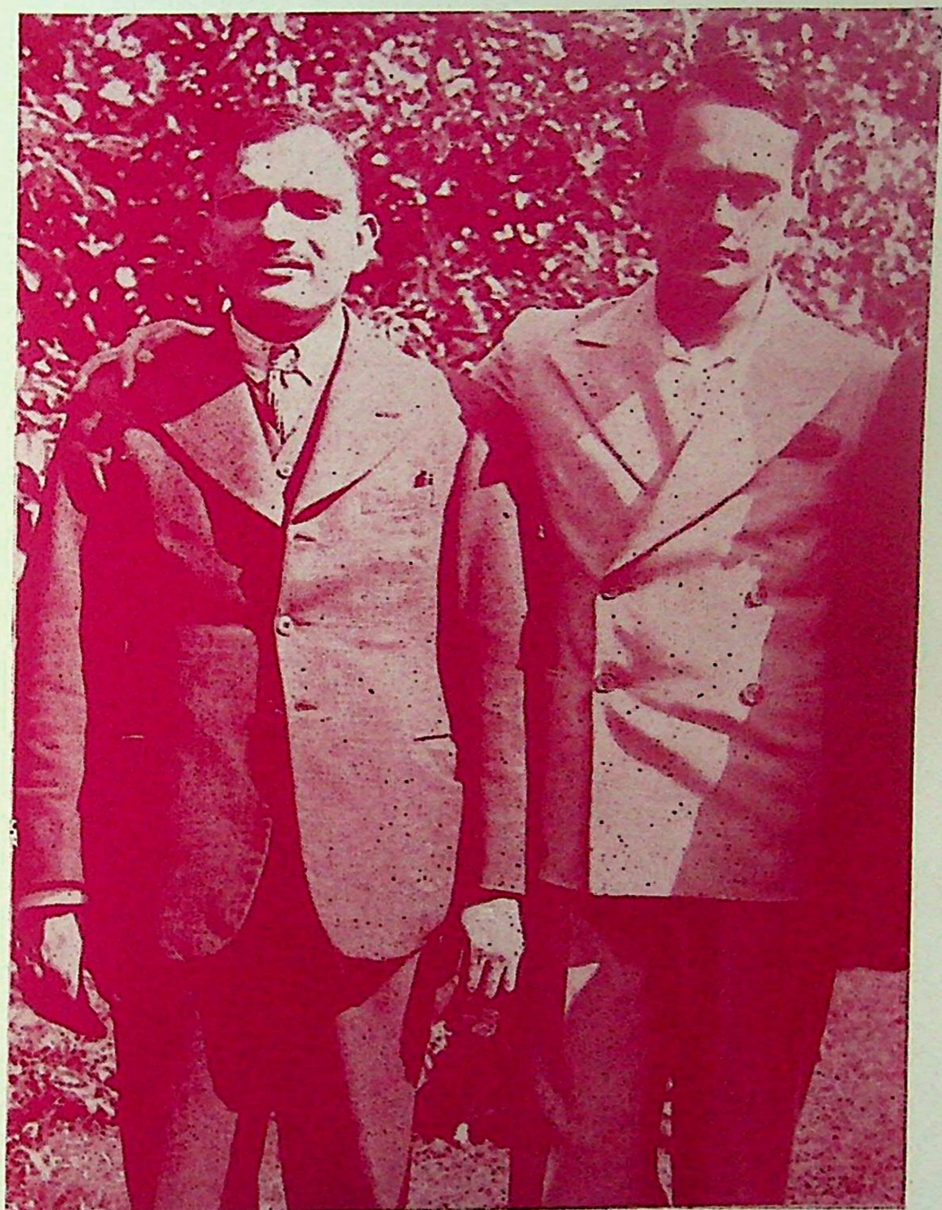
पं० रविशङ्कर देराश्री यूरोप में । · महिलाओं की पंक्ति से ऊपर सीधे देखते हुए खड़े, 1936



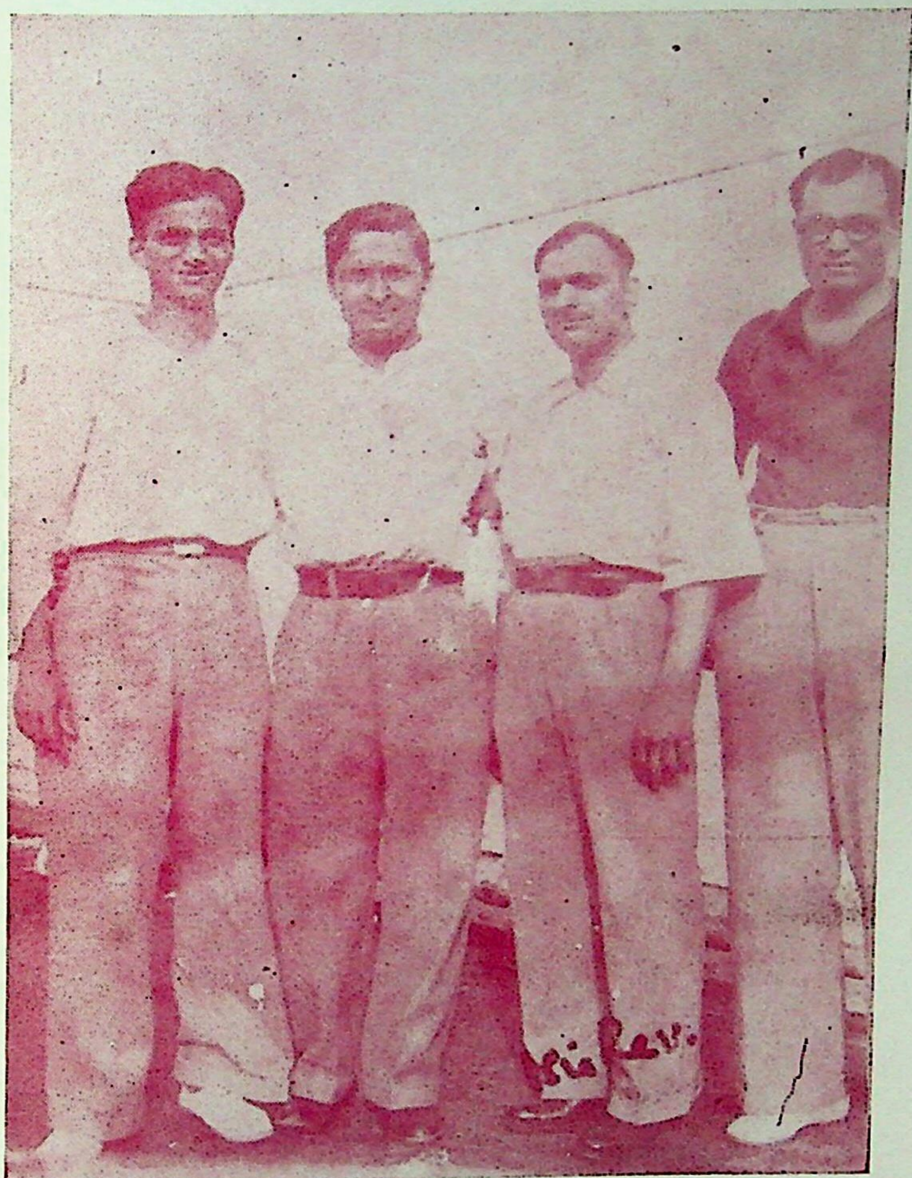
पं० रविशङ्कर देराश्री नंगे सिर खड़े हुए (जर्मनी, 1936)



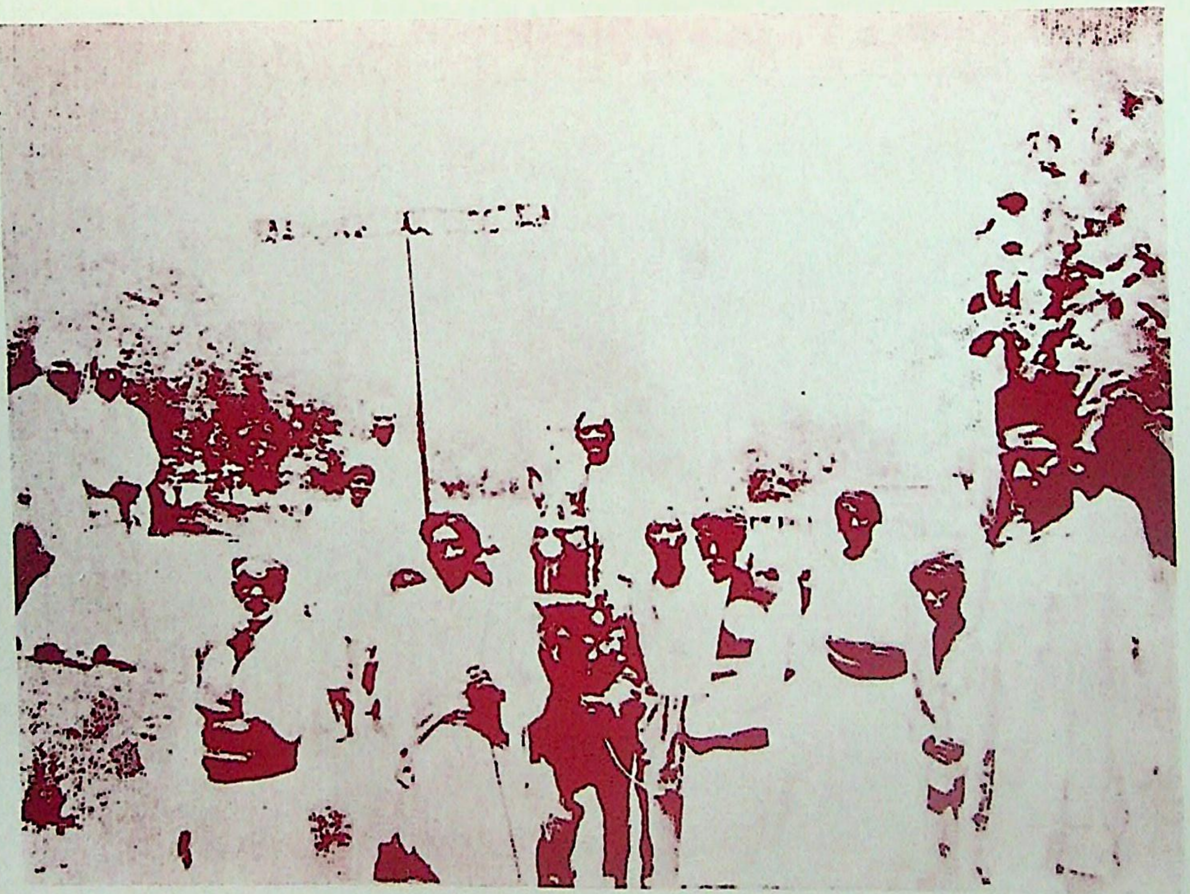
रविशङ्कर देराश्री
सन् 1936



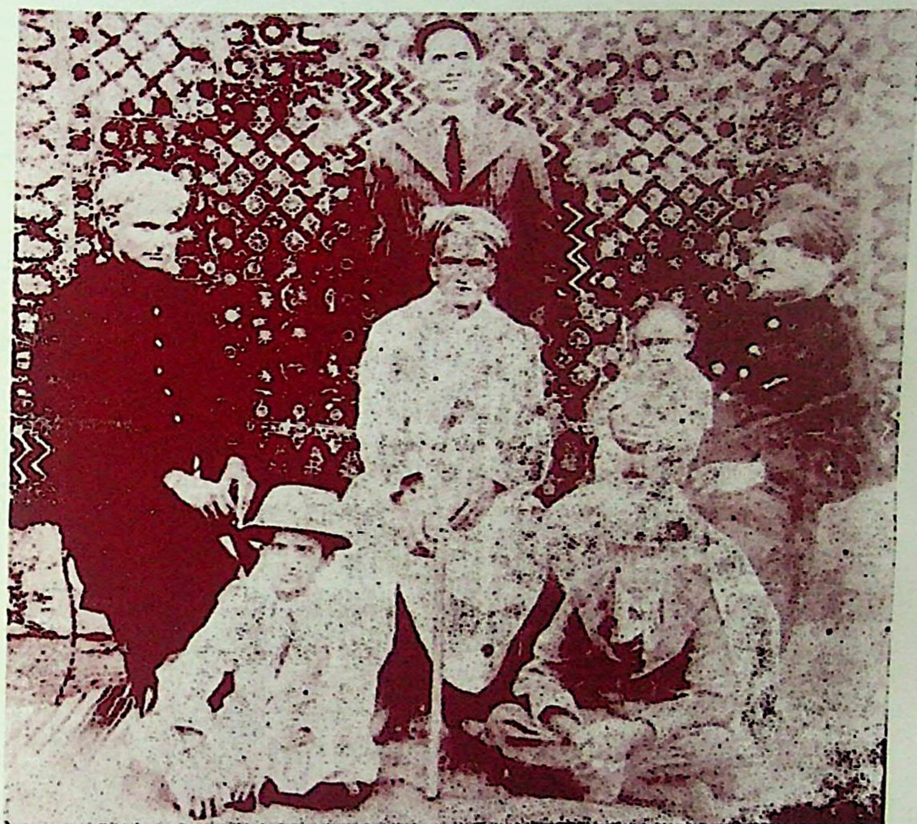
पण्डित रविशंकर एवं श्री एम. एस. रंधावा आइ. सी. एस.
सन् १९३६



इग्लैण्ड से लौटने पर
अपने मित्रों के साथ
पण्डित रविशकर. देराश्री



रविशङ्कर देराश्री का जावद में द्वितीय विवाह (1937)



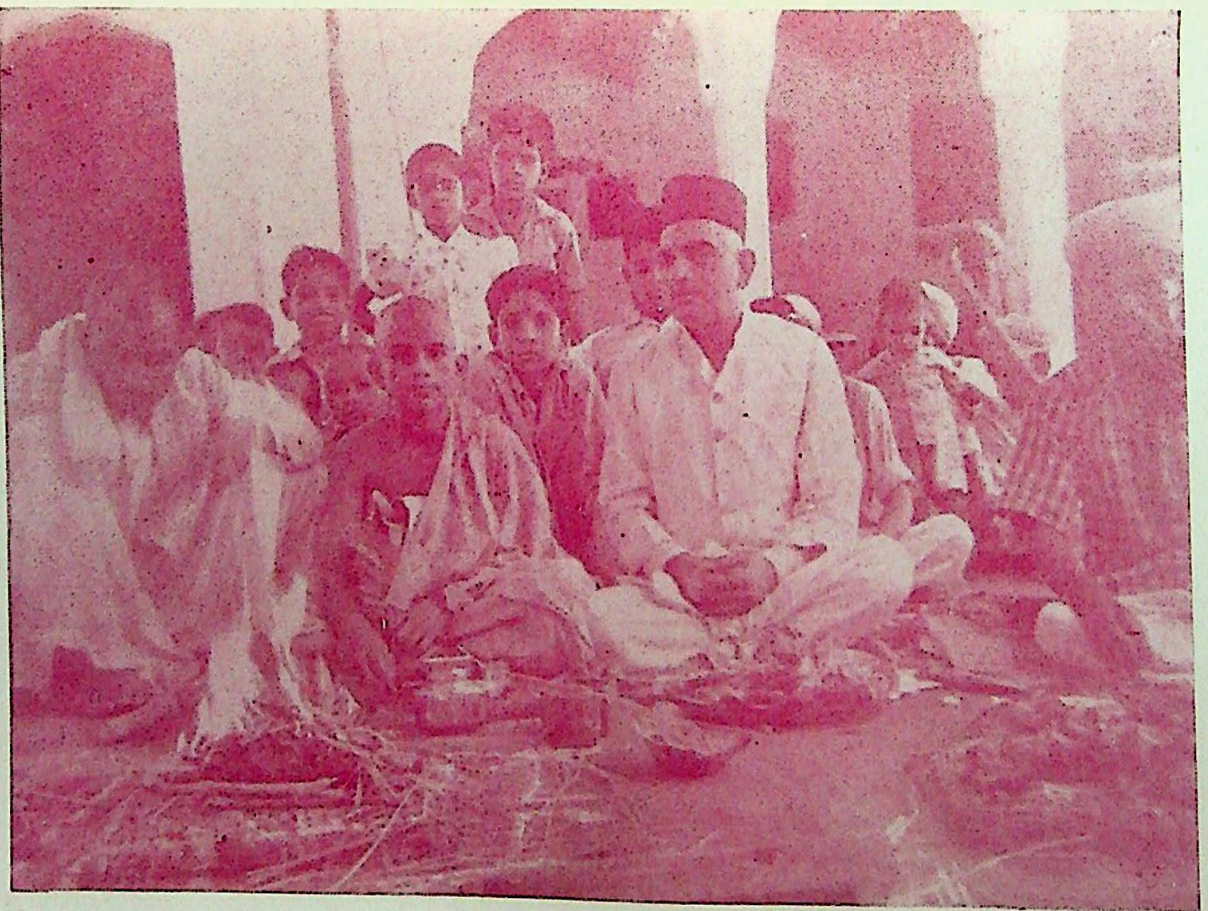
बायें से दायें—पीछे : सत्यदेव
कुर्सी पर बैठे : शिवनारायणजी, रामनाथजी (गोद में अक्षय कुमार)
नीचे बैठे : ज्ञानदेव, विद्यासागर, 1945



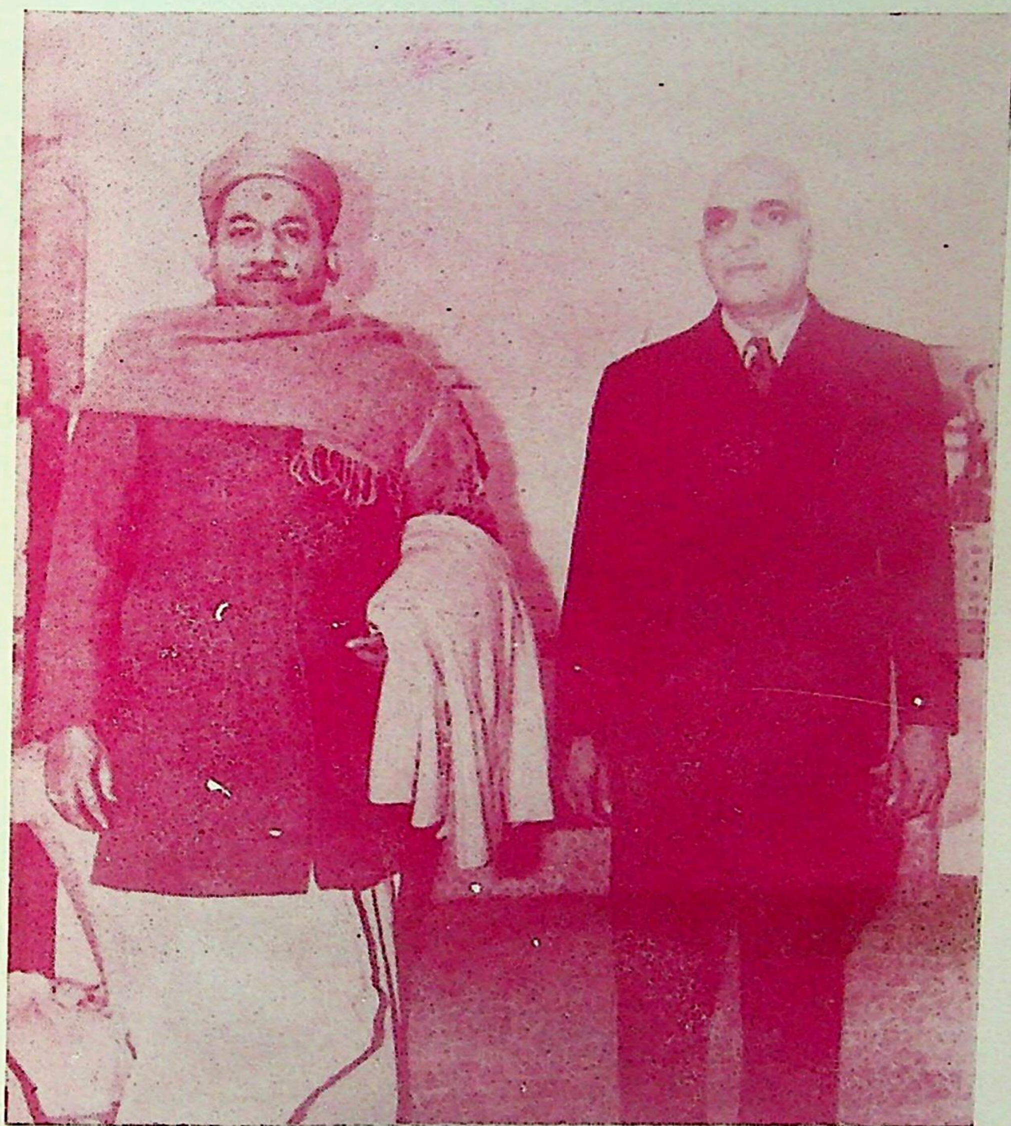
रविशङ्कर देराश्री । गोद में : अक्षय कुमार



बायें से दायें—खड़े : अक्षय कुमार, विद्यासागर   बैठे : शतरूपा, सुमित्रा



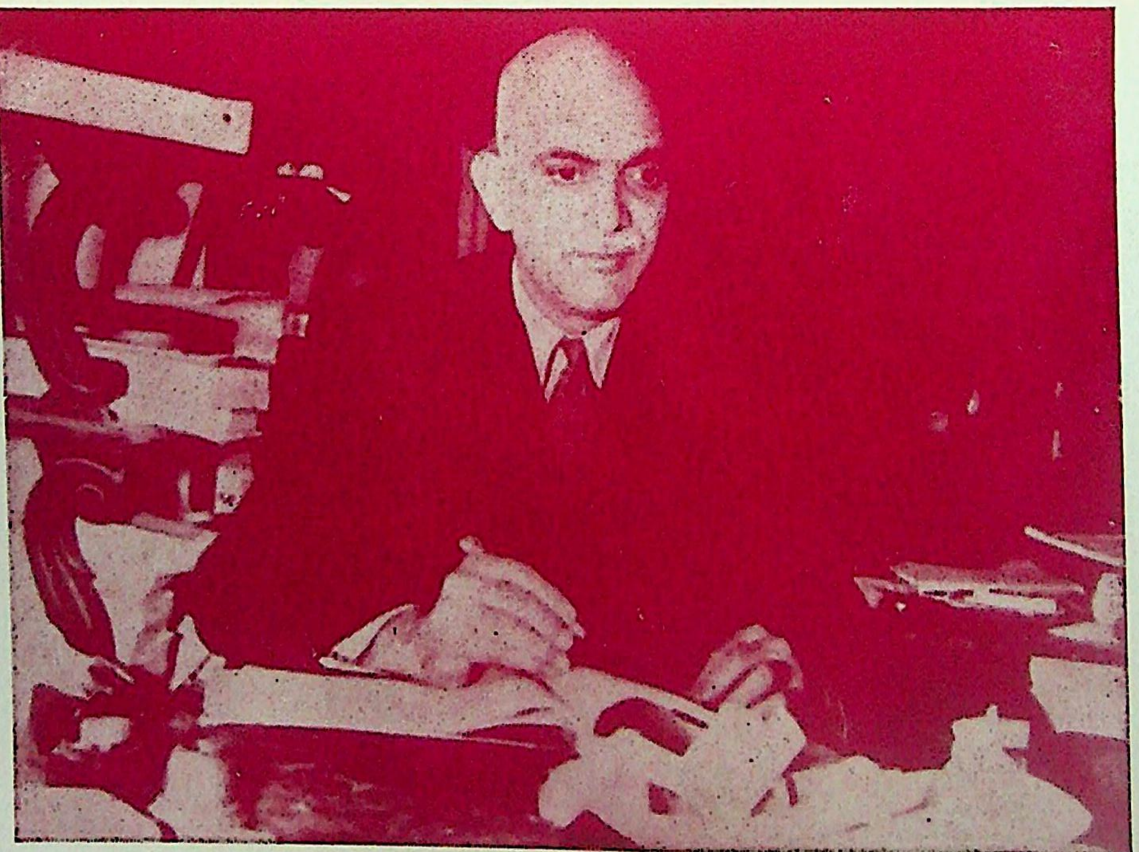
पण्डितजी अपने पुत्र अक्षयकुमार के यज्ञोपवीत संस्कार के अवसर पर
सन् १९५५



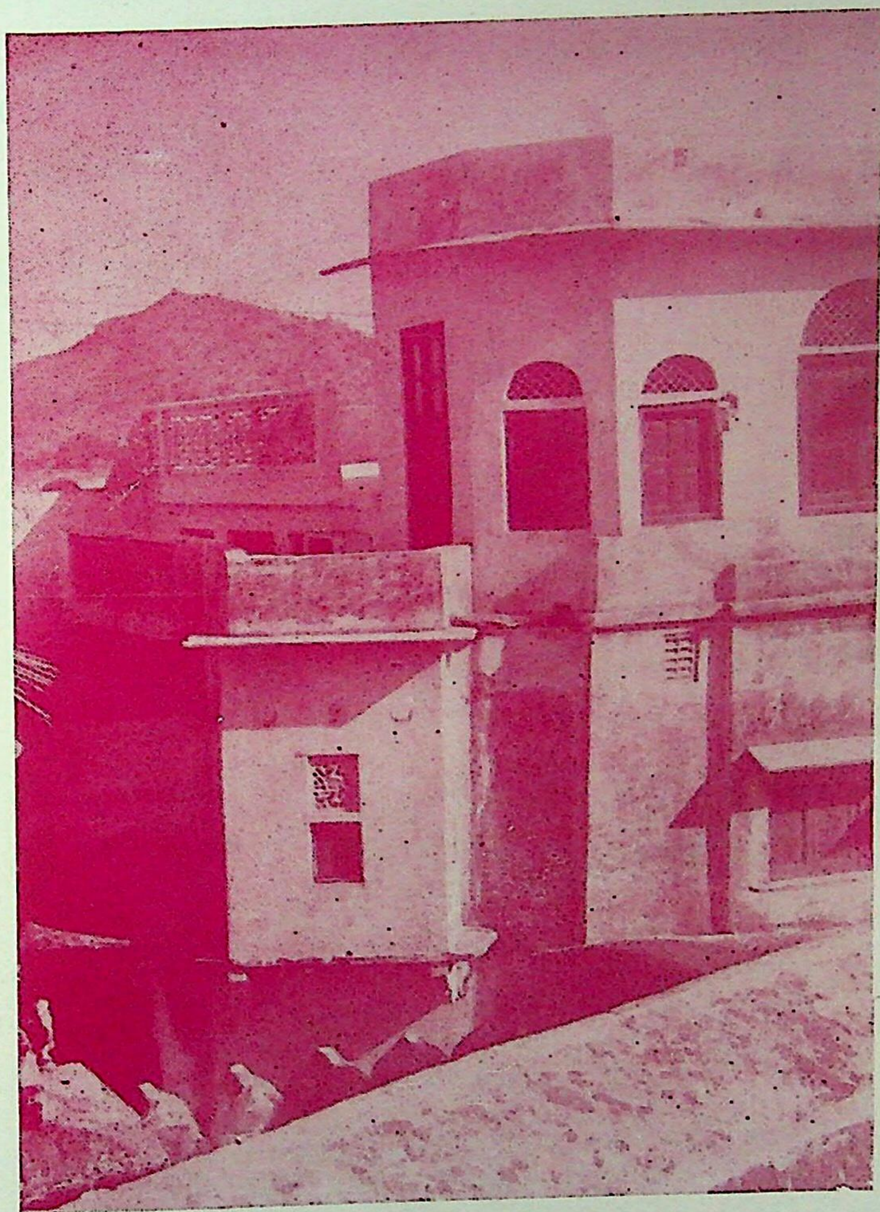
पण्डितजी और श्री विश्वनाथ शास्त्री भारद्वे
सन् १९५७



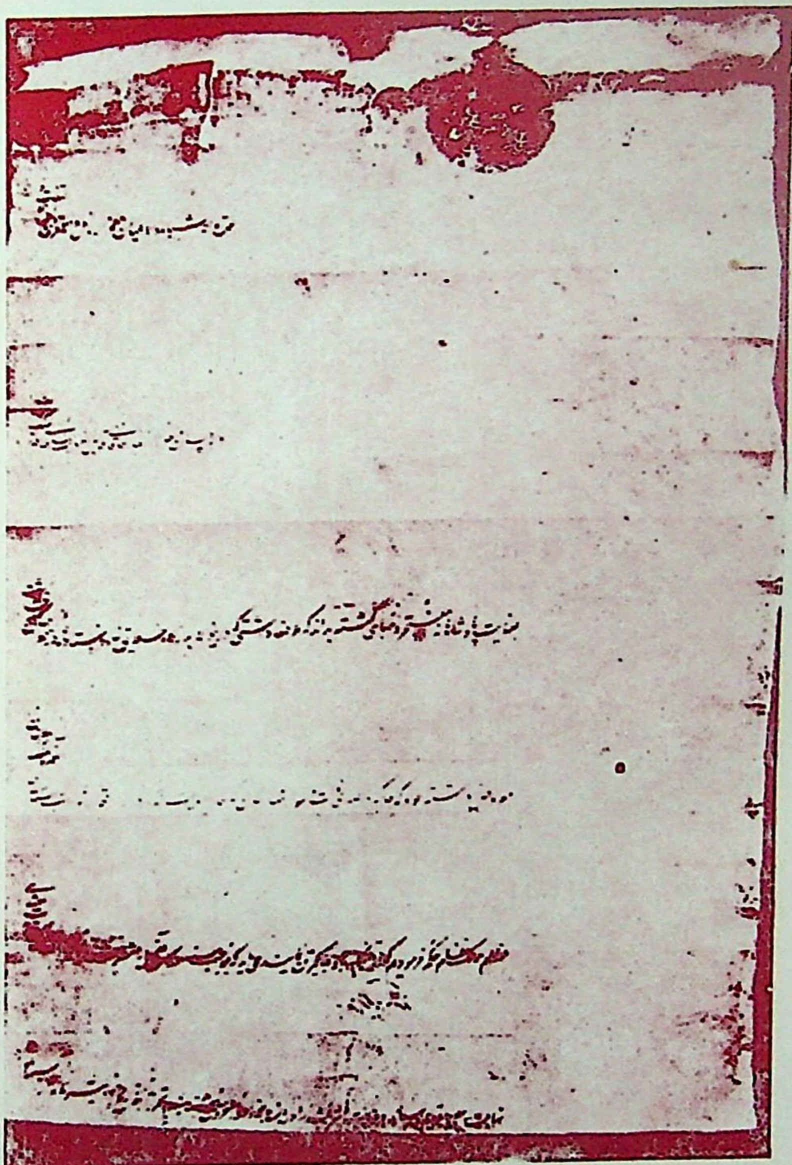
पण्डित रविशकर देराश्री
राघोगढ़ दुर्ग,
दरीखाने के बाहर,
१९५७



पण्डित रविशंकर देराश्री.
राघोगढ़ दुर्ग, कुर्सीमहल में



पण्डित रविशंकर का ग्रन्थालय एव आवासगृह, बनेड़ा



शाहजहाँ का फरमान



शाहजहाँ का फरमान

(**Royal Seal**)

Chief among the equals and the nobles, pride of contemporaries and companions, worthy of royal attention and beneficence. object of the royal perusal. liable to the royal care. Umadatul Mulk Ram Raj. having been proud and boastful of the royal benedictions should know that the application which he had forwarded these days to the royal court the refuge of the people, has passed through the august and blessed sight. You had requested that the jagir of 500 zat and sawar of Shahbaz Khan that was awarded recently, may be granted in Berar. According to the wishes of the Umadatul Mulk orders have been issued to the great civil administrative officers that he may be granted jagir in Tilangana. He Should take possession of that Mohal as per orders of the royal court and should indulge himself with utmost sincerity and efforts in performing royal favours.

Written on 19th Teer, Year 3

(on back side)

To the Risala of the most humble of all well-wishers Asaf Khan.



God has fulfilled the wishes of Asaf Khan When Shah Jahan the beneficent has ascedned the thoane.